हिन्दी दैनिक
प्रत्यूष नवबिहार
जोहार
रांची संस्करण
रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित
www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com
रांची • सोमवार • 23.06.2025 • वर्ष : 15 • अंक : 329 • पृष्ठ : 12 • आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम को वैज्ञानिक बनाने की दिशा में ऐतिहासिक दिन : शाह

- केंद्रीय गृहमंत्री ने किया राष्ट्रीय न्यायालयिक विज्ञान विश्वविद्यालय के अस्थायी परिसर एवं आई-हब का उद्घाटन।
- अमित शाह ने की नक्सलियों से आत्मसमर्पण करने और छत्तीसगढ़ की विकास यात्रा में शामिल होने की अपील।

एजेंसी

रायपुर : केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने रविवार को नवा रायपुर स्थित राष्ट्रीय न्यायालयिक विज्ञान विश्वविद्यालय (एनएफएसयू) के अस्थायी परिसर तथा आई-हब रायपुर का वर्चुअल माध्यम से उद्घाटन किया।

इस अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि, आज छत्तीसगढ़ के लिए क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम को आधुनिक और वैज्ञानिक बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक दिन है। एनएफएसयू के अस्थायी परिसर के साथ-साथ नवा रायपुर में स्थायी परिसर के लिए भूमि पूजन एवं केंद्रीय फॉरेंसिक साइंस लैब की स्थापना की भी शुरूआत की गई है। कुल 268 करोड़ की लागत से ये संस्थान विकसित किए जा रहे हैं। अस्थायी परिसर में सत्र 2025-26 से बीएससी, एमएससी फॉरेंसिक साइंस, साइबर सिक्योरिटी, मनोविज्ञान, डिजिटल फॉरेंसिक एवं प्रोफेशनल डिप्लोमा कोर्सेस प्रारंभ हो जाएंगे। लगभग 180 छात्र पहले बैच में प्रवेश लेंगे।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित ने कहा कि, इन संस्थानों के निर्माण से न केवल छत्तीसगढ़ बल्कि पूरे मध्य भारत को आधुनिक न्याय प्रणाली और अपराध जांच में सशक्त आधार मिलेगा। नई फॉरेंसिक टेक्नोलॉजी, जैसे डीएनए फिंगरप्रिंटिंग, एलएसडी साइंस, साइबर सिक्योरिटी, बायोटेक्नोलॉजी और डिजिटल फॉरेंसिक अब स्थानीय स्तर पर सुलभ होंगी, जिससे जांच प्रक्रिया तेज और सटीक होगी। फॉरेंसिक

जांच के लिए राजधानी या दिल्ली की आवश्यकता नहीं होगी, सारी जांच अटल नगर, नवा रायपुर में ही संभव होगी।

आई-हब की स्थापना को लेकर केंद्रीय गृह मंत्रीने कहा कि, यह प्लेटफॉर्म छत्तीसगढ़ के युवाओं को स्टार्टअप कल्चर से जोड़ने, तकनीकी सहायता देने, फंडिंग मुहैया कराने और मार्केटिंग एवं अनुबंध जैसी प्रोफेशनल सेवाएं देने में सहायक होगा। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे खुद उद्योगपति बनें, स्टार्टअप शुरू करें और राज्य के औद्योगिक विकास में भागीदार बनें। यह आई-हब, गुजरात के मॉडल पर आधारित है और भविष्य में रायपुर से भी कई वैश्विक स्टार्टअप उभरने की संभावना है।

छत्तीसगढ़ में नई सरकार बनने के बाद 5 लाख करोड़ के निवेश प्रस्तावों पर एमओयू हुए हैं। इससे रोजगार, राजस्व और औद्योगिक संस्कृति को बल मिलेगा। उन्होंने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय और गृह मंत्री विजय शर्मा के नेतृत्व की प्रशंसा करते हुए कहा कि इन दोनों ने नक्सल विरोधी अभियान को निर्णायक गति दी है। पहली बार ऐसा हुआ है कि वर्षा ऋतु में भी सुरक्षा बल सक्रिय हैं और नक्सलियों को चैन से रहने नहीं दे रहे। उन्होंने नक्सलियों से आत्मसमर्पण करने और छत्तीसगढ़ की विकास यात्रा में शामिल होने की अपील की।

एनएफएसयू का स्थायी परिसर तीन वर्षों में पूर्ण रूप से विकसित होगा, जिससे छत्तीसगढ़ के युवाओं के लिए फॉरेंसिक क्षेत्र में करियर की असीम संभावनाएं खुलेंगी। उन्होंने भरोसा दिलाया कि मोदी सरकार के तहत एनएफएसयू से स्नातक करना रोजगार की गारंटी बनेगा। साथ ही देशभर में लागू हुए नए तीन आपराधिक कानूनों के संदर्भ में कहा कि इनका उद्देश्य है झ तीन वर्षों के भीतर न्याय सुनिश्चित करना, और विज्ञान आधारित साक्ष्यों पर आधारित आधुनिक आपराधिक न्याय प्रणाली की स्थापना करना। अब 7 वर्ष से अधिक की सजा वाले अपराधों में फॉरेंसिक जांच अनिवार्य कर दी गई है।

सभी पुलिस थानों को सीसीटीएनएस से जोड़ दिया गया है, जिससे राज्य सरकारें जांच और निगरानी की प्रक्रिया में तकनीकी रूप से दक्ष हो सकेंगी। यह बदलाव न केवल न्यायिक प्रक्रिया को मजबूत करेगा, बल्कि भारत को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सजा सुनिश्चित करने वाले देशों की अग्रिम पंक्ति में ले आएगा।

देशभर में एनएफएसयू के 16 परिसरों की स्थापना हो चुकी है और 10 अन्य प्रस्तावित हैं। भारत को आत्मनिर्भर बनाने में फॉरेंसिक टेक्नोलॉजी की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। एक हालिया सर्वेक्षण का उल्लेख करते हुए कहा कि वर्ष 2026 तक फॉरेंसिक टेक्नोलॉजी का वैश्विक बाजार 55 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच जाएगा और उसमें भारत की हिस्सेदारी तेजी से बढ़ेगी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू, उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा एवं अरुण साव, केंद्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन, निदेशक आसूचना ब्यूरो तपन कुमार डेका, मुख्य सचिव अमिताभ जैन, परिसर निदेशक एनएफएसयू गांधीनगर के प्रोफेसर डॉ एसओ जुनारे सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित थे।

एक नजर

रक्षा राज्य मंत्री आज से 26 तक केन्या और मेडागास्कर के दौरे पर रहेंगे

रांची : रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ के नेतृत्व में एक भारतीय प्रतिनिधिमंडल 23 से 26 जून तक केन्या और मेडागास्कर की यात्रा पर रहेगा। रक्षा राज्य मंत्री 23 जून को ताइता तवेटा काउंटी में भारत और केन्या के शहीद सैनिकों के सम्मान में बनाये गए समर स्मारक का अनावरण करने के लिए केन्या की यात्रा करेंगे। वह दौरे के दूसरे चरण में 26 जून को एंटानानारिवो में मेडागास्कर की स्वतंत्रता की 65वीं वर्षगांठ और मालागासी सशस्त्र बलों के गठन के समारोह में भाग लेने के लिए मेडागास्कर जायेंगे। भारत और केन्या समुद्री पड़ोसी राष्ट्र हैं। दोनों देशों के बीच समकालीन संबंधों की विशेषता उच्च स्तरीय आदान-प्रदान, मजबूत व्यापार एवं निवेश, केन्या से चिकित्सा मूल्य यात्रा और व्यापक जन-जन संपर्क हैं। दोनों देशों के बीच उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष की एक साझा विरासत रही है। कई भारतीयों ने केन्या के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और उसका सहयोग किया। भारत और मेडागास्कर के बीच भी बहुआयामी संबंध हैं, जो ऐतिहासिक संबंधों, साझा मूल्यों व क्षेत्रीय स्थिरता तथा विकास के प्रति वचनबद्धता पर आधारित हैं। दोनों देशों के बीच यह साझेदारी राजनीतिक, सैन्य, आर्थिक और कूटनीतिक क्षेत्रों में फैली हुई है, जो पारस्परिक विकास एवं सहयोग के लिए साझा दृष्टिकोण को उजागर करती है।

सड़क हादसे में रांची सिविल कोर्ट के पेशकार समेत तीन की मौत

रांची : रांची में शनिवार रात एक दर्दनाक सड़क हादसे में 3 लोगों की मौत हो गयी। हादसा रात करीब 11 बजे नामकुम पुल के पास हुआ, जब एक स्कूटी और कार की जोरदार टक्कर हो गयी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि स्कूटी सवार, कार चालक और एक राहगीर गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर तीनों को अस्पताल भिजवाया, लेकिन इलाज के दौरान तीनों की मौत हो गयी। मिली जानकारी के अनुसार, मृतकों में रांची सिविल कोर्ट के पेशकार शामिल थे, जो ड्यूटी से लौट रहे थे। वहीं कार चालक और स्कूटी पर सावर एक युवक की भी इलाज के दौरान अलग-अलग अस्पतालों में मौत हो गयी। स्कूटी सवार युवक धनबाद का रहने वाला बताया गया है।

अमेरिका ने ईरान के तीन प्रमुख परमाणु ठिकाने पूरी तरह किए नष्ट

एजेंसी

नयी दिल्ली : अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि अमेरिका के हमलों में ईरान के प्रमुख परमाणु ठिकाने पूरी तरह से नष्ट हो गए हैं। ट्रंप ने शनिवार रात 'व्हाइट हाउस' में यह टिप्पणी की। इससे पहले उन्होंने कहा था कि अमेरिकी सेना ने ईरान में तीन प्रमुख परमाणु केंद्रों पर हमले किए हैं। साथ ही राष्ट्रपति ने ईरान को अमेरिका के विरुद्ध जवाबी हमले के खिलाफ चेतावनी दी और कहा कि ईरान को यह तय करना है कि उसे शांति चाहिए या त्रासदी।

ट्रंप ने साहसिक निर्णय लिया

इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने ईरान पर हमले करने के अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के फैसले के लिए उनकी सराहना की है। नेतन्याहू ने ट्रंप को एक वीडियो संदेश में कहा, ईरान के परमाणु प्रतिष्ठानों को निशाना बनाने का आपका साहसिक निर्णय इतिहास बदल देगा। नेतन्याहू ने कहा कि अमेरिका ने जो किया है वो कोई अन्य देश नहीं कर सकता।

संयुक्त राष्ट्र ने की निंदा

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने कहा है कि वह ईरान में परमाणु केन्द्रों पर अमेरिका के बम हमलों से बेहद चिंतित हैं। गुतारेस ने एक बयान में कहा, इस बात का जोखिम है कि यह संघर्ष तेजी से नियंत्रण से बाहर हो सकता है जिसके नागरिकों, क्षेत्र और दुनिया के लिए विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस जोखिम भरे वक्त में यह अहम है कि हम अराजकता के चक्र से बचें। संयुक्त राष्ट्र महासचिव मुद्दे के कूटनीतिक समाधान का आह्वान किया। मिडिल ईस्ट की जंग अब अपने सबसे खतरनाक मोड़ पर पहुंच गई है। ईरान और इजराइल की टकराव की आग में अब अमेरिका भी खुलकर कूद चुका है। अमेरिका ने ईरान के तीन परमाणु ठिकानों- फोर्डो, नतांज और इस्फहान पर इतिहास का सबसे सफल सैन्य हमला किया है। इस बीच पाकिस्तान कूद पड़ा है। पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने पोस्ट में बताया कि ईरान के अनुरोध पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की इमरजेंसी मीटिंग बुलाई जा रही है। इसे पाकिस्तान, चीन और रूस का समर्थन है। अमेरिका द्वारा ईरान के परमाणु ठिकानों पर बड़े हमले के बाद यह कूटनीतिक हलचल तेज हुई है। पाकिस्तान का समर्थन दिखाता है कि वह इस हमले को अंतरराष्ट्रीय मंच पर उठाना चाहता है।

इससे पहले ट्रंप ने कहा, 'FORDOW IS GONEÜ' यानी फोर्डो अब अस्तित्व में नहीं रहा। इससे भड़के ईरान ने अब पलटवार शुरू कर दिया है। ईरान ने इजरायल पर मिसाइलों की बारिश शुरू कर दी है। तेल अवीव में सायरन बज रहे हैं। इजरायली डिफेंस फोर्स ने लोगों से सुरक्षित रहने को कहा है। इस बीच इजरायल ने बड़ा बयान दिया है। इजरायल की सेना ने कहा कि ईरान में अभी हमारा लक्ष्य पूरा नहीं हुआ है। हमले तब तक जारी रहेंगे जब तक कि हमारे टारगेट पूरे नहीं हो जाते। ईरान क्या अमेरिका पर अटैक करेगा? इसी पर पूरी दुनिया की नजर है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने सारे कार्यक्रम रद कर दिए हैं। वह पल पल पर नजर रख रहे हैं। खुफिया एजेंसियां अलर्ट मोड पर हैं।

न्यूक्लियर साइट्स को कोई नुकसान नहीं : ईरान

तेहरान : ईरान के परमाणु कार्यक्रम को रोकने के प्रयास में अमेरिका ने रविवार सुबह ईरान के तीन परमाणु ठिकानों पर हमला कर दिया। जिन जगहों पर हमले किए गए, उनमें फोर्डो, नतांज और इस्फाहान का नाम शामिल है। भारतीय समयानुसार रविवार सुबह साढ़े चार बजे हुए इन हवाई हमलों की पुष्टि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने की। इस मुद्दे पर अब ईरान का पहला रिएक्शन सामने आया है, जहां उसने कहा है कि अमेरिका के हमले से उसे किसी तरह का कोई नुकसान नहीं हुआ है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, ईरान की परमाणु ऊर्जा संस्था ने रविवार को कहा कि उनकी न्यूक्लियर साइट्स को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचा है, साथ ही उन्होंने रेडिएशन लीक के खतरे से भी इंकार किया। ईरान ने अमेरिका के इन हमलों को अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करार दिया और कहा कि इस मामले में वह कानूनी कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू कर चुकी है।

ईरानी राष्ट्रपति के साथ टेलीफोन वार्ता में प्रधानमंत्री ने क्षेत्रीय तनाव पर जताई चिंता

नयी दिल्ली : ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान ने रविवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से टेलीफोन पर बातचीत की। दोनों नेताओं ने ईरान-इजराइल संघर्ष सहित क्षेत्रीय स्थिति पर चर्चा की। प्रधानमंत्री ने हालिया तनाव पर गहरी चिंता जताई और संवाद व कूटनीति को समाधान का मार्ग बताया। वार्ता के दौरान राष्ट्रपति पेजेशकियान ने प्रधानमंत्री को क्षेत्र की वर्तमान स्थिति और ईरान-इजराइल संघर्ष पर विस्तार से जानकारी दी। प्रधानमंत्री ने भारत की ओर से शांति और मानवता के पक्ष में खड़े रहने की बात कही। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि क्षेत्रीय शांति, सुरक्षा और स्थिरता की शीघ्र बहाली के लिए तुरंत तनाव कम करने की आवश्यकता है। उन्होंने इस दिशा में संवाद और कूटनीतिक प्रयासों को आगे बढ़ाने पर बल दिया। प्रधानमंत्री ने भारतीय नागरिकों की सुरक्षित वापसी और पुनर्वास में दिए जा रहे सहयोग के लिए राष्ट्रपति पेजेश्कियान का आभार व्यक्त किया। दोनों नेताओं ने आपसी सहयोग को और मजबूत करने की प्रतिबद्धता दोहराई। इस सहयोग में व्यापार, आर्थिक साझेदारी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा जन-जन के बीच संबंधों को प्रमुखता दी गई। दोनों नेताओं ने भविष्य में संपर्क में बने रहने पर सहमति व्यक्त की। ईरान और इजराइल के बीच हाल ही में बढ़े सैन्य तनाव से पश्चिम एशिया में अशांति की स्थिति बनी हुई है। अब अमेरिका भी ईरान के तीन न्यूक्लियर ठिकानों को निशाना बनाकर इसमें शामिल हो गया है।

झारखंड में भारी बारिश की चेतावनी
26 तक राज्यभर में बरसेंगे बादल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड में अगले 72 घंटे के लिए भारी बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग का पूवार्नुमान है कि 26 जून तक राज्य में बादल झूम कर बरसेंगे। इस दौरान गरज के साथ वज्रपात भी हो सकता है। इसके लिए चेतावनी जारी की गयी है। झमाझम बारिश से आज राजधानी रांची में मौसम का मिजाज बदल गया है। तेज गरज के साथ बारिश हो रही है।

आज इन जिलों में भारी बारिश की चेतावनी

मौसम विभाग ने अपने पूर्वानुमान में बताया है कि सोमवार को झारखंड के उत्तर-पूर्वी भाग में कहीं-कहीं पर भारी बारिश हो सकती है। कहीं-कहीं पर गरज के साथ वज्रपात की भी आशंका है। इस बाबत येलो अलर्ट जारी किया गया है। राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग में देवघर, धनबाद, पाकुड़, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा और साहिबगंज शामिल है।

24 और 25 जून को भारी बारिश का अलर्ट

आईएमडी का पूवार्नुमान है कि 24 और 25 जून को झारखंड के दक्षिण-पश्चिमी भाग में कहीं-कहीं पर भारी बारिश हो सकती है। कहीं-कहीं पर मेघ गर्जन के साथ वज्रपात की आशंका व्यक्त की गयी है। मौसम विभाग ने इसे लेकर येलो अलर्ट जारी किया है। 26 जून को राज्य में कहीं-कहीं पर गरज के साथ वज्रपात भी हो सकता है। मौसम विभाग ने चेतावनी जारी की है।

तापमान में तीन से चार डिग्री सेल्सियस की हो सकती है गिरावट

झारखंड में अगले दो दिनों के दौरान अधिकतम तापमान में कोई बड़े बदलाव की संभावना नहीं है। उसके बाद अगले तीन दिनों में तापमान में तीन से चार डिग्री सेल्सियस की गिरावट हो सकती है।

एनआईए ने आतंकियों को पनाह देने वाले दो आरोपियों को किया गिरफ्तार

श्रीनगर : पहलगाम में हुए आतंकी हमले में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) को बड़ी कामयाबी मिली है। एनआईए ने आतंकियों को पनाह देने वाले दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार इनके नाम बशीर अहमद और परवेज अहमद हैं। अब एनआईए इनसे पूछताछ कर यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि आतंकी कहां भागे हैं। इनसे कोई बड़ी जानकारी हाथ लग सती है। पहलगाम में 26 पर्यटकों को मारने वाले आतंकी पाकिस्तान से आए थे और ये लश्कर ए तैयबा से जुड़े थे। आतंकियों को पनाह देने वाले आरोपी पहलगाम के ही रहने वाले बताए जा रहे हैं।

पुलिस-नक्सली मुठभेड़, सात माओवादी ढेर

एजेंसी

जगदलपुर : छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के नेशनल पार्क क्षेत्र में जून 2025 के पहले पखवाड़े के दौरान सुरक्षा बलों द्वारा चलाए गए सघन माओवादी विरोधी अभियानों की श्रृंखला में माओवादी कैडरों और सुरक्षाबलों के बीच हुई मुठभेड़ों के बाद सात माओवादियों के शव बरामद किए गए। बरामद शवों में दो शीर्ष माओवादी नेताओं गौतम उर्फ सुधाकर, भाकपा (माओवादी) की केंद्रीय समिति का सदस्य एवं भास्कर राव, भाकपा (माओवादी) स्टेट कमिटी सदस्य शामिल हैं।

पुलिस के रविवार के जारी बयान के अनुसार बरामद अन्य शवों में से एक की पहचान महेश कोडियम के रूप में की गई, जो बीजापुर जिले के फरसगढ़ थाना अंतर्गत इरपागुट्टा गांव का निवासी था। मृत महेश कोडियम के शव का पंचनामा किए जाने के दौरान यह तथ्य सामने आया कि वह नेशनल पार्क क्षेत्र डिवीजन के अंतर्गत प्रतिबंधित भाकपा (माओवादी) संगठन का पार्टी सदस्य था और उसकी संलिप्तता इस अवैध संगठन से थी।

यह भी सामने आया है कि महेश कोडियम इरपागुट्टा गांव के प्राथमिक विद्यालय में रसोई सहायक के रूप में कार्यरत था। उसका चयन गांव की विद्यालय प्रबंधन समिति द्वारा किया गया था और मार्च 2025 तक उसे भुगतान किया जा रहा था। यह अभी जांच का विषय है कि महेश कोडियम किन परिस्थितियों में केंद्रीय समिति सदस्य गौतम, राज्य समिति सदस्य भास्कर जैसे शीर्ष माओवादी नेताओं के संपर्क में आया। इस पूरे मामले की हर पहलू से गंभीर, निष्पक्ष और पेशेवर तरीके से जांच की जा रही है। पुलिस एक बार पुनः माओवादी संगठन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े सभी लोगों से अपील करता है कि वे इस प्रतिबंधित और अवैध संगठन से तत्काल संबंधविच्छेद करें। पुलिस ने यह भी कहा कि माओवादी संगठन से जुड़ाव न केवल समाज और क्षेत्र की सुरक्षा के लिए खतरा है, बल्कि स्वयं संबंधित व्यक्ति के जीवन तथा भविष्य के लिए भी घातक सिद्ध भी हो सकता है।

लेवी वसूलने आया टीएसपीसी उग्रवादी गिरफ्तार

पलामू : उग्रवादी संगठन तृतीय प्रस्तुति सम्मेलन कमेटी (टीएसपीसी) के सक्रिय सदस्य शंभु सिंह को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। शंभू छतरपुर इलाके में लेवी वसूलने पहुंचा था। पूछताछ में सामने आया है कि विधानसभा चुनाव के दौरान पुलिस और नक्सली संगठन टीएसपीसी के बीच हुई मुठभेड़ में वह शामिल था। जोनल कमांडर शशिकांत के दस्ते में शामिल था। रविवार को उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। छतरपुर के डीएसपी अवध कुमार यादव ने बताया कि 24 अक्टूबर 2024 को विधानसभा चुनाव के समय पुलिस दैनिक अभियान में थी कि इसी बीच पुलिस अधीक्षक पलामू रिष्मा रमेशन को गुप्त सूचना प्राप्त हुई थी कि प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन टीएसपीसी के जोनल कमांडर शशिकांत गंझू अपने दस्ते के साथ छतरपुर थाना क्षेत्र के तुरीदाग के जंगली पहाड़ी क्षेत्रों में किसी बड़ी घटना को अंजाम देने के इरादे से एकत्रित हुआ है। जब पुलिस की टीम छापेमारी करने गई तो प्रतिबंध उग्रवादी संगठन टीएसपीसी और पुलिस के बीच मुठभेड़ हुई थी, जिसमें नक्सली पर्चा सहित कई दैनिक सामान जब्त किया गया था, लेकिन पुलिस के बढ़ते दबाव के कारण घने जंगल का लाभ लेकर सभी उग्रवादी भाग गए थे।

बिहार विधानसभा चुनाव से पहले मतदाता सूची के व्यापक सत्यापन पर विचार कर रहा आयोग

एजेंसी

नयी दिल्ली : चुनाव आयोग बिहार विधानसभा चुनावों से पहले मतदाता सूची की शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए घर-घर जाकर व्यापक सत्यापन अभियान शुरू करने पर विचार कर रहा है। यह कदम मतदाता सूची से संबंधित बार-बार उठाए जा रहे सवालों के मद्देनजर उठाया जा सकता है।

आयोग ने स्पष्ट किया है कि देशभर में हर वर्ष मतदाता सूची का नियमित पुनरीक्षण किया जाता है। इसके अतिरिक्त, चुनावों और उपचुनावों से पहले भी यह प्रक्रिया अपनाई जाती है। वर्ष 2024 में आयोग को प्राप्त प्रपत्रों के अनुसार लगभग 46.26 लाख मतदाता अपने निवास स्थान से स्थानांतरित हुए, 2.32 करोड़ ने संशोधन के लिए आवेदन किया और 33.16 लाख ने पहचान पत्र के प्रतिस्थापन की मांग की। कुल मिलाकर लगभग 3.15 करोड़ परिवर्तनों की आवश्यकता पड़ी। सूत्रों के अनुसार मतदाता सूची की शुद्धता बनाए रखने की अंतिम कवायद वर्ष 2004 में की गई थी। आगामी बिहार विधानसभा चुनावों से पहले यह अभियान फिर से शुरू किया जा सकता है। सत्यापन की आवश्यकता के पीछे स्थान परिवर्तन, मृत मतदाताओं के नाम हटाना, 18 वर्ष की आयु प्राप्त करने वाले युवाओं के नाम जोड़ना, विवरणों में सुधार, मतदान केंद्रों का पुनःनिर्धारण तथा विदेशी नागरिकों की पहचान और नाम विलोपन जैसे कई कारण हैं। भारत के संविधान के अनुच्छेद 326 और जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 16 में मतदाता पात्रता और अपात्रता को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है। आयोग ने बार-बार यह भरोसा दिलाया है कि केवल पात्र नागरिकों को ही मतदाता सूची में शामिल किया जाएगा।

आज मां से अधिक माटी को बचाने की जरूरत है : जयराम महतो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : बड़कागांव 13 माइल के पास युवा विस्थापित मोर्चा के द्वारा कट अप डेट को लेकर एवं गोंदलपूरा में कोल कंपनियों के खिलाफ ग्रामीणों के द्वारा की जा रहे 800 दिनों से अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन में जेएलकेएम सुप्रीमो डुमरी विधायक जयराम महतो शामिल हुए एवं आंदोलन का समर्थन किया। जयराम महतो ने युवा साथियों से आग्रह किया की अपनी मां से ज्यादा अपनी माटी को प्यार कीजिए क्योंकि मां तो आज है कल नहीं रहेगी लेकिन जो माटी/जमींन है वह सदियों तक आपके पीढ़ी को सींचेगी, पालेगी पोसेगी, इसलिए अपनी जमीन की रक्षा के लिए जान लगा दीजिए। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा, की आज जमीन की लड़ाई पुरे विश्व में चल रही है चाहे वह इसराइल-ईरान की लड़ाई हो, भारत-पाकिस्तान की लड़ाई हो, भारत-चीन की लड़ाई हो या रसिया-यूक्रेन की लड़ाई हो पूरे वर्ल्ड में जमीन बचाने की लड़ाई चल रही है। आप समझ सकते हैं की जमीन की क्या कीमत है। 13 माइल एवं गोंदलपूरा में ग्रामीणों के द्वारा जयराम महतो को मांग पत्र सोपा गया। विदित हो कि 2016 के अनुसार एनटीपीसी के द्वारा विस्थापितों को विस्थापन का लाभ हेतु कट ऑफ डेट निश्चित किया गया है। अर्थात 2016 में जीसकी आयु 18 वर्ष हुई थी उसे ही विस्थापन का लाभ दिया जाएगा। परंतु आज युवा जो है उनका मानना है कि जो 2025 में विस्थापित हो रहा है वह 2016 के कट अप डेट के अनुसार विस्थापन का लाभ से वंचित हो रहा है।

झारखंड को बर्बाद होने से जेएलके एम ही बचा सकती है : जयराम महतो

बड़कागांव : जीडीएम बालिका उच्च विद्यालय सभागार भवन में जेएलकेएम पार्टी की ओर से आयोजित कार्यकर्ता मिलन समारोह एवं सदस्यता अभियान में मुख्य अतिथि जेएलकेएम पार्टी सुप्रीमो डुमरी विधायक जयराम महतो शामिल हुए। इस दौरान भारी संख्या में कार्यकर्ता ढोल नगाड़े के साथ माला पहनाकर जयराम महतो का स्वागत किया। वही जयराम महतो ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर बड़का गांव में सदस्यता अभियान का शुभारंभ किया। इस दौरान दूसरे दलों के भारी संख्या में समर्थक जेएलकेएम पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। मौके पर जयराम महतो ने कहा कि झारखंड सरकार विस्थापन मुद्दे को लेकर विफल हो रही है, झारखंडियों को उनका हक व अधिकार नहीं मिल रहा है। जेएलकेएम पार्टी ही झारखंड की रक्षा कर सकती है एवं उनका हक व अधिकार दिला सकती है। संगठन को मजबूत करने के लिए पूरे प्रदेश में कार्य किया जा रहा है। उन्होंने जनता से अपील की कहां हमारी पार्टी को मजबूत करें और हमारे अधिक से अधिक विधायक विधानसभा में भेजें ताकि हम आपका काम इमानदारी से कर सके। उन्होंने अपने पार्टी के कार्यकताओं से भी अपील किया कि जन समस्याओं को नजरअंदाज ना करें। कहीं से भी ग्रामीणों की कोई समस्या हो तो उसे शीघ्र समाधान करने का प्रयास करें।

चतरा जिला का झारखंड विधानसभा की सदाचार समिति ने किया दौरा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चतरा : झारखंड विधानसभा की सदाचार समिति ने शनिवार को चतरा पहुंचे। जहां समिति के सभापति रामचंद्र सिंह एवं समिति के सदस्य चंद्रदेव महतो के चतरा परिसदन आगमन पर उपायुक्त कीर्तिश्री और पुलिस अधीक्षक सुमित कुमार अग्रवाल ने पौधा भेंटकर आभार प्रकट करते हुए उनका स्वागत किया। तत्पश्चात चतरा परिसदन में झारखंड विधानसभा की सदाचार समिति ने जिला स्तरीय पदाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। बैठक की अध्यक्षता समिति के सभापति रामचंद्र सिंह ने की। इस अवसर पर समिति के सदस्य चंद्रदेव महतो उपस्थित रहे। बैठक में मुख्य रूप से अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति से संबंधित लंबित मामलों की स्थिति, पेंशन से संबंधित प्रकरणों का निष्पादन, जनहितकारी योजनाओं की प्रगति और उनके लाभार्थियों तक पहुंच आदि विषयों पर समीक्षा की गयी। सभापति ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि लंबित मामलों का शीघ्र निष्पादन सुनिश्चित करें तथा सभी विभागों द्वारा अद्यतन प्रतिवेदन शीघ्र उपलब्ध कराया जाए।बैठक के दौरान जिले में संचालित प्रमुख विभागीय योजनाओं की गहन समीक्षा की गई। जिसमें पुलिस विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, खाद्य आपूर्ति विभाग, भवन निर्माण एवं पथ निर्माण विभाग, खनन, ग्रामीण विकास विभाग, समाज कल्याण, कल्याण, कृषि विभाग, शिक्षा विभाग, निबंधन विभाग, जिला योजना आदि शामिल रहा। प्रत्येक विभाग द्वारा अपने- अपने योजनाओं की प्रगति, समस्याएँ और समाधानात्मक प्रयासों की जानकारी दी गई। बैठक में सभापति ने कहा कि सदाचार समिति का उद्देश्य जनहित में पारदर्शी, संवेदनशील और समयबद्ध प्रशासनिक कार्यप्रणाली को बढ़ावा देना है।

रथयात्रा को लेकर चौपारण थाना परिसर में प्रशासनिक अधिकारियों के साथ हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : चौपारण में आगामी 27 जून को आयोजित होने वाली जय जगन्नाथ रथयात्रा को लेकर तैयारियाँ अंतिम चरण में हैं। यात्रा को सफल और शांतिपूर्ण रूप से सम्पन्न कराने के लिए चौपारण थाना परिसर में एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों के साथ-साथ आयोजक, समाजसेवी, बिजली विभाग, अस्पताल के प्रभारी और पत्रकार उपस्थित थे। बैठक की अध्यक्षता अनुमंडल पदाधिकारी जोहन टुडू ने संयुक्त रूप से की। इस दौरान बरही अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अजीत कुमार विमल, चौपारण थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश, बीडीओ नीतेश भास्कर अंचलाधिकारी संजय यादव, अस्पताल के प्रभारी डॉ. सतीश सिंह समेत अन्य कई पदाधिकारी भी मौजूद रहे। बैठक में रथयात्रा के मार्ग में संभावित समस्याओं पर चर्चा की गई। रोड जाम से निजात, बिजली के झूलते तारों को दुरुस्त करना, यात्रा मार्ग की सफाई, गंदगी हटाना और भीड़ नियंत्रण जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही यातायात व्यवस्था को दुरुस्त रखने जैसे कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर सहमति बनी। अधिकारियों ने संबंधित विभागों को निर्देश देते हुए समय पर सभी कार्यों को पूरा करने को कहा। इस अवसर पर बिनोद सिंह, राजदेव यादव, संजय सिंह, रामचंद्र सिंह, अभिषेक सिंह, पप्पू सिंह, डॉ. रामानुज कुमार, चौपारण बिजली विभाग के अधिकारी एवं मीडिया बंधु विशेष रूप से उपस्थित थे। रथयात्रा को लेकर क्षेत्र में उत्साह का माहौल है और प्रशासन की सक्रियता से यह तय माना जा रहा है कि आयोजन भव्य, सुरक्षित और व्यवस्थित रूप से संपन्न होगा।

मनीष जायसवाल ने सीएम योगी आदित्यनाथ से की मुलाकात

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल ने रविवार को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महाराज से उनके लखनऊ स्थित कार्यालय में शिष्टाचार मुलाकात की। इस महत्वपूर्ण भेंट के दौरान सांसद जायसवाल ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को आगामी 29 जून 2025 से हजारीबाग हजारीबाग क्षेत्र में प्रारंभ हो रहे उनके महत्वाकांक्षी योजना 'सांसद तीर्थ दर्शन' अभियान के शुभारंभ- सह- प्रथम जत्थे के रवानगी कार्यक्रम में गरिमामयी उपस्थिति के लिए सादर आमंत्रित किया। सांसद मनीष जायसवाल ने सीएम योगी आदित्यनाथ को स्मरण कराया की उन्होंने बीते झारखंड विधानसभा चुनाव के दौरान बड़कागांव में हुए उनके चुनावी सभा से लोगों से उत्तर प्रदेश के धार्मिक स्थलों में आने का आवाह्न किया था। उन्हीं से प्रेरित होकर उन्होंने इस कार्यक्रम की शुरूआत की है ताकि क्षेत्र के बुजुर्गों को सम्मान के साथ तीर्थ दर्शन कराया जा सके। इस तीर्थ यात्रा के तहत उत्तर प्रदेश के ही चार प्रमुख तीर्थ स्थल जिसमें वाराणसी, प्रयागराज (संगम), विंध्याचल और अयोध्या दर्शन कराया जाना है। इस योजना की शुरूआत 29 जून 2025 को हजारीबाग के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल नृसिंह स्थान परिसर से होना तय है। सांसद मनीष जायसवाल। ए सीएम योगी आदित्यनाथ से मुलाकात के दौरान झारखंड राज्य की वर्तमान राजनीतिक स्थिति सहित अन्य समसामयिक विषयों पर भी उनसे बीच विस्तृत और सार्थक चर्चा की।

विश्व संगीत एवं योग दिवस पर सुरमय शाम का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : अंतराष्ट्रीय विश्व संगीत एवं योग दिवस के पावन अवसर पर तरंग ग्रुप हजारीबाग द्वारा सुरमय शाम का भव्य आयोजन कल देर शाम प्रधान कैफेटेरिया के परिसर में किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन आंशिका एवं आराध्या कुमारी द्वारा संगीत के मधुर स्वरों और योग मुद्राओं के समन्वय पर आधारित योग नृत्य द्वारा हुआ। उसके बाद श्री मां संगीतयन के बच्चों के द्वारा समूह गान का प्रस्तुति किया गया। बेश जैसे ग्रामीण क्षेत्र से आई पांच साल की बच्ची दित्या के गाने ने सभी को मोह लिया उसे सब जूनियर लता मंगेशकर कहने लगे। इस दौरान तरंग ग्रुप के कलाकारों द्वारा सामूहिक रूप से विभिन्न गानों के माध्यम से नशा मुक्ति का संदेश देते हुए सभी से शपथ करवाया गया। इस कार्यक्रम के बारे में निर्देशक अमित कुमार गुप्ता ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विश्व योग के साथ साथ सबको संगीत दिवस की जानकारी के साथ नशा मुक्ति अभियान के शामिल करने के साथ योग और संगीत के माध्यम से मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक संतुलन को बढ़ावा देना है।

एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए करें योग : वर्षा दे

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर रविवार शाम को वर्षा योग क्लासेज, नवाबगंज के तत्वावधान में स्थानीय यूनियन क्लब एवं लाइब्रेरी परिसर में अवस्थित केशब हाल में एक योग अभ्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केवल महिलाओं के लिए आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन वर्षा दे के द्वारा किया गया। श्रीमती वर्षा दे बाबा रामदेव के पतंजलि योगपीठ में प्रशिक्षण प्राप्त की है। वह स्थानीय विनोबा भावे विश्वविद्यालय से योग में स्नातकोत्तर की डिग्री धारी भी है। आज के कार्यक्रम में भारत के आयुष मंत्रालय द्वारा जारी किए गए कॉमन योग प्रोटोकॉल के तहत प्राणायाम और योगासन करवाए गए। प्राणायाम में जहां कपालभाति तथा अनुलोम विलोम करने की सही पद्धति और इसके लाभो से सबको परिचित कराया गया। मौके पर तारआसान, भुजंगासन, त्रिकोणासन, वृक्षासन, अर्धचक्रासन, भद्रासन, वक्रासन, मकरासन जैसे कई योग आसनों की जानकारी दी गई। इस दौरान सवासन के विशेष महत्व को भी बताया गया। वर्षा दे ने इस मौके पर योग के आध्यात्मिक एवं स्वास्थ्य संबंधी महत्व से भी लोगों को परिचित कराया। ज्ञात हो की वर्ष 2025 के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा ‘एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग का विषय निर्धारित किया गया है। आज के योग अभ्यास कार्यक्रम में दोला गुहा, सुपर्णा सरकार, रूपा चटर्जी, बोनिता दे, मैत्रेई घोष, मंदिरा सरकार, तनुश्री मुखर्जी, सरिता मोइत्रा, सुचंद्र सरकार, सोमा सेन, मैत्रेई चौधरी, सोनाली भट्टाचार्य, मौमिता गांगुली, तापसी दास, गार्गी मल्लिक, मंजूषा चटर्जी, प्रभा देवी, मुस्कान, लवली, किरण, कंचन, रंभा, आशा, दिव्या, पल्लवी, संजू कुमारी, डालिया बनर्जी, मीरा, पौशाली, दीपा, नूपुर, गुनगुन, अमिता, आदि लोगों ने पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिया। आयोजन में यूनियन क्लब एवं लाइब्रेरी के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने बढ़ चढ़कर सहयोग किया।

एक नजर

अज्ञात बदमाशों ने ज्वेलर्स दुकान में चलाई गोली

हजारीबाग : हजारीबाग जिले के महावीर स्थान चौक पर स्थित श्री ज्वैलर्स की दुकान को अज्ञात बदमाशों ने निशाना बनाया। दो बाइक सवार बदमाशों ने दुकान के गेट पर सात राउंड फायरिंग कर दी और मौके से फरार हो गए। घटना सदर थाना क्षेत्र की है। फायरिंग के बाद मौके पर पहुंची पुलिस को दुकान के बाहर से छह खोखे बरामद हुए हैं, जबकि दुकान के शटर पर सात गोलियों के निशान साफ देखे जा सकते हैं। इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है, लेकिन इससे इलाके में दहशत का माहौल है। घटना स्थल पर लगे सीसीटीवी कैमरे में पूरी वारदात रिकॉर्ड हो गई है। फुटेज में साफ दिखाई दे रहा है कि दो बदमाश बाइक से दुकान के सामने आते हैं। एक बदमाश ने हेलमेट पहन रखा था जबकि दूसरे ने लाल रंग का गमछा मुंह पर बांधा हुआ था। इनमें से एक बदमाश ने कमर से पिस्तौल निकालकर दुकान की ओर गोलियां चलाईं। गौर करने वाली बात यह है कि बदमाशों ने दुकान के अंदर प्रवेश नहीं किया, केवल बाहर से फायरिंग की और भाग निकले। पुलिस को आशंका है कि यह घटना किसी लूटपाट के इरादे से नहीं, बल्कि व्यापारियों में भय फैलाने के उद्देश्य से की गई है। महावीर स्थान चौक हजारीबाग का प्रमुख ज्वैलरी मार्केट है, जहां सात से अधिक ज्वैलर्स की दुकानें हैं। दिनभर यहां ग्राहकों की भीड़ रहती है और रात में सुरक्षा गार्ड भी तैनात रहते हैं। घटना स्थल से सदर थाना मात्र 400 मीटर और हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल का आवास महज 150 मीटर की दूरी पर है। ऐसे में लोग सवाल उठा रहे हैं कि इतनी सुरक्षा के बीच भी बदमाशों ने इतनी बड़ी वारदात को कैसे अंजाम दिया। घटना के बाद स्वर्णकार संघ के अध्यक्ष विक्रम सोनी ने प्रशासन पर सवाल खड़े करते हुए कहा कि अपराधियों का मकसद व्यापारियों को डराना है, ताकि वे स्वतंत्र रूप से व्यापार न कर सकें।

भारी बारिश से डूबा बागबेड़ा फिल्टर प्लांट, 1140 घरों की जलापूर्ति बाधित

पूर्वी सिंहभूम : बागबेड़ा हाउसिंग कॉलोनी के फिल्टर प्लांट परिसर में भारी बारिश के कारण पानी भर गया। इससे जलापूर्ति पूरी तरह ठप हो गई। प्लांट के सैंप में भरे पानी को रविवार से मोटर पंप के जरिए बाहर निकाला जा रहा है। इस वजह से कॉलोनी के करीब 1140 घरों के 20 हजार से अधिक लोगों को पानी की किल्लत का सामना करना पड़ा है। स्थानीय निवासी सुबोध झा ने बताया कि पानी भरने की स्थिति का वीडियो 19 जून को बनाया गया था, जिसमें साफ देखा जा सकता है कि प्लांट परिसर किस तरह जलमग्न हो गया था। जलजमाव के कारण पंपिंग सेट बंद हो गया और पानी की सप्लाई पूरी तरह बाधित हो गई। झा ने विभाग और पंचायत प्रशासन की लापरवाही को इसके लिए जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि वर्षों पुराना फिल्टर प्लांट समय पर साफ नहीं किया गया और न ही जल निकासी की कोई मुकम्मल व्यवस्था की गई, जिसकी वजह से यह स्थिति उत्पन्न हुई है। फिलहाल फिल्टर प्लांट के सैंप से मोटर के जरिए पानी निकालने का कार्य जारी है ताकि जल्द से जल्द जलापूर्ति बहाल की जा सके।

संक्षिप्त खबरें

बड़कागांव में 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया

बड़कागांव : एनएमएल की पकरी बरवाडीह और चट्टी बरियातू कोयला खनन परियोजना ने 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया। यह आयोजन सिकरी टाउनशिप स्थित नेताजी सुभाष चंद्र बोस मनोरंजन केंद्र और हजारीबाग स्थित डीवीसी बैडमिंटन कोर्ट में किया गया। जिसमें दोनों परियोजनाओं के कर्मचारियों और उनके परिवारजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दोनों स्थानों पर प्रशिक्षित योग विशेषज्ञों के कुशल मार्गदर्शन में प्रतिभागियों ने विविध योग आसनों का अभ्यास किया। इस वर्ष की थीम योग एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए को अपनाते हुए, कार्यक्रम ने यह संदेश दिया, कि व्यक्ति का स्वास्थ्य और पृथ्वी का स्वास्थ्य एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। यह थीम सतत जीवनशैली को अपनाने में योग की भूमिका को रेखांकित करती है।इस अवसर की गरिमा को बढ़ाया सुब्रत कुमार दास, प्रमुख - परियोजना (पकरी बरवाडीह, पीबी-एनडब्ल्यू सीएमपी) और पवन कुमार रावत, महाप्रबंधक झ कोयला प्रेषण एवं बिलिंग (चट्टी बरियातू) के अलावा विभागाध्यक्षगण भी उपस्थित रहे।

भाजपा की जनाक्रोश रैली कल

बड़कागांव : राज्य सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार व दमनकारी नीति के विरुद्ध आगामी 24 जून को प्रखंड मुख्यालय में भाजपा का जनाक्रोश धरणा- प्रदर्शन को लेकर तैयारी बैठक बड़कागांव पश्चिमी पंचायत भवन में उरीमारी मंडल अध्यक्ष खेमलाल महतो की अध्यक्षता में की गई। जिसका संचालन बड़कागांव मंडल महामंत्री नरसिंह प्रसाद ने किया। बैठक को बतौर मुख्य अतिथि सह हजारीबाग लोकसभा सांसद प्रतिनिधि सतेंद्र नारायण सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि राज्य सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार व दमनकारी नीति के विरुद्ध आगामी 24 जून को बड़कागांव प्रखंड मुख्यालय में भाजपा का धरणा- प्रदर्शन भव्य होगा तथा सरकार को जगाने के साथ -साथ प्रखंड व अंचल में ब्याप्त भ्रष्टाचार को मिटाने को लेकर रणनीति तय की जाएगी। जिसके लिए भाजपा दृढ़ संकल्प है। मौके पर मुख्य रूप से विधानसभा सांसद प्रतिनिधि पूनम साव, बड़कागांव विधानसभा सांसद मीडिया प्रतिनिधि उमेश दांगी, बड़कागांव मण्डल सांसद प्रतिनिधि रंजीत कुमार, महेंद्र महतो, बेचन साव, सुमित्रा कुमारी,मनीष पाण्डे,कजरु साव, इंद्रभूषण कुमार,किशोर राणा, बिनोद कुमार, बासुदेव कुमार, रामस्वरूप महतो, नंदलाल महतो,अरुण मालाकार,विकास कुमार, शिवशंकर कुमार, सुमन गिरी, विजय यादव,समेत सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थे।

एंटी क्राइम के तहत सिकरी पुलिस ने चलाया वाहन जांच अभियान

बड़कागांव : सिकरी थाना क्षेत्र अंतर्गत दिन रविवार को बढ़ते अपराध एवं दुर्घटना को देखते हुए एंटी क्राइम के तहत वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया। यह जांच अभियान पतरा कलां चौक पर सीकरी थाना प्रभारी सुनील कुमार सिंह के निर्देश पर एस आई संजीव कुमार पांडे के नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा किया गया। इसमें बड़कागांव टंडवा मुख्य पथ पर चलने वाले सभी दो पहिया और चार पहिया वाहनों की सघन जांच व तलाशी की। हालांकि इस जांच अभियान में पुलिस के हाथ कुछ भी संदिग्ध वस्तुएं नहीं लगी। वहीं पुलिस ने बगैर हेलमेट के चल रहे कुछ बाइक सवारों को कड़ी फटकार लगाते हुए चेतावनी देकर छोड़ा गया। एवं कई बिना हेलमेट चालकों को ऑनलाइन चालान भी काटा गया। वाहन जांच अभियान के दौरान दोपहिया वाहनों में ट्रिपल राइड, डिक्की व हेलमेट आदि की जांच की गयी। वहीं चारपहिया वाहनों में सीट बेल्ट नहीं लगानेवालों को हिदायत दी गयी। बता दें आज के ही दिन हजारीबाग शहर के बाड़म बाजार स्थित श्री ज्वेलर्स में आज दिनदहाड़े हुई ताबड़तोड़ फायरिंग ने पूरे क्षेत्र में सनसनी फैला दी। हैरानी की बात यह है कि यह घटना भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद मनीष जायसवाल के आवास से महज कुछ ही दूरी पर हुई, जो सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करती है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, दो मोटरसाइकिलों पर सवार चार अज्ञात अपराधियों ने अचानक दुकान के सामने पहुंचकर कई राउंड गोलियां चलाईं। घटना के बाद अपराधी फरार हो गए, जबकि इलाके में अफरा तफरी मच गई। दुकान के शीशे पर साफतौर पर गोली के कई निशान देखे जा सकते हैं। इस जांच अभियान में सिकरी पुलिस के सभी जवान व पुलिसकर्मी शामिल थे।

आम उत्सव सह बागवानी मेला का हुआ आयोजन

चलकुशा : चलकुशा प्रखंड अंतर्गत एक दिवसीय प्रखंड स्तरीय आम उत्सव सह बागवानी मेला का आयोजन किया गया। प्रखंड सभाकक्ष में आयोजित आम उत्सव मेला का शुभारंभ प्रखंड विकास पदाधिकारी अमृता सिंह के द्वारा दीप प्रज्वलीत कर किया। आम उत्सव सह बागवानी मेला में कार्यक्रम के माध्यम से अधिक से अधिक बागवानी की योजनाओं को लेने तथा आर्थिक लाभ के बारे में विस्तार से बताया साथ ही आम बागवानी के तकनीकी पहलु की जानकारी तथा इस कार्यक्रम के उद्देश्यों की प्रदान की। बागवानी मेला में प्रखण्ड के सभी पंचायत के लाभुक के द्वारा आम की प्रदर्शनी लगायी गयी। मंच का संचालन राजेश कुमार प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी द्वारा किया गया। मेला में मौके पर मंचासीन नीतू सिंह प्रखण्ड प्रमुख, सविता सिंह जिला परिषद सदस्य, सलीम अंसारी 20 सूत्री अध्यक्ष, सिंह मुखिया संघ के अध्यक्ष आलोक सिंह, सभी मुखिया गण, सभी पंचायत समिति सदस्य गण, मुरलि कुमार इढट जेएसएलपीएस, सभी महिला समूह दीदी, सभी कनीय अभियंता, सभी पंचायत सचिव, सभी ग्राम रोजगार सेवक, सभी बागवानी लाभूक, ग्रामीण, समाज सेवी गण एवं मीडिया कर्मी उपस्थित हुए।

एक वैकल्पिक कैरियर विकल्प के रूप में पूंजी बाजार का पता लगाएं युवा सीए : काबरा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेंट्स संस्थान (आईसीएआई) की रांची शाखा की ओर से आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन उन्नति का समापन रविवार को हो गया। राजधानी के करमटोली चौक स्थित सेलिब्रेशन बैंक्वेट हॉल में आयोजित सम्मेलन के अंतिम दिन रविवार के पहले सत्र की शुरूआत शाखा अध्यक्ष सीए अभिषेक केडिया के सम्बोधन से हुआ। मौके पर केंद्रीय परिषद सदस्य सीए पंकज शाह ने कहा कि आईसीएआई संस्थान सीए सदस्यों के हितों की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सदस्यों के समक्ष उपस्थित वर्तमान समस्याओं का समाधान करने का प्रयास और वर्तमान कराधान प्रणाली पर भी काम कर रहा है। इसके बाद सीए दुर्गेश काबरा, अध्यक्ष, वित्तीय बाजार और निवेशक सुरक्षा समिति, आईसीएआई ने युवा सीए को एक वैकल्पिक और लाभदायक कैरियर विकल्प के रूप में पूंजी बाजार का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके बाद आशीष पी सोमैया ने इक्विटी में निवेश के लिए विजयी व्यवहार पर मार्गदर्शन किया। उन्होंने पूंजी बाजार की संभावनाओं के बारे में भी बताया और इक्विटी बाजार में लेनदेन करते समय धैर्य रखने का सुझाव दिया। अंतिम सत्र में केंद्रीय परिषद सदस्य सीए पंकज शाह ने विभिन्न उदाहरणों के साथ वसीयत उत्तराधिकार कानून के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने शेयर होल्डिंग पैटर्न और उसके कराधान के माध्यम से व्यापार पुनर्गठन पर भी चर्चा की। हर सत्र का विषय बेहद रोचक और नया था और प्रत्येक सत्र के अंत में प्रतिभागियों की ओर से प्रश्नोत्तर सत्र में गहन रुचि दिखाई। इससे सम्मेलन की प्रासंगिकता और उपयोगिता सिद्ध हुई। रांची शाखा के अध्यक्ष सीए अभिषेक केडिया ने कहा की आईसीएआई सदैव अपने सदस्यों को अद्यतन ज्ञान और नैतिक मूल्यों से सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने सभी वक्ताओं, प्रतिभागियों और आईसीएआई केंद्रीय परिषद और सीआईआरसी का आभार प्रकट किया। सम्मेलन के संयोजक सीए विकास सहाय और सीए शुभम मोदी, सीए सुनील मेहता, सीए हरेंद्र भारती, सीए अनीश जैन, सीए निशांत मोदी, सीए नरेश केजरीवाल, सीए दिलीप कुमार, सीए मनीषा बियानी सहित अन्य मौजूद थे। मंच का संचालन सीए अनुप कुमार और सीए सावित्री झा ने किया।

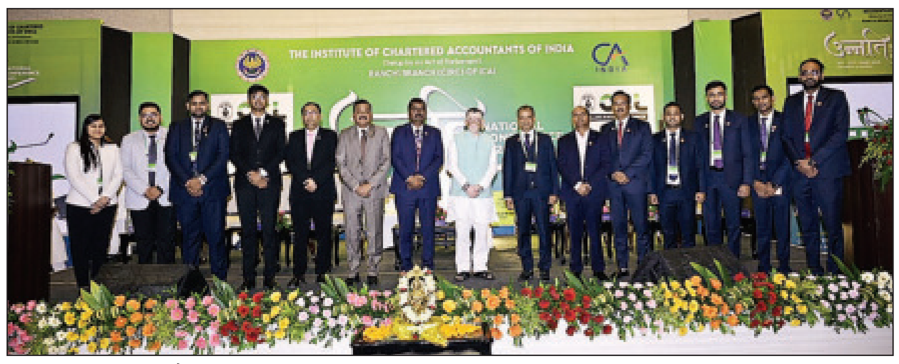

एक नजर

नि:शुल्क नेत्र और दंत जांच शिविर का हुआ आयोजन

रांची : अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की कार्यकारी महिला प्रदेश अध्यक्ष मनीषा सिंह की अगुवाई में रविवार को नेत्रहीन विद्यालय, हरमू, रांची में नि:शुल्क नेत्र एवं दंत जांच शिविर का आयोजन किया गया। मौके पर मनीषा सिंह ने कहा कि अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों तक सेवा पहुंचाना है। इसी के तहत आज शिविर लगाकर जरूरतमंदों को नि:शुल्क स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने का एक छोटा प्रयास किया गया। भविष्य में भी हम इसी प्रकार के जनहितकारी कार्यक्रम आयोजित करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि नेत्र और दंत स्वास्थ्य प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने नेत्र एवं दंत जांच का लाभ उठाया। शिविर में नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ प्रमोद कुमार द्वारा मरीजों की आंखों की जांच की गई। जबकि डॉ निमिषा, दंत चिकित्सक ने दंत रोगों की जांच एवं प्राथमिक उपचार प्रदान किया। शिविर में नेत्र एवं दंत स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के प्रति जागरूकता भी बढ़ाई गई। इस अवसर पर मनीषा सिंह के साथ अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की जिला अध्यक्ष रीना सिंह, संगठन मंत्री सुमन सिंह, सोनी चौरसिया, प्रवीण रंजन सिंह सहित संगठन के कई पदाधिकारी मौजूद थे।

गोस्सनर कॉलेज में 27 तक 11वीं में एडमिशन ले सकते हैं छात्र

रांची : गोस्सनर कॉलेज में 11वीं में नामांकन 27 जून तक छात्र ले सकते है। साइंस, कॉमर्स, आर्ट्स तीनों संकाय में मेरिट लिस्ट के आधार पर एडमिशन लिए जा रहे हैं। कॉलेज की प्रिंसिपल प्रो. डॉ. ईलानी पूर्ति ने बताया कि मेरिट लिस्ट में जिन छात्रों का नाम आया है वे 27 जून तक एडमिशन ले सकते हैं। नामांकन 21 जून से शुरू हो गया है।

भाषा का विवाद पैदा करने वाले जयचंदों से सचेत रहे सरकार : कैलाश

रांची : अखिल भारतीय भोजपुरी, मगही, मैथिली और अंगिका मंच की बैठक हरमू स्थित स्वागतम बैंक्वेट हॉल में रविवार को हुई। बैठक की अध्यक्षता कैलाश यादव ने की। बैठक में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आए भोजपुरी, मगही, मैथिली और अंगिका समाज के लोग शामिल हुए। बैठक में चर्चा के दौरान उपस्थित लोगों ने सरकार के भाषा विवाद पैदा करने पर काफी रोष व्यक्त किया। उपस्थित लोगों ने कहा कि जिला स्तर पर झारखंड शिक्षक पात्रता परीक्षा में कुल 17 क्षेत्रीय भाषा की सूची से भोजपुरी, मगही, मैथिली, अंगिका और भूमिज भाषा को नजरअंदाज कर 12 भाषा को लागू किया गया। इससे बहुसंख्य समाज में जनाक्रोश पैदा हो गया है। उल्लेखनीय है कि विगत वर्षों में भी सरकार की ओर से ऐसी हरकत की गई थी। इससे राज्यभर में विरोध प्रदर्शन हुआ था। राज्य के पलामू और गढ़वा में शत प्रतिशत लोग भोजपुरी और मगही भाषा का प्रयोग करते हैं और गोड्डा, साहिबगंज, देवघर, जामताड़ा सहित अन्य जिलों में लोग अंगिका भाषा बोलते हैं। साथ ही रांची, जमशेदपुर, बोकारो, धनबाद, कोडरमा, चतरा और हजारीबाग में भोजपुरी और मगही भाषा बड़ी आबादी बोलती है। कैलाश यादव ने कहा कि समाज में ऐसे कई जयचंद हैं जो सामाजिक समरसता को खराब करने चाहते हैं। ऐसे तत्वों से सरकार को सचेत रहना चाहिए। वहीं मैथिली संघर्ष समिति के संयोजक अमरनाथ झा ने कहा कि राज्य में मान्यता प्राप्त 17 क्षेत्रीय भाषाएं है। जिला स्तर पर सरकार 2023 के गजट अनुसार सिर्फ 12 भाषाओं को मान्यता दिया है जो गलत है। सरकार को अपने निर्णय पर पूर्विचार करने की जरूरत है।

डीसी और एसएसपी ने रथ मेला की तैयारियों और सुरक्षा व्यवस्था का लिया जायजा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री और एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने रविवार को जगन्नाथपुर रथ यात्रा की तैयारियों और सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। साथ ही जिला के वरीय पदाधिकारियों और मंदिर समिति के सदस्यों के साथ बैठक की। उपायुक्त भजंत्री ने मेला परिसर में व्यवस्था का जायजा लेते हुए वरीय अधिकारियों ने मंदिर समिति के पदाधिकारी को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। जगन्नाथपुर मंदिर से मौसी बाड़ी तक रथ यात्रा रूट का निरीक्षण करते हुए उपायुक्त ने श्रद्धालुओं के आवागमन की सुविधा सुनिश्चित करने का निर्देशित किया। उन्हों ने कहा की पूरे विधि-विधान से रथ यात्रा की शुरूआत होगी इसके लिए विधि-व्यवस्था के सभी इंतजाम किये गये हैं। श्रद्धालुओं को किसी भी तरह की परेशानी ना हो इसका पूरा ध्यान रखते हुए 24 घंटे बिजली, चलंत शौचालय, पानी, अग्निशमन और एंबुलेंस की व्यवस्था की गयी है। उपायुक्त ने कहा कि जगन्नाथपुर रथ यात्रा के दौरान साफ-सफाई के विशेष इंतजाम रखने के निर्देश दिए है। साथ ही उन्होंने कहा कि मेला परिसर में प्लास्टिक की थैलियों, डिस्पोजेबल ग्लास, प्लेट्स, चम्मच और अन्य सामग्रियों का उपयोग ना करने की बात कही। हर स्टॉल के बाहर डस्टबिन अनिवार्य रूप से रखना होगा। जिला प्रशासन आगामी रथ मेले के आयोजन को स्वच्छ, सुरक्षित और पर्यावरण के अनुकूल बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उपायुक्त ने कहा की जिला प्रशासन की पूरी टीम के साथ मेला के दौरान वॉलिंटियर भी श्रद्धालुओं के लिए तैनात रहेंगे ताकि भक्तों को अपने आराध्य के दर्शन में कोई परेशानी ना हो, साथ ही एक व्हाट्सएप ग्रुप भी बनाने के निर्देश दिए गए जिसमें जिला प्रशासन के साथ मंदिर कमिटी के भी पदाधिकारी जुड़े रहेंगे।

मंत्री दीपिका पांडे सिंह का जनता दरबार 24 को

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राज्य की ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडेय सिंह मंगलवार को जनता दरबार लगाएंगी। मंत्री रांची के श्रद्धानंद रोड स्थित कांग्रेस भवन मे जनता दरबार में जन समस्याओं को सुनेंगी। इस सम्बंध में जानकारी देते हुए प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सोनाल शांति ने बताया कि जन समस्याओं के समाधान के लिए कांग्रेस लगातार जनता दरबार का आयोजन कर रही है। पार्टी जनता की समस्याओं और उनके मुद्दों के प्रति हमेशा गंभीर रही है। पंचायत से लेकर राज्य स्तर तक जन समस्याओं के समाधान के लिए कांग्रेस लगातार आम लोगों से जनता दरबार के माध्यम से संपर्क स्थापित कर रही है। सरकार गठन के बाद से ही कांग्रेस के मंत्रियों ने लगातार जनता दरबार का आयोजन किया जा रहा है। बजट सत्र के पूर्व चारों मंत्रियों ने जनता दरबार का आयोजन किया था। इसमें कई समस्याओं का समाधान मंत्रियों की पहल पर हुआ है। पुनः पार्टी जनता दरबार का आयोजन कर रही है। इसमें विगत पांच जून को कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की और 17 जून को स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी के जनता दरबार के माध्यम से लोगों की समस्याओं का निराकरण किया गया है।

प्री मीट में सीएसआर फंड के बेहतर उपयोग पर मंथन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मिशन ब्लू फाउंडेशन और आई-श्री फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित झारखंड सीएसआर कॉन्क्लेव 2025 की तैयारी को लेकर रविवार को रांची के एक होटल में प्री-मीट का आयोजन हुआ। इस बैठक का मुख्य विषय जनजातीय कल्याण रहा, जिसमें राज्य के 30 जनजातीय समुदायों के अगुआ और करीब 200 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। प्रतिनिधियों ने सुझाव दिया कि सीएसआर फंड का इस्तेमाल प्राथमिकता के आधार पर शिक्षा, स्वास्थ्य, खेलकूद, पारंपरिक कला-संस्कृति, पेयजल और अंधविश्वास उन्मूलन जैसे क्षेत्रों में किया जाए। मिशन ब्लू फाउंडेशन के अध्यक्ष पंकज सोनी ने बताया कि यह प्री-मीट आने वाले कॉन्क्लेव के लिए दिशा तय करेगा, ताकि कारपोरेट कंपनियों का सहयोग झारखंड की पारंपरिक पहचान और विकास के लिए सटीक दिशा में हो। पूर्व विधायक शिवशंकर उरांव ने कहा कि आपसी समस्या स्थापित कर सीएसआर फंड का उपयोग करने आमजनों को फंड का बेहतर लाभ मिलता। खासकर आदिवासी समाज का समग्र विकास होता। सीएसआर पॉलिसी तो बनी है लेकिन उसमें सुधार करने की जरूरत है। पूर्व विधायक गंगोत्री कुजूर ने सीएसआर फंड के पारदर्शी और समन्वित उपयोग पर जोर दिया। ताकि इसके सही उपयोग होने पर शिक्षा, स्वास्थ्य समेत अन्य हर सेक्टर में बेहतर लाभ मिल पाता। आई-श्री फाउंडेशन के राजीव गुप्ता ने जनजातीय समुदाय की भागीदारी को झारखंड के विकास की रीढ़ बताया। प्री मीट में खासकर सेल बोकारो के जीएम हेमू टोप्पो, बीएसएनएल के उमेश प्रसाद साह, पीएचडी चैंबर के मंतोष कुमार, राजू पोद्दार, राहुल कुमार, बिंदेश्वर उरांव सहित कई गणमान्य मौजूद थे।

झारखंड में युवा कांग्रेस के संगठनात्मक चुनावों का ऐलान, 27 से होगा नामांकन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड में युवा कांग्रेस की नई शुरूआत होने जा रही है। भारतीय युवा कांग्रेस ने झारखंड में ब्लॉक, विधानसभा, जिला और राज्य स्तर पर संगठनात्मक चुनाव कराने की घोषणा की है। इसके तहत पूरे राज्य में युवाओं को संगठन से जोड़ते हुए नए नेतृत्व को चुना जाएगा। झारखंड युवा कांग्रेस के नेता उज्ज्वल तिवारी ने बताया कि नामांकन प्रक्रिया 27 जून से 03 जुलाई तक चलेगी। चुनाव में वही युवा हिस्सा ले सकेंगे जिनकी उम्र 18 से 35 साल के बीच है। इसके लिए जन्म तिथि 28 जून 1990 से 27 जून 2007 के बीच होनी चाहिए। चुनाव की जानकारी और तिथियां वेबसाइट www.ycea.in पर उपलब्ध रहेंगी। इस बारे में रिटर्निंग ऑफिसर ने बताया कि युवा कांग्रेस देश का एकमात्र राजनीतिक संगठन है, जो आंतरिक चुनावों के जरिए अपने नेताओं का चयन करता है। यह परंपरा राहुल गांधी के नेतृत्व में शुरू हुई थी, जब वे कांग्रेस और युवा संगठनों के प्रभारी थे। उन्होंने कहा, यह युवाओं के लिए राजनीति में आगे बढ़ने का एक पारदर्शी रास्ता है, जो देश की किसी और पार्टी में नहीं है। युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष उदय भान चिब ने कहा कि, यह एक नई राजनीतिक सोच की शुरूआत है, जिसमें युवा नेताओं को नामांकन की बजाय चुनाव के माध्यम से चुना जाएगा। उन्होंने बताया कि इससे संगठन की नींव मजबूत होगी और हर कोने से योग्य नेतृत्व सामने आएगा। चुनाव की निष्पक्षता को सुनिश्चित करने के लिए जोनल और राज्य स्तर पर रिटर्निंग ऑफिसर्स की टीम बनाई गई है। इसके अलावा चुनाव प्रक्रिया, नामांकन और संगठनात्मक जानकारी देने के लिए ओरिएंटेशन और प्रशिक्षण सत्र भी होंगे। चुनाव शेड्यूल की घोषणा पार्टी के प्रदेश मुख्यालय में की गई, जिसमें कई वरिष्ठ नेता मौजूद रहे।

रिम्स पार्ट-2 की बात करने वाली सरकार गरीबों को एम्बुलेंस देने में असमर्थ : राफिया

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भाजपा की प्रदेश प्रवक्ता राफिया नाज ने झारखंड सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने रविवार को कहा कि रिम्स पार्ट-2 की बात करने वाली सरकार गरीबों को एम्बुलेंस देने में असमर्थ है। उन्होंने कहा कि एक ओर सरकार सभी को स्वास्थ्य का दावा करती है, वहीं दूसरी ओर जमीनी हालात इतने भयावह हैं कि गंभीर रूप से बीमार व्यक्ति समय पर अस्पताल तक नहीं पहुंच पा रहा। यह एक साधारण प्रशासनिक चूक नहीं, बल्कि आम नागरिकों के जीवन और स्वास्थ्य के अधिकार का सीधा उल्लंघन है। राफिया ने गोड्डा जिले में एक मासूम बच्ची की मृत्यु की घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि यह पूरी मानवता को झकझोर देने वाली त्रासदी है। केवल एंबुलेंस समय पर न पहुंच पाने के कारण एक मासूम की जान चली गई, जबकि परिजनों ने बार-बार सहायता के लिए कॉल किए। इसी तरह की एक और घटना चतरा जिले में घटी, जहां सुकुल भुइयां की मौत भी एंबुलेंस की देरी के कारण हुई। इन घटनाओं ने यह साफ कर दिया है कि झारखंड में एंबुलेंस सेवा लगभग निष्क्रिय हो चुकी है। उन्होंने राज्य में एंबुलेंस सेवा की स्थिति पर राफिया ने कहा, झारखंड में 32 प्रतिशत सेवा-योग्य एंबुलेंसे बंद हालत में हैं। उन्होंने यह सवाल उठाया कि जब जनता के टैक्स से इन सेवाओं को चलाया जा रहा है तो फिर रखरखाव और मरम्मत के लिए धन का प्रबंधन क्यों नहीं हो रहा? उन्होंने जोर दिया कि यदि इतनी बड़ी संख्या में एंबुलेंस निष्क्रिय हैं तो यह सीधे तौर पर जनता की जान के साथ खिलवाड़ है। उन्होंने यह भी कहा, ह्वराज्य में केवल वाहनों की ही नहीं, बल्कि संसाधनों और मानवबल की भी गंभीर कमी है। कई जिलों में एक ही एंबुलेंस पर पूरा प्रखंड निर्भर है। कई गाड़ियों में प्रशिक्षित चालक और सहायक कर्मियों की भारी कमी है, जिससे आपातकालीन सेवाएं प्रभावित हो रही हैं। उन्होंने इसे संवेदनशील शासन के खोखले दावे करार दिया। उन्होंने एक और महत्वपूर्ण तथ्य उजागर किया कि एंबुलेंस सेवा में कार्यरत कई कर्मचारियों को महीनों से वेतन नहीं मिला है। ऐसे में सरकार उनसे लगातार सेवा की अपेक्षा कैसे कर सकती है, जबकि उन्हें उनकी मेहनत का पारिश्रमिक समय पर नहीं मिल रहा?ह्व उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति में कर्मचारियों का मनोबल टूटता है और सेवा की गुणवत्ता प्रभावित होती है। राफिया ने स्वास्थ्य व्यवस्था की बदहाली पर गंभीर चिंता जताते हुए झारखंड सरकार और स्वास्थ्य विभाग से कहा कि पहली प्राथमिकता निष्क्रिय एंबुलेंसों की तत्काल मरम्मत होनी चाहिए ताकि वे फिर से सेवा में आ सकें। साथ ही, प्रत्येक 10,000 जनसंख्या पर कम-से-कम एक एंबुलेंस की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने एक स्वतंत्र निगरानी समिति के गठन की भी आवश्यकता बताई, जो हर माह सेवाओं की समीक्षा कर रिपोर्ट सार्वजनिक करे। अंततः, उन्होंने उन अधिकारियों पर कड़ी अनुशासनात्मक कार्रवाई की मांग की जिनकी लापरवाही से आम नागरिकों की जान गई।

संक्षिप्त खबरें

रिम्स-दो के लिये खेतीयोग्य जमीन का नहीं होने देंगे अधिग्रहण : बंधु तिर्की

रांची : पूर्व मंत्री और प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने कहा कि नगड़ी मौजा में खेतीयोग्य खतियानी जमीन पर रिम्स-दो के निर्माण का विरोध पूरी तरीके से नगड़ी के रैयतों और ग्रामीणों के जीवन-यापन से जुड़ा मामला है। यहां न तो झारखण्ड में स्वास्थ्य सुविधा बढ़ाने का कोई विरोध कर रहा है और न ही किसी को रिम्स-दो से कोई परहेज है। कार्यकारी अध्यक्ष बंधु ने झारखण्ड में स्वास्थ्य सुविधाओं को बढ़ाने के मामले में स्वास्थ्य मंत्री को बधाई है कि वे झारखण्ड में रिम्स-दो, तीन और चार का निर्माण करें और झारखण्ड की स्वास्थ्य सुविधाओं को विश्व स्तरीय बनायें। लेकिन इसके लिये नगड़ी मौजा की खतियानी खेतीयोग्य जमीन का अधिग्रहण करना कहीं से भी उचित नहीं है। यहां वैसे ही आबादी के अनुपात में बहुत कम कृषि योग्य जमीन है और यहां के लोग अपने जीवन-यापन के लिये केवल उसी पर निर्भर हैं। वरिष्ठ कांग्रेस नेता ने कहा कि अपनी खेती की जमीन को बचाना नगड़ी के रैयतों और ग्रामीणों के लिये वैसा ज्वलंत मुद्दा है जिसके लिये सभी को संवेदनशील होना ही पड़ेगा। उन्होंने कहा कि किसी भी विकास योजना या फिर रिम्स-दो जैसी परियोजनाओं के लिये यदि नगड़ी मौजा की खतियानी जमीन ली जायेगी तो कोई यह मानकर ना बैठे कि आदिवासी खामोशी से विस्थापन और पलायन का शिकार होते रहेंगे। उन्होंने कहा कि कभी खान-खदान तो कभी किसी अन्य विकास योजना और कभी किसी औद्योगिक समूह के लिये जमीन अधिग्रहण की कीमत गरीब आदिवासी बहुत चुका चुके हैं। विस्थापन और पलायन का दंश भी आदिवासी बहुत झेल चुके हैं और यह अब बर्दाश्त से बाहर की बात है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य मंत्री को अपने विभागीय अधिकारियों को यह आदेश देना चाहिये कि वे रांची या झारखण्ड में किसी अन्य उपयुक्त जमीन का चयन कर जहां रिम्स-दो का निर्माण ही, क्योंकि नगड़ी में यह निर्माण पूरी तरीके से अनुचित और अप्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य मंत्री को अपने बड़बोलेपन की बजाय झारखण्ड की जमीनी समस्याओं, वास्तविकता पर नजर डालनी चाहिए। उन्हें अब तक झारखण्ड में हुई राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक और अन्य गतिविधियों के आधार पर समझ के स्तर को बढाना चाहिये। तब उन्हें अच्छी तरीके से पता चल जायेगा कि झारखण्ड में कितनी खेती योग्य जमीन है, कितनी पठारी और जंगल कितने क्षेत्रफल में हैं। वहीं कितनी जमीन सरकारी है जहां विकास की अपार संभावनायें हैं। लेकिन जमीनी वास्तविकताओं से मुंह फेर कर जिस प्रकार से नगड़ी में रिम्स-दो के निर्माण के लिये स्वास्थ्य मंत्री का उतावलापन दिखाई दे रहा है वह केवल उनकी अदूरदर्शिता को ही दिखलाता है।

श्री श्याम मित्र मण्डल के नए अध्यक्ष होंगे गोपाल मुरारका

रांची : प्रसिद्ध सामाजिक-धार्मिक संस्था श्री श्याम मित्र मण्डल के नए अध्यक्ष गोपाल मुरारका होंगे। मण्डल का चुनाव-निर्वाचन पहली बार संविधान के अनुरूप हो रहा है ।मण्डल के संस्थापक सदस्य ,पूर्व अध्यछ एवम चुनाव पदाधिकारी विश्वनाथ नारसरिया ने बताया कि नामांकन पत्र वापसी के बाद सभी पदों व कार्यकारिणी समिति के सदस्यों का चुनाव-निर्वाचन में संख्या के अनुसार उतने ही नामांकन पत्र शेष बचे है। नारसरिया ने बताया कि डोरंडा निवासी मण्डल के सक्रिय सदस्य संजय कुमार सराफ ने अपने सभी नामांकन पत्र वापस ले लिए। सराफ ने मण्डल में मतदान नही हो, इस सदभावना से अपना नामांकन वापस ले लिया। मण्डल के सत्र २०२५-२७ के लिए उम्मीदवारों की अंतिम सूची आज सायंकाल जारी कर दी गई है। अंतिम सूची इस प्रकार है। गोपाल मुरारका (अध्यछ), अशोक कुमार लाडिया व श्रवण कुमार ढांढनिया (उपाध्यक्ष गण), गौरव अग्रवाल(महामंत्री), पंकज कुमार अग्रवाल व विष्णु चौधरी(मंत्रीगण), आदित्य लोहिया व प्रवीण अग्रवाल हरमू रोड (उपमंत्री गण), मनोज कुमार खेतान(कोषाध्यक्ष),रोहित कुमार अग्रवाल(प्रचार मंत्री) एवं राजेश चौधरी (आंतरिक अंकेक्षक)। कार्यकारिणी सदस्य के लिए अनिल कुमार नारनोली,प्रवीण अग्रवाल(रातू रोड),राजेश कुमार ढांढनिया, श्याम सुंदर शर्मा एवं स्नेह कुमार पोद्दार प्रत्याशी है। चुनाव पदाधिकारी विश्वनाथ नारसरिया एवं सहयोगी राज कुमार केडिया ने बताया कि ११३ जुलाई २०२५ रविवार को मण्डल की आहूत बैठक में उपरोक्त सभी को निर्वाचित घोषित किया जाएगा। बैठक पूर्वा ११ बजे से होगी। प्रथम महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया ने सभी सदस्यों से बैठक में आने का आग्रह किया है।

पौधारोपण पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए जरूरी है : दिनेश साहू

रांची: स्वयं सेवी संस्थान झारखंड प्रदेश शौंडिक संघ ने पूर्व घोषित कार्यक्रम के तहत आज वनरोपण, पौधारोपण का कार्य किया। रांची सर्कुलर रोड बर्दमान कंपाउंड स्थित होली क्रॉस सोसाइटी के ठीक सामने स्थित खाली बगान में प्रदेश अध्यक्ष दिनेश प्रसाद साहु, प्रदेश संरक्षक कुमुद प्रसाद साहु उर्फ मंटू बाबू, प्रदेश महामंत्री उमेश साहु, प्रदेश कार्यक्रम प्रभारी उदय साहु, प्रदेश उपाध्यक्ष सह प्रवक्ता बीरेंद्र साहु, रमेश साहु, कुणाल कुमार बंटी, वनरोपण प्रभारी अरुणदेव कुमार,उपेन्द्र कुमार, ओम प्रकाश गुप्ता, पंच परगना सुंडी संघ से सचिव उपेन्द्र साहु, दामोदर गोराई, एवं अन्य उपस्थित लोगों ने पेड़ लगाकर धरती को हरा भरा बनाने के लिए उपस्थित लोगों को प्रेरित किया। प्रदेश अध्यक्ष दिनेश प्रसाद साहु ने पेड़ लगाते हुए अपने संबोधन में कहा कहा कि वनरोपण पौधारोपण कर पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए बहुत ही जरूरी है। हम सभी मिलकर वनरोपण पौधारोपण कर संकल्प लें और देश को हरा भरा बनाने में अपना भरपूर सहयोग और योगदान दे। आने वाली पीढ़ी को प्रदूषण मुक्त स्वच्छ और टिकाऊ भविष्य प्रदान किया जा सकता है। आज के इस वनरोपण कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रभारी अरुणदेव कुमार एवं प्रदेश कार्यक्रम प्रभारी उदय साहु ने पिछले दिनों से ही पूरी तैयारी कर रखी थी। प्रदेश महामंत्री उमेश साहु ने झारखंड प्रदेश शौंडिक संघ द्वारा आयोजित वनारोपण पौधा रोपण कार्यक्रम की गति विधियों को प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में भी सक्रियता से करने की बात कही है।

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में मेधावी छात्र और अभिभावक सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

रांची : धुर्वा स्थित सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में रविवार को मेधावी छात्र अभिनंदन सह अभिभावक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कक्षा 10वीं और 12वीं में उत्कृष्ट अंक लाने वाले छात्रों एवं उनके अभिभावकों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में सुजीत कुमार साहू (महाप्रबंधक, केनरा बैंक) तथा विशिष्ट अतिथि अमित कुमार (प्रबंधक, सेंट्रल बैंक) उपस्थित थे। 12वीं विज्ञान संकाय की नंदिनी कुमारी (94.8 प्रतिशत) और वाणिज्य की अलीशा कुमारी (94 प्रतिशत) को सम्मानित किया गया। 10वीं की छात्रा निशु प्रिया ने (97.8 प्रतिशत) अंक लाकर रांची में आठवां स्थान प्राप्त किया। 85 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले सभी छात्रों को प्रतीक चिन्ह, प्रमाण पत्र और अभिभावकों को अंगवस्त्र एवं रामचरितमानस भेंट की गई। मुख्य अतिथि ने छात्रों को निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा दी। प्राचार्य ललन कुमार ने अतिथि परिचय कराया और धन्यवाद ज्ञापन लाल अशोक नाथ शाहदेव ने किया। कार्यक्रम में समिति के सदस्य, शिक्षक व अभिभावक बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

एक नजर

उत्पाद विभाग की बड़ी कार्रवाई, भारी मात्रा में अवैध शराब बरामद

बोकारो : उपायुक्त बोकारो अजय नाथ झा के निदेशानुसार एवं सहायक आयुक्त उत्पाद बोकारो के मार्गदर्शन में जिला उत्पाद बल द्वारा शनिवार देर शाम को बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया गया। गुप्त सूचना के आधार पर जिला उत्पाद टीम ने पिंड्राजोरा थाना अंतर्गत कांडरा स्थित एनएच किनारे खड़े एक संदिग्ध ट्रक की तलाशी ली गई। तलाशी के क्रम में उक्त ट्रक नं.- पी बी 46 एम 8164 से 888 गोल्ड व्हिस्की ब्रांड की 750 मिलीलीटर की कुल 900 पेटी (कुल 10,800 बोतलें, लगभग 8,100 लीटर) अवैध अंग्रेजी शराब बरामद की गई। छापामारी के दौरान मौके से ट्रक चालक हरप्रीत सिंह को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। प्रारंभिक पूछताछ में शराब की तस्करी से संबंधित अहम सुराग मिलने की संभावना है। मामले में आगे की जांच-पड़ताल जारी है। छापामारी दल में निरीक्षक उत्पाद श्री विजय कुमार पाल, अवर निरीक्षक सदर-सह-तेनुघाट श्री सन्नी विवेक तिर्की एवं अवर निरीक्षक, बेरमो-सह-चंदपुरा श्री महेश दास एवं अन्य उत्पाद बल के जवान उपस्थित थे। जिला प्रशासन बोकारो द्वारा अवैध शराब कारोबारियों के विरुद्ध लगातार सख्त कार्रवाई की जा रही है और भविष्य में भी यह अभियान निरंतर जारी रहेगा।

बाटबौआ ग्रामीण कमेटी का हुआ गठन

बोकारो : धनबाद क्षेत्रीय राजपूत समाज जोन चार के बाटबौआ ग्राम में अमरेश सिंह की अध्यक्षता में दुर्गा मंदिर के प्रांगण में की गई। बैठक में मुख्य रूप से केन्द्रीय अध्यक्ष जनमेजय सिंह, केन्द्रीय कार्यकारी अध्यक्ष सुरेन्द्र नाथ सिंह, प्रवक्ता राधेश्याम सिंह, सचिव श्याम शंकर सिंह, जोनल अध्यक्ष मानिक सिंह, सचिव राजकुमार सिंह व दिलीप सिंह उपस्थित थे। बैठक में ग्रामीण कमिटी के अध्यक्ष प्रदिप सिंह उपाध्यक्ष सपन सिंह,सचिव अशोक सिंह, सहसचिव राजेश सिंह कोषाध्यक्ष बबलू सिंह, प्रवक्ता सुनिल सिंह,, सहकोषाध्यक्ष राजकमार सिंह, सह ?प्रवक्ता राणा सिंह विशिष सलाहकार पकाज सिंह, सलाह ?कार अमेरश लिह,, संगठन सचिव विकाश सिंह, सलाह ?कार- धिरेन विहं शिवनारायण सिंह, धनश्याम सिंह, कोकिल सिंह, विश्वनाथ सिंह, जयप्रकाश सिंह रोहीत सिंह, प्रदीप सिंह उर्फ दिपु बनाए गये। नव युवक सदस्य नितेश सिंह, महिल सदस्य प्रियंका सिंह, अनिता सिंह बनाया गया। इस अवसर पर ग्रामीण उपस्थित थे।

स्नेह मिलन समारोह का हुआ आयोजन

बोकारो : संकल्प सृजन द्वारा सोनाटांड स्थित कार्यालय में शिशु सृजन वाटिका के बच्चों के बीच स्नेह मिलन समारोह का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस समारोह में संगठन के सदस्यों और संस्था के बच्चों के बीच एक अनोखा मिलन हुआ। संगठन की महासचिव साध्वी झा और आयोजन की मुख्य अतिथि सरिता कुमारी ने इस समारोह में विशेष रूप से उपस्थित होकर इसका महत्व बढ़ाया। इस दौरान संगठन के सदस्यों ने बच्चों के साथ समय बिताया, खेला, और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया। समारोह का समापन एक साथ भोजन ग्रहण कर हुआ, जिसमें सभी ने एक-दूसरे के साथ समय बिताने का आनंद लिया।

रोटरी बोकारो का वोकेशनल एक्सीलेंस अवार्ड्स समारोह संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : रोटरी क्लब ऑफ बोकारो स्टील सिटी द्वारा पॉल हैरिस सभागार, रोटरी परिसर में एक प्रेरणादायी, भावनाप्रवण और गरिमामय आयोजन वोकेशनल एक्सीलेंस अवार्ड्स का भव्य रूप से संपन्न हुआ। इस आयोजन में समाज के उन कर्मयोगियों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने इस रोटरी वर्ष 2024-25 में क्लब के विविध जनकल्याणकारी प्रकल्पों को सफल बनाने हेतु अपने श्रम, समय एवं सेवा का निःस्वार्थ समर्पण किया। यह कार्यक्रम न केवल सेवा की भावना को सम्मान देने का एक प्रयास था, बल्कि समाज में निस्वार्थ कार्य करने वाले व्यक्तियों को सार्वजनिक मंच पर प्रोत्साहन प्रदान करने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रजनीश कुमार, जिला वन पदाधिकारी थे, जिन्होंने स्मृति-चिह्न एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर समारोह का शुभारंभ किया। मंच संचालन की जिम्मेदारी रोटेरियन मन्नू श्रीवास्तव ने अपनी विशिष्ट शैली में निभाई, जिसे सभी ने सराहा। वहीं, मेजबानी की भूमिका क्लब के पूर्व अध्यक्ष रोटेरियन अशोक तनेजा ने अत्यंत आत्मीयता एवं गरिमा के साथ निभाई। सेवा और रोटरी मूल्यों के प्रति उनका समर्पण सदैव प्रेरणास्रोत रहा है, और उनकी पहल पर आयोजित यह संध्या क्लब के लिए एक स्मरणीय आयोजन बन गई। इस अवसर पर 37 विशिष्ट स्वास्थ्यकर्मियों–जिनमें चिकित्सक, नर्स, पैरामेडिकल स्टाफ सहित अन्य सामाजिक कार्यकर्ता भी सम्मिलित थे – को क्लब की ओर से प्रशंसा-पत्र एवं स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। ये वे व्यक्ति हैं जो किसी प्रचार या पुरस्कार की अपेक्षा किए बिना, मानवता और सेवाभाव के साथ समाज को बेहतर बनाने के प्रयासों में संलग्न हैं और रोटरी के सेवा प्रकल्पों में पूर्ण सहभागिता निभा रहे हैं। कार्यक्रम में बोकारो के अनेक गणमान्य नागरिक, वरिष्ठ रोटेरियन, विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधिगण एवं क्लब के लगभग सभी सदस्य सपरिवार उपस्थित रहे, जिनकी उपस्थिति ने आयोजन की गरिमा में चार चांद लगा दिए।

फेरो स्क्रेप मे हड़ताल हीं एक बिकल्प : एन के सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : जय झारखंड मजदूर समाज के महामंत्री बि के चौधरी के दिशा-निर्देशन मे आज फेरो स्क्रेप निगम लिमिटेड के टाईम आफिस पर बिभागीय कर्मचारीयों, ठेकाकर्मीयों एवं फेरो स्क्रेप के सब कन्टेक्टर मे काम कर रहे ठेकाकर्मीयों का होने बाले हड़ताल को लेकर मिटिंग हुई जिसका अध्यक्षता बिभागीय युनियन के शाखा अध्यक्ष सुरेश प्रसाद ने किया जिसमे सेकड़ो मजदूरों ने भाग लेते हुए 27-28 जून को दो दिवसीय प्रस्तावित हड़ताल को सफल बनाने का प्रतिबद्धता का संकल्प लिया। उपस्थित मजदूरों को सम्बोधित करते हुए मुख्य बक्ता जय झारखण्ड मजदूर समाज के संयुक्त महामंत्री एन के सिंह ने कहा कि इस बार का पूर्ण चक्का जाम हड़ताल निर्णायक होने बाला है क्योंकि 2018 मे होने बाले हड़ताल के बीच सहायक श्रमायुक्त केन्द्रीय धनबाद के त्रिपक्षीय बार्ता मे लिखित समझौता मे भाग लेते हुए फेरो स्क्रेप के प्रधान कार्यालय भिलाई से आकर महाप्रबंधक ने हस्ताक्षर कर यह निर्णय किया था कि जिस तरह फेरो स्क्रेप निगम के अन्य युनिटों मे युनियन का गुप्त मतदान के द्वारा जल्द चुनाव करबा लिया जायगा और मजदूरों द्वारा चुने युनियन हीं निगम के जे एम सी बोर्ड मे भाग लेगा जहाँ मजदूरों एवं कम्पनी के हित मे निर्णय लिया जाता है।

सेक्टर 4 जी विश्वकर्मा मंदिर प्रांगण में आयुष वेलबिंग सेंटर का शुभारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : सेक्टर 4 जी स्थित विश्वकर्मा मंदिर के सामुदायिक भवन में आज आयुष वेलबिंग सेंटर का भव्य उद्घाटन किया गया। सेंटर की संस्थापक रिंकू कुमारी एवं मुख्य अतिथि ने संयुक्त रूप से रिबन काटकर इस फिटनेस सेंटर की शुरुआत की। इस अवसर पर स्थानीय लोग एवं गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। रिंकू कुमारी ने बताया कि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह होते जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि बाजार में मिलने वाले खाद्य पदार्थों में केमिकल की मात्रा बढ़ने से लोग समय से पहले ही बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए आयुष वेलबिंग सेंटर की स्थापना की गई है, ताकि लोग अपने व्यस्त जीवन से समय निकालकर स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हों और खुद को फिट रख सकें। सेंटर में हर दिन सुबह 6 बजे से 9 बजे तक तथा शाम 5 बजे से 7 बजे तक योग एवं स्वास्थ्य संबंधी प्रशिक्षण दिया जाएगा। यहां अनुभवी ट्रेनर्स द्वारा योग, फिटनेस और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने की दिशा में कार्य किया जाएगा। साथ ही, सेंटर में मुफ्त हेल्थ चेकअप की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है। रिंकू कुमारी ने सभी लोगों से अपील की कि वे इस सेंटर का लाभ उठाएं और स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं। उद्घाटन समारोह में स्थानीय लोगों ने भी सेंटर की पहल की सराहना की और इसे समाज के लिए लाभकारी बताया।

सेवा के क्षेत्र में रोटरी कोडरमा का जादू चला उपलब्धि भरा रहा यह वर्ष : अमित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

झुमरीतिलैया : सत्र 2024- 25 के अध्यक्ष रोटेरियन अमित कुमार के अध्यक्षता में रोटरी क्लब कोडरमा बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की चौथी मीटिंग का आयोजन मॉडर्न पब्लिक स्कूल परिसर में किया गया आज के कार्यक्रम की होस्ट रोटरी की असिस्टेंट गवर्नर संगीता शर्मा थी सभी पदाधिकारी ने असिस्टेंट गवर्नर संगीता शर्मा को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया अध्यक्ष अमित कुमार ने आए हुए सभी सेवा क्षेत्र में काम करने वाले बोर्ड आफ डायरेक्टर का स्वागत गुलाब का फूल देकर किया अपने स्वागत भाषण में सभी के प्रति आभार प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि यह सत्र अचीवमेंट का वर्ष रहा रोटरी क्लब प्रथम बार 100% पीएचफ क्लब बना, पूर्ण रूप से ऐरे क्लब बना, रोट्रेक्ट क्लब की स्थापना हुई, इंटेरेक्ट क्लब की स्थापना हुई, और अब सैटेलाइट क्लब डोमचांच की स्थापना भी हो रही है महिलाओं के बीच 16 साइकिल बांटे गए विकलांगों को कृत्रिम अंग प्रदान किए गए रोटरी व्हील्स की दो स्थान पर स्थापना की गई क्लब में 20 नए मेंबर बने क्लब के द्वारा 11 सरकारी स्कूलों को पुस्तकालय के लिए अलमारी और पुस्तके दी जा रही है यह सभी अचीवमेंट आप सभी के सहयोग से प्राप्त हुआ मैं सभी बोर्ड आफ डायरेक्टर्स अध्यक्ष और सदस्यों को उनके योगदान के लिए धन्यवाद देता हूं असिस्टेंट गवर्नर संगीता शर्मा सचिव प्रवीण बरनवाल अपनी धर्मपत्नी रोटेरियन शिल्पी गुप्ता को भी बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं जिन्होंने हर कदम मुझे साथ दिया आज के कार्यक्रम की होस्ट असिस्टेंट गवर्नर संगीता शर्मा ने कहा कि सत्र 24- 25 अमित कुमार की अध्यक्षता में ऐतिहासिक एवं यादगार रहा सेवा क्षेत्र के सभी क्षेत्र में अविस्मरणीय कार्य किए गए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

डोमचांच/कोडरमा : मंजुला शर्मा मेमोरियल एकेडमी, डोमचांच में आज अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भव्य आयोजन किया गया। इस वर्ष के योग दिवस की थीम योग: स्वास्थ्य, शांति और सद्भाव के लिए के तहत आयोजित इस कार्यक्रम ने सभी उपस्थितजनों को योग की महिमा से अभिभूत किया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और प्रेरणादायक उद्बोधन भाषण से हुई। विद्यालय के निदेशक राजनीश शर्मा ने अपने संबोधन में कहा, योग न केवल स्वास्थ्य का आधार है, बल्कि यह हमें जीवन में स्थिरता और शांति प्रदान करता है। मंजुला शर्मा मेमोरियल एकेडमी इस अद्भुत विधा को सभी छात्रों तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। योग विशेषज्ञों ने विभिन्न आसनों और प्राणायाम के महत्व को बताते हुए छात्रों और शिक्षकों को उनका अभ्यास कराया। सामूहिक योगाभ्यास ने कार्यक्रम में नई ऊर्जा का संचार किया। शिक्षाविद् राम प्रवेश पांडेय ने अपने संबोधन में कहा, योग हमारी प्राचीन धरोहर है, जो शरीर, मन और आत्मा को जोड़ती है। अगर आज की पीढ़ी इसे अपनाएगी, तो हमारा भविष्य स्वस्थ और समृद्ध होगा। इसके साथ ही कार्यक्रम में योग पर आधारित प्रश्नोत्तरी, चित्रकला और निबंध लेखन प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। इन गतिविधियों ने छात्रों में योग के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का समापन सामूहिक ध्यान और धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

भारी वर्षा को लेकर हाई अलर्ट, उपायुक्त सहित पदाधिकारियों ने किए जल स्रोतों का निरीक्षण

जल स्रोत से कम-से-कम 200 मीटर की दूरी बनाए रखें : उपायुक्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम केन्द्र, राँची द्वारा राज्य में संभावित भारी वर्षा को देखते हुए हाई अलर्ट जारी किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में उपायुक्त कोडरमा ऋतुराज द्वारा जिले में संभावित आपातकालीन स्थिति से प्रभावी रूप से निपटने हेतु सभी संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए हैं। इसी क्रम में उपायुक्त ऋतुराज द्वारा कोडरमा प्रखंड अंतर्गत वृंदाहा जलप्रपात का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मुख्य पथ से जलप्रपात तक की पहुँच, सीढ़ियों की स्थिति, पर्यटकों के लिए संभावित सुविधाएं तथा क्षेत्र में पर्यटन की संभावनाओं पर संबंधित अधिकारियों से विस्तृत चर्चा की गई। साथ ही जलप्रपात के पास पर्यटकीय विकास की संभावनाओं के संबंध में आवश्यक निर्देश भी दिए गए। इसके अतिरिक्त अनुमंडल पदाधिकारी रिया सिंह ने मेघातरी चैकडैम का निरीक्षण किया। प्रखंड विकास पदाधिकारी सतगावां ने पेट्रो जलप्रपात व सकरी नदी का निरीक्षण किया। प्रखंड विकास पदाधिकारी मरकच्चो द्वारा पंचखेरो जलाशय, प्रखंड विकास पदाधिकारी जयनगर द्वारा बराकर नदी और अंचल अधिकारी चंदवारा द्वारा तिलैया डैम का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान सभी पदाधिकारियों द्वारा आमजन से अपील की गई कि जल स्रोतों के निकट न जाएं एवं कम-से-कम 200 मीटर की दूरी बनाए रखें। जल स्रोतों के आसपास खतरे से संबंधित चेतावनी बोर्ड लगाए गए हैं। साथ ही, संबंधित पर्यटन स्थलों पर स्थिति सामान्य होने तक पर्यटकों का आवागमन प्रतिबंधित करने की बात कही गई है। जिला प्रशासन कोडरमा आमजन से अनुरोध करता है कि मौसम संबंधी किसी भी आपात स्थिति में सावधानी बरतें, अफवाहों से बचें और प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करें।

संक्षिप्त खबरें

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का हुआ आयोजन

कोडरमा : झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार रांची के निर्देश के आलोक में जिला विधिक सेवा प्राधिकार कोडरमा के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कोडरमा व्यवहार न्यायालय के परिसर में आज सुबह योग एवं प्राणायाम का कार्यक्रम किया गया जिसमें कोडरमा न्यायमंडल के सभी न्यायिक पदाधिकारी एवं न्यायालय कर्मी उपस्थित रहे। यह कार्यक्रम कोडरमा के प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार कोडरमा बाल कृष्ण तिवारी के कुशल मार्ग दर्शन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने कहा कि स्वस्थ एवं निरोग रहने के लिए योग बहुत ही आवश्यक है इसलिए हम सबों को प्रतिदिन नियमित रूप से योग एवं प्राणायाम करना चाहिए। योग का प्रशिक्षण आर्ट ऑफ लिविंग के कोडरमा जिला योग प्रशिक्षक शशि कुमार के द्वारा कराया गया। इस दौरान कई तरह के आसन, प्राणायाम आदि के साथ साथ निरोग रहने के सबंध में कई प्रकार के महत्वपूर्ण टिप्स दिए गए। इस अवसर पर आर्ट ऑफ लिविंग के शोर्य राज ने बासुरी वादन की एक शानदार प्रस्तुति कर उपस्थित लोगो को मंत्रमुग्ध कर दिया। मौके पर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार कोडरमा बाल कृष्ण तिवारी, प्रधान न्यायाधीश कुटुम्ब न्यायालय अमितेष लाल, जिला जज प्रथम गुलाम हैदर, जिला जज द्वितीय संजय कुमार चैधरी, मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी अमित कुमार वैश, न्यायिक दंडाधिकारी प्रथम श्रेणी ज्योत्सना पाण्डेय, नमिता मिंज, मुसिफ मिथिलेश कुमार सहित सभी न्यायालयकर्मी उपस्थित थे।

अवैध रूप से मवेशी की तस्करी करने वाले दो अभियुक्त गिरफ्तार

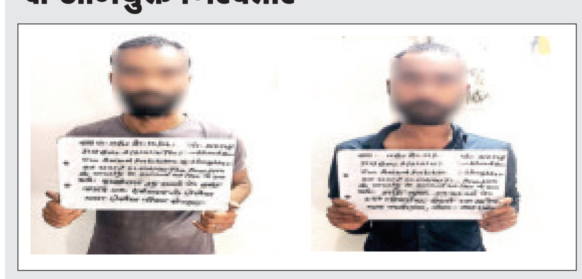

कोडरमा : पुलिस अधीक्षक कोडरमा को गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि कोडरमा थाना क्षेत्रान्तर्गत रॉची-पटना मुख्य मार्ग के रास्ते अवैध पशु तस्करों द्वारा वाहन में पशु लादकर तस्करी की जा रही है। उक्त सूचना के सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई करने हेतु पुलिस अधीक्षक महोदय, कोडरमा द्वारा थाना प्रभारी के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया। गठित टीम के द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए ध्वजाधारी गेट के पास रॉची-पटना मुख्य मार्ग पर वाहन जाँच लगाया गया। वाहन जाँच के क्रम में समय करीब 01.30 बजे एक बोलेरो पिकअप वाहन संख्या- JH18J 3782 एवं टाटा मैजिक टेम्पू संख्या- JH12M 2843 को रोककर जांच किया गया तो बोलेरो पिकअप वाहन संख्या JH18J 3782 में अवैध रूप से 03 मवेशी लदा हुआ पाया गया जिसे टाटा मैजिक टेम्पू संख्या - JH12M 2843 के द्वारा रैकी किया जा रहा था। बिना वैध कागजात के पशुओं की अवैध तस्करी करने के आरोप में दो (02) संलिप्त व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया।

इंदरवा पंचायत के उप स्वास्थ्य केंद्र निर्माण में बरती जा रही अनियमितता

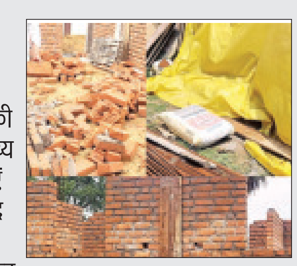

कोडरमा : जिला मुख्यालय से लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर प्रखंड के इंदरवा पंचायत भवन के पास जिला परिषद मद से लाखों की लागत से कराए जा रहे उप स्वास्थ्य केंद्र निर्माण में भारी अनियमितताएं बरती जा रही है। उप स्वास्थ्य केंद्र निर्माण में कई घटिया सामग्री का प्रयोग किया जा रहा है। जिसे लेकर इंदरवा पंचायत के उप मुखिया के साथ स्थानीय लोगों ने विरोध जताया। उप मुखिया रुपेश राणा ने बताया कि उप स्वास्थ केंद्र लगभग तीन महीने पूर्व स्वीकृत हुआ है। कुछ दिनों पूर्व मुखिया, पंचायत सेवक ने देखा था कि सी बोरा सीमेंट खराब होकर ढेला होकर बेकार हो गया है। लेकिन हैरानी की बात यह है कि निर्माण में संवेदक द्वारा घन से फोड़कर कुछ अच्छा और खराब सीमेंट मिलाकर निर्माण करवाया जा रहा है। वहीं दीवाल भी घस्त हो गया इस घटिया निर्माण से कभी भी बड़ी दुर्घटना घट सकती है। उन्होंने आगे कहा कि जिले के वरीय पदाधिकारी को ज्ञापन सौंपकर जांच की मांग करेंगे। इस बाबत जिला परिषद अध्यक्ष रामधन यादव से बातचीत की गई तो उन्होंने कहा कि मीडिया के द्वारा मामला संज्ञान में आया है। संबंधित जेई से उप स्वास्थ्य केंद्र निर्माण की गुणवत्ता की विस्तृत जांच कराई जाएगी। विरोध करने वाले में पूर्व मुखिया इंदरवा प्रभु यादव, वार्ड सदस्य प्रतिनिधि गांगों यादव सहित अन्य लोग शामिल थे।

बोकारो जूडो संघ की वार्षिक बैठक संपन्न

बोकारो : एमजीएम हायर सेकेंडरी स्कूल बोकारो में बोकारो जूडो संघ के द्वारा वार्षिक बैठक संपन्न हुई इस बैठक की अध्यक्षता बोकारो जिला जूडो संघ के सचिव राजीव कुमार सिंह ने किया इस बैठक में आगामी सातवीं बोकारो जिला जूडो प्रतियोगिता के महत्वपूर्ण बिंदुओं पर भी चर्चा के साथ प्रतियोगिता को सुचारू रूप से कैसे संपन्न किया जाए इस विषय पर भी विस्तृत चर्चा की गई बैठक के दौरान राजीव कुमार सिंह ने कहा कि जिला जूडो प्रतियोगिता में इस बार भी 12 सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुने जाएंगे जिन्हें जिला जूडो संघ के द्वारा स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी एवं इन खिलाड़ियों को आगामी राज्य प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए आर्थिक रूप से जिला जूडो संघ मदद करेगी बोकारो जिला जूडो संघ बोकारो में तथा झारखंड में जूडो के प्रचार प्रसार में जूडो खेल को हर एक बच्चे तक पहुंचने में तत्परता से लगा हुआ है तथा इसी का परिणाम है कि इस बार जिला जूडो प्रतियोगिता में लगभग 600 खिलाड़ियों के भाग लेने की संभावना है इस बैठक में मुख्य रूप से उमेश नायडू, नईम अंसारी,सूरज कुमार,आयुष कुमार ठाकुर, संजू कुमार,आयुष कुमार, नितेश कुमार, वासुदेव कुमार एवं दीपक रंजन उपस्थित हुए तथा जिले में जूडो के प्रचार प्रसार में कैसे तेजी लाई जाए इस पर चर्चा की।

एक नजर

आरपीएफ में चलाया चेकिंग अभियान 16 पकड़ाए

सरिया (गिरिडीह) : हजारीबाग रोड रेलवे स्टेशन में रविवार को रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट द्वारा चेकिंग अभियान चलाया गया। जिसका नेतृत्व आरपीएफ उप निरीक्षक लखन देव सिंह ने किया। इस दौरान जनशताब्दी एक्सप्रेस के महिला कोच में सफर करने के आरोप में छः रेल यात्री पकड़े गए। जिन पर रेलवे अधिनियम की धारा 162 कायम की गई। वहीं विकलांग कोच में अनाधिकृत रूप से सफर करने के आरोप में भी छः :व्यक्ति धराए। जिन पर रेलवे अधिनियम की धारा 155 लगाई गई। जबकि नो पार्किंग एरिया में वाहन खड़ा करने के आरोप में चार लोगों को पकड़ा गया। उन व्यक्तियों के ऊपर रेलवे अधिनियम की धारा 159 के तहत मामला पंजीकृत किया गया। उक्त सभी पकड़े गए 16 आरोपियों को आरपीएफ पोस्ट हजारीबाग रोड लाया गया। जहां उक्त लोगों को रेलवे दंडाधिकारी धनबाद के समक्ष ऑनलाइन प्रस्तुत किया गया। उक्त लोगों ने अपनी गलती को स्वीकार किया। इसके पश्चात दंडाधिकारी द्वारा कल पर जुमार्ना राशि निर्धारित की गई। सभी लोगों से जुमार्ना की राशि वसूली करने के पश्चात उक्त लोगों को मुक्त किया गया।

मादक पदार्थों की तस्करी को लेकर पुलिस ने चलाया जागरूक अभियान

साहिबगंज: राजमहल थाना क्षेत्र के अंतर्गत रविवार को मध्य नारायणपुर पंचायत में आम जनों को नशा रोकथाम, निषिद्ध मादक पदार्थों की तस्करी के संबंध में राजमहल थाना प्रभारी गुलाम सरवर के नेतृत्व में जागरूकता अभियान कार्यक्रम चलाया गया। आगामी जन शिकायत समाधान कार्यक्रम के बारे में भी प्रचार प्रसार किया गया। जिसमें सैकड़ो की संख्या में लोग भाग लिए और अस्वस्थ किया कि अपने घर के लोगों को भी जागरूक करेंगे कि नशा का सेवन नहीं करें।

स्वच्छ सर्वेक्षण ग्रामीण को लेकर चंदवारा व कोडरमा प्रखंड में कार्यशाला का आयोजन

कोडरमा : चंदवारा प्रखंड सभागार में स्वच्छ सर्वेक्षण ग्रामीण 2025 के सफल क्रियान्वयन हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता प्रखंड विकास पदाधिकारी द्वारा की गई। कार्यक्रम में जिला समन्वयक सुमन द्वारा प्रतिभागियों को विषय से संबंधित व्यापक प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन प्रदान किया गया। प्रशिक्षण सत्र में ग्रामीण स्वच्छता अभियान की दिशा में किए जाने वाले कार्यों, मूल्यांकन मापदंडों एवं सर्वेक्षण की प्रक्रिया पर विशेष रूप से चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त सहभागिता, डेटा संकलन, जन-जागरूकता तथा समन्वय के विभिन्न पहलुओं पर भी विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यशाला में ढल्एऊके कनीय अभियंता, मनरेगा के इढड, खरछढर के इढट, हेल्थ विभाग के इढट, रइट के इहउ, सभी पंचायत सचिव, सभी मुखिया एवं सभी जलसहिया ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

शिक्षा समाज के सतत विकास की आधारशिला है : राज्यपाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने रविवार को गुमला जिले के बिशुनपुर प्रखंड स्थित ज्ञान निकेतन विद्यालय परिसर में विकास भारती संस्था की ओर से आयोजित पौधारोपण महोत्सव और बाल संवाद कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते राज्यपाल ने कहा कि शिक्षा समाज के सतत विकास की आधारशिला है और समाज के हर वर्ग को इस दिशा में सजगता और गंभीरता से प्रयास करने की आवश्यकता है।

राज्यपाल ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आप सभी भारत का भविष्य हैं। नियमित रूप से पढ़ाई करें, मेहनत और लगन के साथ आगे बढ़ें। यही मार्ग आपको तरक्की की ओर ले जाएगा। राज्यपाल ने पद्मश्री अशोक भगत के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि उनके प्रयास समाज के लिए अत्यंत आवश्यक, अनुकरणीय और प्रेरणादायक हैं। उन्होंने विकास भारती संस्था की ओर शिक्षा, स्वावलंबन और जनजातीय उत्थान के लिए किए जा रहे कार्यों को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बताया। राज्यपाल ने विद्यार्थियों से आत्मीय संवाद करते हुए कहा कि अगली बार जब वे यहां आएंगे, तो बच्चों के साथ भोजन करेंगे। राज्यपाल ने विकास भारती बिशुनपुर की विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन किया।

आजसू पार्टी 40वां स्थापना दिवस बलिदान दिवस के रूप में मनाई

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : रविवार को आजसू पार्टी 40 वा स्थापना दिवस बलिदान दिवस के रूप में मनाया इसको लेकर खिजरी विधानसभा से हजारों कार्यकताओं के साथ आजसू पार्टी केंद्रीय सचिव सह पूर्व प्रत्याशी पारसनाथ उरांव के नेतृत्व में खेलगांव टाना भगत इनडोर स्टेडियम में पहुंचे जिसमें नामकुम प्रखंड से लोग बढ़ चढ़कर भाग लिए इसके लिए सभी कार्यकताओं को बहुत बहुत धन्यवाद और उनका आभार प्रकट करते हुए पारसनाथ उरांव ने कहा आजसू पार्टी आंदोलन की उपज है और झारखंड अलग राज्य की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है इसलिए दर्द भी आजसू पार्टी को है जिस तरह जिस तरह से बालू कोयला चोरी, प्रखंड स्तर पर भ्रष्टाचारी चरम सीमा पर पहुंच चुकी है झारखंड में लुट और झूठ पर ये सरकार को उखाड़ फेंकने का संकल्प बलिदान दिवस पर लिया है इस मौके पर खिजरी विधानसभा से केंदीय सचिव फूलकुमारी देवी, वीणा देवी, जितेन्द्र सिंह, जलनाथ चौधरी, प्रदीप जायसवाल, कुदरत शेख, राजू उरांव, संजय महतो, नंदकिशोर महतो, मुकेश नायक, महावीर महतो, सावित्री देवी, किरण देवी, निर्मला देवी, धर्मेंद्र सिंह, किशुन महतो, माथुर प्रसाद, अर्जुन राम, बसंती देवी, सुनीता देवी,आदि हजारों लोग बलिदान दिवस पर शामिल हुए।

विश्वकर्मा समाज की प्रखंड ईकाई की एक दिवसीय सम्मेलन संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मरकच्चो : झारखंड प्रदेश विश्वकर्मा समाज की प्रखंड ईकाई की एक दिवसीय सम्मेलन सह प्रखंड कार्य समिति का चुनाव कार्यक्रम कार्यकारी अध्यक्ष रामेश्वर प्रसाद राणा की अध्यक्षता में 22 जून को मरकच्चो प्रखंड के पंचायत महुंगाई के ग्राम सोने डीह डेब्बा में किया गया। कार्यक्रम का संचालन भुनेश्वर राणा एवं सुनील राणा ने सयुक्त रूप से की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश अध्यक्ष विकास राणा उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रदेश अध्यक्ष विकास राणा, प्रदेश महासचिव हिरामन मिस्त्री, प्रदेश उपाध्यक्ष भुनेश्वर राणा अधिवक्ता ,जिला कार्यकारी अध्यक्ष सुभाष राणा, महुंगाई पंचायत की पूर्व मुखिया मंजू देवी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। वही प्रदेश से आये अध्यक्ष तथा पदाधिकारी गण का स्वागत गुलदस्ता भेंट कर किया गया।सम्मेलन में विश्वकर्मा समाज के सदस्यों को संगठित करने पर विचार विमर्श किया गया। दहेज नही लेने पर जोर दिया गया। पंचायत स्तरीय स्वजाति संगठन पर में तेजी लाने पर जोर दिया गया। वही सर्वसम्मति से भुनेश्वर राणा को प्रखंड अध्यक्ष, महासचिव सुदामा राणा, कोषाध्यक्ष गंगाधर राणा एवं कार्यकारी अध्यक्ष चमरू राणा को मनोमनित किया गया। वही कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष विकास राणा ने कहा कि सभी राजनीतिक दलों ने विश्वकर्मा समाज को ठगने का काम किया है। आनेवाले विधानसभा चुनाव में विश्वकर्मा समाज की उपेक्षा बर्दास्त नहीं किया जायेगा।

कुकड़ू विधिक जागरूकता सह सशक्तिकरण शिविर का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : रविवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकार सरायकेला खरसावां के तत्वाधान में कुकड़ू प्रखंड सह अंचल कार्यालय सभागार में विधिक जागरूकता सह सशक्तिकरण शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कुकड़ू अंचल अधिकारी सत्येंद्र नारायण पासवान और डीएलएसए के पैनल प्रतिनिधि करमु स्वांसी उपस्थित हुए। कार्यक्रम में कई लाभुकों को केसीसी ऋण, क्रेडिट लिंकेज चेक वितरण, अबुआ आवास निर्माण का स्वीकृति पत्र, फूलो झानों आशीर्वाद योजना का चेक समेत कई योजनाओं का स्वीकृति पत्र भी दिया गया। वहीं पीएचसी तिरुलडीह के प्रभारी चिकत्सा पदाधिकारी डॉ. हरेंद्र सिंह मुंडा के नेतृत्व में स्वास्थ्य शिविर भी लगाया गया था। इस दौरान सीओ सत्येंद्र नारायण पासवान ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए छोटे -छोटे चीजो को लेकर आपस में लड़ने से बचने की अपील किया और लोगों को कानून को अपने हाथ में न लेने का भी अपील किया। इस दौरान बाल तस्करी, बाल विवाह, महिला उत्पीड़न, समेत सरकारी योजनाओं की जानकारी दिया। मौके पर मौके आईसीडीएस की सुपरवाइजर मीनाक्षी पांडेय, बीपीओ रामलगन उरांव, पीएलवीं फागुराम महतो, झामुमो प्रखंड अध्यक्ष कृतिवास महतो, बीस सूत्री सदस्य निरंजन महतो, जेएसएलपीस बीपीएम अमित कुमार दुबे, प्रभारी प्रखंड कृषि पदाधिकारी अश्वनी कुमार महतो, बीटीएम हिमांशु कुमार महतो आदि सैकड़ो लोग मौजूद थे।

एसबीयू के शिक्षकों और छात्रों ने थाईलैंड में मनाया योग दिवस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : सरला बिरला विश्वविद्यालय, रांची के शिक्षकों और छात्रों ने चुलालोंग्कॉर्न विश्वविद्यालय, बैंकॉक, थाईलैंड में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में भाग लिया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व भारत के थाईलैंड में राजदूत महामहिम नागेश सिंह ने किया। बैंकॉक में आयोजित विशेष योग सत्र में विभिन्न योग आसनों और प्राणायाम तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम से भारत और थाईलैंड के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला है। कार्यक्रम में राजदूत महामहिम नागेश सिंह ने शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देने में योग के महत्व पर जोर दिया। इस अवसर पर बैंकॉक के गवर्नर भी मौजूद थे। साथ ही योग सत्र में बड़ी संख्या में देश-विदेश के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। मालूम हो कि सरला बिरला विश्वविद्यालय के शिक्षक व छात्र इन दिनों शैक्षणिक भ्रमण पर बैंकॉक गए हुए है। एसबीयू के माननीय प्रतिकुलाधिपति बिजय कुमार दलान, माननीय महानिदेशक प्रो गोपाल पाठक, माननीय कुलपति प्रो सी जगनाथन एवं माननीय राज्यसभा सांसद डॉ प्रदीप कुमार वर्मा ने थाईलैंड में शैक्षणिक दौरे पर गए विवि के शिक्षकों और विद्यार्थियों को शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

भगवान जगन्नाथ की भव्य रथ यात्रा 27 को, तैयारियां अंतिम चरण में

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पूर्वी सिंहभूम : भगवान श्री श्री जगन्नाथ महाप्रभु की वार्षिक रथ यात्रा इस वर्ष 27 जून (शुक्रवार) को कदमा स्थित इस्कॉन मंदिर से भव्यता, भक्तिभाव और उल्लास के साथ निकाली जाएगी। रथ यात्रा की तैयारियां जोरों पर हैं और आयोजन को अंतिम रूप दिया जा रहा है। इस पावन यात्रा की जानकारी रविवार को इस्कॉन कदमा एवं रथ संचालन समिति, जमशेदपुर की ओर से आयोजित एक प्रेस वार्ता में दी गई। इस रथ यात्रा में भगवान जगन्नाथ अपने भ्राता बलभद्र एवं बहन सुभद्रा के साथ रथ पर सवार होकर अपनी मौसी गुंडिचा माता के मंदिर की ओर प्रस्थान करेंगे। रथ यात्रा शुक्रवार को दोपहर 3:00 बजे इस्कॉन मंदिर कदमा से प्रारंभ होगी और ब्रह्मलोक धाम, कदमा मेन रोड, कदमा बाजार होते हुए रंकिनी मंदिर तक पहुंचेगी। इस पूरे मार्ग में हजारों की संख्या में श्रद्धालु, महिलाएं, बच्चे और वरिष्ठ नागरिक शामिल होंगे। रथ यात्रा के शुभारंभ से पूर्व प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक भगवान की विधिवत पूजा-अर्चना की जाएगी। साथ ही, 11:00 बजे से 2:00 बजे तक श्रद्धालुओं के लिए महाभोग (प्रसाद) का वितरण किया जाएगा। दोपहर 3:00 बजे महाआरती के साथ भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा देवी की रथ यात्रा का शुभारंभ होगा। यात्रा मार्ग के चार से पांच प्रमुख स्थलों पर स्वर्ण दीप (ज्योति) के माध्यम से विशेष महाआरती की जाएगी। इन स्थलों पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, समाजसेवी और गणमान्य नागरिक उपस्थित रहेंगे और भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। रथ यात्रा का समापन कदमा स्थित रंकिनी मंदिर में होगा, जहां भव्य महाआरती और भोग वितरण की व्यवस्था की गई है। प्रेस वार्ता में रथ संचालन समिति के प्रमुख सदस्यों झ तारकेश्वर पंडित (इस्कॉन कदमा), वीणा महतो, संतोष गुप्ता, पी. के. धान, सुधाकर साह, ईश्वर चंद्र जायसवाल, रोहित सिंह, जय कुमार पारीक, सोमियो मैती, उमेश कुमार गुप्ता, रयान कुमार, उदित चौधरी और चंद्रावती माता सहित बड़ी संख्या में प्रभु भक्त उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

सरिया में मेगा विधिक सशक्तिकरण शिविर कार्यक्रम का किया गया आयोजन

सरिया (गिरिडीह): झालसा रांची एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकार गिरिडीह के संयुक्त तत्वाधान में प्रखंड कार्यालय सरिया में मेगा विधिक सशक्तिकरण शिविर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सर्व प्रथम कार्यक्रम में अतिथियों का झारखंड टोपी से सम्मानित किया गया। तत्पश्चात अतिथियों ने सामूहिक रूप से कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि सरिया प्रमुख प्रीति कुमारी, विशिष्ट अतिथि जिला विधिक सेवा प्राधिकार गिरिडीह से अधिवक्ता सूरज नारायण अमित कुमार, प्रखंड विकास पदाधिकारी ललित नारायण तिवारी,सांसद प्रतिनिधि बिनोद यादव, पशु पालन पदाधिकारी अनूप सिन्हा, सरिता कुमारी, पंचायती राज पदाधिकारी संजय वर्णवाल, बिपिओ संजय चौधरी ने संयुक्त रूप से द्वीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में कहा कि समाज के सबसे निचले तबके के लोगों को कानूनी जानकारी दी जा रही है ताकि आम लोग कानून और अधिकार को बढ़िया से समझ सके और लाभान्वित हो सके। साथ ही सरकार के महत्वपूर्ण योजनाओं कि जानकारी दी। कार्यक्रम मे सचिव ने कहा की जो केस लड़ने में असमर्थ है उनके लिए सरकार निशुल्क वकील की ब्यवस्था की गई है तथा सामान्य और सबसे निचले तबके लोगों को न्याय दिलाना ही मुख्य उद्देश्य है। कार्यक्रम को सांसद प्रतिनिधि बिनोद यादव, अनूप सिन्हा, अधिवक्ता सूरज नारायण और अमित कुमार ने भी सम्बोधन किया। कार्यक्रम में करोड़ो का परिसम्पति का वितरण किया गया जिसमें सखी मंडल की दीदी को बैंक लिंकेज की 4500000 तथा प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के लाभुक हेमलाल महतो को दो लाख का लाभ मिला तथा जनमन योजना के तहत दो बिरहोर को आवास की स्वीकृति, दो प्रधानमंत्री आवास तथा एक अबुआ आवास, एक ढटऋटए योजना से निमकी उत्पादक कार्य के लिए 5.2 लाख तथा बकरा विकास योजना से पांच लाभुक, 5 जॉब कार्ड, एक दिब्यांग को टॉय साइकिल तथा कई लाभुकों को लाभान्वित किया गया।

नए ट्रांसफार्मर का विधिवत रूप से किया गया उद्घाटन

सिल्ली: सिल्ली प्रखंड अंतर्गत रविवार के दिन हजाम गांव के ऊपर टोला बुरुडीह पथ पर सिल्ली पूर्वी जिला परिषद प्रतिनिधि अखिल महतो एवं मुखिया गंगा नारायण सिंह मुंडा ने विधिवत रूप से ट्रांसफार्मर का उद्घाटन किया। उद्घाटन होते ही ग्रामीणों में खुशी का लहर दौड़ पड़ा। ग्रामीणों ने सिल्ली विधानसभा के लोकप्रिय विधायक अमित कुमार महतो का आभार जताया एवं धन्यवाद दिया। मौके पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के राकेश मांझी, राहुल कोइरी, निर्भय मांझी, लक्ष्मी नारायण कोइरी, अशरफ खान, दिनेश कुम्हार, सुदामा सिंह मुंडा,प्रहलाद कोइरी, विश्वनाथ कोइरी,बीरेंद्र कोइरी, बद्रीनाथ कोइरी,रेंघू कोइरी,बॉबी देवी,बेहल्या देवी,राधिका देवी, यमुना देवी,उषा देवी समेत अन्य ग्रामीण उपस्थित रहे।

भाजपा युवा नेता इंदु शेखर मिश्रा ने केंद्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी से की मुलाकात

बोकारो : भाजपा के युवा नेता एवं समाजसेवी इंदु शेखर मिश्रा ने आज केंद्रीय मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी से औपचारिक मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने उन्हें अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया और विभिन्न सामाजिक मुद्दों, विशेषकर श्रमिक वर्ग की समस्याओं को लेकर गंभीर चर्चा की। मुलाकात के दौरान इंदु शेखर मिश्रा ने मजदूर वर्ग को हो रही परेशानियों, जैसे श्रमिक कल्याण योजनाओं का लाभ समय पर न मिलना, न्यूनतम मजदूरी की समस्या, आवास एवं चिकित्सा सुविधाओं की कमी जैसी प्रमुख समस्याओं को मंत्री जी के समक्ष रखा। उन्होंने मंत्री से आग्रह किया कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे योजनाओं को और प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, ताकि जरूरतमंद श्रमिकों तक इनका लाभ पहुँच सके। भविष्य में मजदूरों को बेहतर सुविधा एवं अधिकार दिलाने के लिए उन्होंने केंद्रीय मंत्री को एक विस्तृत ज्ञापन भी सौंपा। मंत्री जी ने उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुना और आश्वस्त किया कि श्रमिकों के कल्याण हेतु हर संभव कदम उठाए जाएंगे। इंदु शेखर मिश्रा की इस पहल को स्थानीय एवं सामाजिक संगठनों द्वारा सराहना मिल रही है, जो इसे समाज के कमजोर वर्ग की आवाज बुलंद करने की दिशा में एक अहम कदम मानते हैं।

सयुर्पारिन ब्राह्मण समाज युवा प्रकोष्ठ केंद्र द्वारा प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह आयोजित

जयनगर: सयुर्पारिन ब्राह्मण समाज युवा प्रकोष्ठ, जयनगर केंद्र के तत्वावधान में रविवार को एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें वार्षिक माध्यमिक एवं इंटरमीडिएट परीक्षा 2025 में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रवक्ता संतोष कुमार पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करना था। समारोह में सफल छात्रों को प्रशस्ति-पत्र एवं प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद समाजसेवी एवं शिक्षाविदों ने बच्चों को कठिन परिश्रम और अनुशासन को सफलता की कुंजी बताते हुए उन्हें आगे भी सतत प्रयास करते रहने की प्रेरणा दी। वक्ताओं ने कहा कि शिक्षा ही समाज को सशक्त बना सकती है, और ऐसे आयोजनों से बच्चों को और अधिक बेहतर करने की ऊर्जा मिलती है। ब्राह्मण समाज के बच्चे भी ऊंचे मकाम को हासिल करे इसका संकल्प लिया गया। मौके पर राष्ट्रीय टीम अध्यक्ष धीरज शर्मा, महासचिव सूरजदेव पाण्डेय, संरक्षक रामजी पांडेय, महेश पांडेय, अनिल पाण्डेय, धमार्चार्य विजय कुमार पाण्डेय सहित दर्जनों लोग मौजूद थे।

नया मानव : नये विश्व के प्रणेता थे आचार्य महाप्रज्ञ

प्राचीन समय से लेकर आधुनिक समय तक अनेकों साधकों, आचार्यों, मनीषियों, दार्शनिकों, ऋषियों ने अपने मूल्यवान अवदानों से भारत की आध्यात्मिक परम्परा को समृद्ध किया है, उनमें प्रमुख नाम रहा है -आचार्य महाप्रज्ञ। अपने समय के महान दार्शनिक, धर्मगुरु, संत एवं मनीषी के रूप में जिनका नाम अत्यंत आदर एवं गौरव के साथ लिया जाता है। वे ईश्वर के सच्चे दूत थे, जिन्होंने जीवनमूल्यों से प्रतिबद्ध एक आदर्श समाज रचना का साकार किया है, वे ऐसे क्रांतद्रष्टा धर्मगुरु थे, जिन्होंने देश की नैतिक आत्मा को जागृत करने का भगीरथ प्रयत्न किया। वे एक अनूठे एवं गहन साधक थे, जिन्होंने जन-जन को स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार की क्षमता प्रदत्त की। वे ऊर्जा का एक पूंज थे, प्रतिभा एवं पुरुषार्थ का पर्याय थे। इन सब विशेषताओं और विलक्षणताओं के बावजूद उनमें तनिक भी अहंकार नहीं था। आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म हिन्दू तिथि के अनुसार विक्रम संवत 1977, आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी को राजस्थान के झुंझनू जिले के एक छोटे-से गांव टमकोर गाँव में हुआ था, जो इस वर्ष 23 जून, 2025 को हैं। आचार्य महाप्रज्ञ बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ के ऐसे पावन एवं विलक्षण अस्तित्व थे जिन्होंने युग के कैनवास पर नए सपने उतारे, जिन्होंने धर्मक्रांति के साथ व्यक्ति एवं समाजक्रांति का शंखनाद किया। वे व्यक्ति नहीं, संपूर्ण संस्कृति थे। दर्शन थे, इतिहास थे, विज्ञान थे। आपका व्यक्तित्व अनगिन विलक्षणताओं का दस्तावेज रहा है। तपस्विता, यशस्विता और मनस्विता आपके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व में घुले-मिले तत्त्व थे, जिन्हें कभी अलग नहीं देखा जा सकता। आपकी विचार दृष्टि से सृष्टि का कोई भी कोना, कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा। विस्तृत ललाट, करुणामय नेत्र तथा ओजस्वी वाणी-ये थे आपकी प्रथम दर्शन में होने वाली बाह्य पहचान। आपका पवित्र जीवन, पारदर्शी व्यक्तित्व और उम्दा चरित्र हर किसी को अभिभूत कर देता था, अपनत्व के घेरे में बाँध लेता था। आपकी आंतरिक पहचान थी-अंतःकरण में उमड़ता हुआ करुणा का सागर, सौम्यता और पवित्रता से भरा आपका कोमल हृदय। इन चुंबकीय विशेषताओं के कारण आपके संपर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आपकी अलौकिकता से अभिभूत हो जाता था और वह बोल उठता था-कितना अद्भुत! कितना विलक्षण!! कितना विरल!!! आपकी मेधा के हिमालय से प्रज्ञा के तथा हृदय के मंदरांचल से अनहद प्रेम और नम्रता के असंख्य झरने निरंतर बहते रहते थे। इसका मूल उद्गम केंद्र था-लक्ष्य के प्रति तथा अपने परम गुरु आचार्य तुलसी के प्रति समर्पण भाव। आचार्य महाप्रज्ञ को हम बीसवीं एवं इक्कीसवीं सदी के एक ऐसी आलोकधर्मी परंपरा का विस्तार कह सकते हैं, जिस परंपरा को महावीर, बुद्ध, गांधी और आचार्य तुलसी ने आलोकित किया है। अतीत की यह आलोकधर्मी परंपरा धुंधली होने लगी, इस धुंधली होती परंपरा को आचार्य महाप्रज्ञ ने एक नई दृष्टि प्रदान की थी। इस नई दृष्टि ने एक नए मनुष्य का, एक नए जगत का, एक नए युग का सूत्रपात किया था। इस सूत्रपात का आधार आचार्य महाप्रज्ञ ने जहाँ अतीत की यादों को बनाया, वहीं उनका वर्तमान का पुरुषार्थ और भविष्य के सपने भी इसमें योगभूत बने। प्रेक्षाध्यान की कला और एक नए मनुष्य-आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व के जीवन-दर्शन को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए वे प्रयत्नशील थे। उनके इन प्रयत्नों में न केवल भारत देश के लोग बल्कि पश्चिमी राष्ट्रों के लोग भी जीवन के गहरे रहस्यों को जानने और समझने के लिए उनके इर्द-गिर्द देखे गये थे। आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें बताया कि ध्यान ही जीवन में सार्थकता के फूलों को खिलाने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ जितने दार्शनिक थे, उतने ही बड़े एवं सिद्ध योगी भी थे। वे दर्शन की भूमिका पर खड़े होकर अपने समाज और देश की ही नहीं, विश्व की समस्याओं को देखते थे। जो समस्या को सही कोण से देखता है, वही उसका समाधान खोज पाता है। आचार्यश्री जब योग की भूमिका पर आरूढ़ होते थे, तो किसी भी समस्या को असमाहित नहीं छोड़ते। उन्होंने हिंसा, आतंक एवं युद्ध की समस्या के समाधान के लिये राजनीति, समाज और धर्म के लोगों मिल-जुलकर प्रयत्न करने का आह्वान किया।

सूडोकु नवताल- 7469

★★★★☆ मध्यम

4	6		3		8	9		7
	1		9		6		5	4
						8		
	4		5				8	
2		5		4		6		1
	3				1		7	
		3						
5	9		7		2		6	
7		6	4		3		9	2

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -7468 का हल

5	7	2	3	8	4	1	9	6
8	6	1	9	2	5	7	3	4
3	9	4	1	6	7	5	8	2
2	5	7	4	1	3	8	6	9
4	8	6	5	9	2	3	7	1
1	3	9	6	7	8	4	2	5
6	2	3	7	4	1	9	5	8
9	4	5	8	3	6	2	1	7
7	1	8	2	5	9	6	4	3

कर्नाटक सरकार का फेक न्यूज कानून या विचारों का गला घोंटने की साज़िश

डॉ. विश्वास चौहान

कर्नाटक सरकार द्वारा प्रस्तावित 'सोशल मीडिया विनियामक प्राधिकरण विधेयक 2025' जिसमें सोशल मीडिया पर फेक न्यूज फैलाने पर सात साल की सजा और दस लाख रुपये तक जुमार्ने का प्रावधान है, भारतीय लोकतंत्र के लिए चिंताजनक संकेत है। यह कानून सतही तौर पर गलत सूचना के विरुद्ध कार्रवाई का प्रयास लगता है लेकिन इसके गहरे राजनीतिक और वैचारिक निहितार्थ हैं। यह कदम भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ऐतिहासिक प्रवृत्तियों की पुनरावृत्ति के समान है, जिसमें असहमति और आलोचना को कुचलने की नीति रही है।

आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा सोशल मीडिया उपभोक्ता देश है। 2025 तक भारत में लगभग 85 करोड़ इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं, जिनमें से 70 करोड़ लोग सोशल मीडिया का नियमित उपयोग करते हैं। व्हाट्सएप के 53 करोड़, यूट्यूब के 45 करोड़, फेसबुक के 35 करोड़, इंस्टाग्राम के 33 करोड़ और ट्विटर (एक्स) के 2.5 करोड़ से अधिक मासिक सक्रिय उपयोगकर्ता हैं। सोशल मीडिया अब केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि समाचार, सूचना, अभिव्यक्ति, रोजगार और जनआंदोलनों का प्रभावी मंच बन चुका है।

इसी डिजिटल शक्ति को नियंत्रित करने की राजनीतिक इच्छा ने इस प्रकार के कठोर विधेयक को जन्म दिया है। इस प्रस्ताव के अनुसार एक छह सदस्यीय प्राधिकरण 'गलत सूचना' की पहचान करेगा और जरूरत समझे तो सामग्री को हटाने, प्रकाशन को रोकने या आर्थिक दंड लगाने का अधिकार रखेगा। इस प्रक्रिया में सरकार समर्थित निकाय को यह निर्णय लेने की खुली छूट मिल जाती है कि कौन-सी जानकारी सत्य है और कौन-सी असत्य- जो लोकतांत्रिक विचार प्रक्रिया के विपरीत है।

इतिहास गवाह है कि कांग्रेस पार्टी जब-जब सत्ता में रही है, उसने असहमति की आवाजों को कुचलने के प्रयास किए हैं। वर्ष 1975 में लगाया गया आपातकाल भारतीय लोकतंत्र का सबसे काला अध्याय था। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को निलंबित कर, प्रेस पर सेंसरशिप लागू की और हजारों विपक्षी नेताओं को बिना सुनवाई जेलों में डाल दिया। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन, अखबारों की प्रतियों को प्रिंट से पहले अनुमोदन के लिए भेजना अनिवार्य कर दिया गया था।

यही नहीं, कांग्रेस की यूपीए सरकार के दौरान भी इंटरनेट सेंसरशिप की कोशिशें की गईं। आईटी एक्ट की धारा 66अ का दुरुपयोग कर सोशल मीडिया पोस्ट के आधार पर छात्रों और आम नागरिकों को गिरफ्तार किया गया। सुप्रीम कोर्ट ने 2015 में 'श्रेया सिंगल बनाम भारत सरकार' के ऐतिहासिक निर्णय में इस धारा को असंवैधानिक घोषित किया। फिर भी कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकारें नए रूपों में सेंसरशिप को पुनः लागू करने का प्रयास करती रही हैं।

वर्तमान प्रस्तावित कानून में जो सबसे खतरनाक बात है वह यह कि किसी भी सोशल मीडिया पोस्ट को इस आधार पर 'फेक न्यूज' करार दिया जा सकता है कि वह किसी समुदाय, जाति, धर्म, महिला या राज्य की छवि को नुकसान पहुँचा रहा है। यह परिभाषा इतनी व्यापक और अस्पष्ट है कि इसका उपयोग किसी भी आलोचक, पत्रकार, राजनीतिक विरोधी या आम नागरिक के विरुद्ध किया जा सकता है।

कर्नाटक सरकार पर कुछ आरोप लगे हैं जैसे साम्प्रदायिक तत्वों को सरकारी ठेकों में 4% आरक्षण दिया है, वक्फ बोर्ड की शक्तियों और बजट में वृद्धि की है, सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के विरुद्ध हिजाब को समर्थन दिया है, सरकारी पैसे से मदरसों में साम्प्रदायिक शिक्षा को सुचारू किया है, शांति सम्मेलनों के नाम पर केवल मुस्लिम वर्ग को वरीयता दी है।

विगत दिनों कई जिलों में हनुमान जयंती और रामनवमी के जुलूस पर प्रतिबंध या धारा 144 तथा पुलिस द्वारा कड़ी शर्तें लगाई गईं, जिसे पक्षपातपूर्ण बताया गया। श्रीराम सेना, बजरंग दल आदि संगठनों के खिलाफ एफआईआर और प्रतिबंधात्मक कार्रवाई बढ़ी है। बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाने की बात कांग्रेस के चुनाव घोषणा पत्र में भी की गई थी। हिंदू मंदिरों की आय का सरकारी नियंत्रण करते हुए मंदिरों की आय का प्रयोग अन्य सेकुलर उद्देश्यों हेतु करना, जबकि अन्य धर्मस्थलों की आय उनके समुदाय के पास ही रहती है। मंदिर प्रबंधन बोर्डों में गैर-सनातन व्यक्तियों की भागीदारी करना। कक्षा 10 की पाठ्यपुस्तकों से वीर सावरकर, हिंदू महापुरुषों से जुड़ी जानकारी कम करना या हटाना, जबकि मुस्लिम शासकों पर अध्याय जोड़ना गोतस्करी और गोहत्या पर सख्ती के बजाय ऐसे मामलों में सरकार द्वारा समर्थन करना। उक्त कार्यों से यह युक्तियुक्त आशंका हो गयी है कि इस कानून का दुरुपयोग हिन्दू समाज के विरुद्ध ही बड़े पैमाने पर किया जा सकता है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो और विधि मंत्रालय के आँकड़े बताते हैं कि आईटी एक्ट के अंतर्गत दर्ज मामलों में दोषसिद्धि दर अत्यंत कम झ मात्र 3 से 5 प्रतिशत के बीच है। उदाहरणस्वरूप, वर्ष 2022 में फेक न्यूज, साइबर मानहानि, अफवाह फैलाने आदि के तहत लगभग 8500 मामले दर्ज किए गए, लेकिन केवल 410 मामलों में ही दोष सिद्ध हो सका। ऐसे में इतने कम दोषसिद्धि दर वाले अपराधों के लिए कठोर दंड और उच्च आर्थिक जुमार्ना न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता।

प्रस्तावित कानून में विशेष न्यायालयों की स्थापना और प्राधिकरण को अर्ध-न्यायिक अधिकार देने की बात कही गई है। ये व्यवस्थाएँ निष्पक्ष न्याय की अवधारणा को कमजोर करती हैं। जब जांच, प्रमाण और निर्णय- तीनों प्रक्रिया एक ही प्राधिकरण के अधीन हो जाए, तो वह तंत्र सत्ता का औजार बन सकता है। यह भी महत्वपूर्ण है कि इस कानून का सबसे अधिक असर उन्हीं वर्गों पर पड़ेगा जो पहले से हाशिये पर हैं- स्वतंत्र पत्रकार, प्रगतिशील विचारक, विपक्षी कार्यकर्ता और सामान्य नागरिक जो सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों पर सवाल उठाते हैं। ऐसी स्थिति में यह कानून अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का नहीं, अभिव्यक्ति पर नियंत्रण का औजार बन जाता है। भारत का संविधान अपने अनुच्छेद 19(1) में प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मूल अधिकार देता है। हालांकि इस अधिकार पर कुछ 'युक्तियुक्त प्रतिबंध' संभव हैं, किंतु वे केवल संकुचित, स्पष्ट और न्यूनतम होने चाहिए। कर्नाटक सरकार का यह प्रस्ताव इन सभी शर्तों का उल्लंघन करता है।

निष्कर्षतः, कांग्रेस सरकार द्वारा प्रस्तुत यह कानून सूचना की रक्षा का नहीं, सूचना के नियंत्रण का उपाय है। यह एक ऐसी राजनीतिक मानसिकता का परिचायक है जो आलोचना से डरती है, असहमति को अपराध मानती है और संवाद को अपराधीकरण की ओर ले जाती है। यह न केवल लोकतंत्र की आत्मा के विरुद्ध है, बल्कि भारत की न्यायिक परंपरा, संवैधानिक मूल्यों और आधुनिक सूचना समाज की आवश्यकता के भी प्रतिकूल है। गलत सूचना का उत्तर सच्ची सूचना है, दंड नहीं। समाज को मीडिया साक्षरता और डिजिटल नैतिकता के माध्यम से सशक्त किया जाना चाहिए, न कि भय और सेंसरशिप के माध्यम से नियंत्रित। यदि यह कानून पारित होता है, तो यह एक नए डिजिटल आपातकाल की शुरूआत मानी जाएगी - जो लोकतंत्र के लिए अत्यंत घातक होगा।

(लेखक, कानून के प्रोफेसर हैं।)

उमर अब्दुल्ला की पाकिस्तान परस्ती!

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने केंद्र सरकार की उस योजना को सिरे से खारिज कर दिया है, जिसमें सिंधु प्रणाली की पश्चिमी नदियों के अतिरिक्त जल को जम्मू-कश्मीर से पंजाब, हरियाणा और राजस्थान भेजने के लिए नहर बनाने की बात की गई थी। वर्तमान संदर्भों में उमर का कहना है कि यह पानी अभी सिर्फ जम्मू-कश्मीर के लिए है, क्योंकि जब हमें जरूरत थी तब किसी ने हमारी मदद नहीं की थी। पठानकोट स्थित शाहपुर कंडी बैराज के लंबे विवाद का हवाला देते हुए उमर ने पंजाब को याद दिलाया कि 45 वर्षों तक इस मुद्दे पर जम्मू-कश्मीर को नुकसान उठाना पड़ा। कई सालों तक उन्होंने हमें रुलाया, अब जब हमारे पास थोड़ा अतिरिक्त पानी है, तो हम क्यों दें? इस वक्तव्य के साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि 113 किमी लंबी प्रस्तावित नहर को फिलहाल उनकी सरकार मंजूरी नहीं देगी।

कहना होगा कि इस एक निर्णय से साफ दिखाई दे रहा है कि अप्रत्यक्ष रूप से जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला को भारत के लोगों की नहीं, जम्मू कश्मीर का बहाना लेकर पाकिस्तान की फिक्र ज्यादा है। वस्तुतः यहां पाकिस्तान को लेकर उनकी चिंताएं इतनी अधिक समझ आ रही हैं कि वे जम्मू कश्मीर की नदियों में बहते पानी का उपयोग देश के अन्य राज्यों में होने नहीं देना चाहते, जबकि केंद्र की मोदी सरकार यह साफ कर चुकी है कि पाकिस्तान के साथ सिंधु जल संधि के प्रभावी निलंबन के बाद वह इस अतिरिक्त जल का उपयोग उत्तर भारत के राज्यों में करना चाहती है। दूसरी ओर उमर अब्दुल्ला की नीयत जो स्पष्ट कर रही है, वह यही है कि जब अन्य राज्यों को पानी देने के लिए प्रस्तावित नहर बनेगी ही नहीं, तब आखिर भारत जल के तेज बहाव को अपने यहां कब तक रोककर रख पाएगा, ऐसी परिस्थितियों में आखिरकार उसे पानी को बहाना ही होगा और ऐसे में उसके पास सिर्फ एक ही विकल्प रहेगा कि उस जल को वह पाकिस्तान की तरफ बहा दे। स्वभाविक है कि जिस उद्देश्य से भारत सरकार ने ऑपरेशन सिंदूर चलाया और सिंधु जल संधि को रोका वह विफल हो जाएगा। पाकिस्तान में भारत के विरोध में एक ओर आतंकवादी पनपते रहेंगे तो दूसरी ओर उन्हें जैसे पहले पानी मिलता था वैसे भी आगे भारत की ओर से पानी मिलता रहेगा।

अब यहां केंद्र सरकार की इस संदर्भ में बनाई गई योजना को समझने की बात है। सिंधु नदी के पानी का पूरा इस्तेमाल करने के लिए भारत ने अपनी अंतर-बेसिन जल हस्तांतरण योजना की दिशा में बड़ा काम करना शुरू कर दिया है। 113 किलोमीटर लंबी नहर बनाने की तैयारी चल रही है। जिसमें कि जम्मू-कश्मीर की नदियों को आपस में जोड़ने का काम होगा और इस राज्य के साथ ही पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में पानी ले जाने के लिए यह नहर चिनाब नदी को रावी-ब्यास-सतलुज नदी प्रणाली से जोड़ेगी। इससे पूर्वी (रावी, ब्यास, सतलुज) और पश्चिमी (सिंधु, झेलम, चिनाब) नदियों के पानी का सही उपयोग हो सकेगा और पाकिस्तान में बहने वाले अतिरिक्त पानी को रोका जा सकेगा। जैसा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं सिंधु जल समझौते को लेकर अपने वक्तव्य पिछले दिनों देते दिखे, उसमें उन्होंने साफ कहा है कि आखिर भारत के पानी का उपयोग भारत ही नहीं कर पा रहा, यह अब आगे नहीं चलने वाला। पाकिस?तान के साथ खून और पानी एक साथ नहीं बहाया जा सकता है। स्वभाविक है कि प्रधानमंत्री ने जो मंशा व्यक्त की उसी अनुरूप केंद्र के अधिकारियों ने योजना बनाना शुरू किया और अब उस पर कार्य किया जाना है। प्रधानमंत्री मोदी की तरह केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी इस बड़ी योजना पर बोला है और बताया भी कि सिंधु का पानी तीन साल के भीतर नहरों के माध्यम से राजस्थान के श्रीगंगानगर तक पहुंचाया जाएगा। प्रस्तावित नहर नेटवर्क जम्मू और कश्मीर, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में 13 मौजूदा नहरों से जुड़ेगा और आखिरकार यह इंदिरा गांधी नहर प्रणाली में मिल जाएगा। देखा जाए तो कितनी अच्छी और सफल योजना है यह। इस नहर योजना को लेकर आज कई पर्यावरणविज्ञ एवं जल विशेषज्ञ भी अपनी राय रख रहे हैं और सभी ने यह समान रूप से स्वीकार्य किया है कि कश्मीर से पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में अतिरिक्त पानी भेजने से इलाके में जल की उपलब्धता को संतुलित करने में मदद मिलेगी। इसके साथ ही आंतरिक स्तर पर पानी के वितरण में इस बदलाव से जलवायु परिवर्तन और बदलते वर्षा पैटर्न का सामना करना भारत के लिए ज्यादा आसान हो जाएगा। जिस क्षेत्र में अभी सूखा है वहां तो इस प्रोजेक्ट से हरियाली आएगी ही, साथ में रोजगार के कई नए अवसर इस पूरे क्षेत्र में जहां से ये नहर गुजरेगी, वहां पैदा हो जाएंगे। भारत के इस पूरे क्षेत्र में पर्यटन उद्योग भी बढ़ेगा। यानी मोदी सरकार के एक कदम उठाने से एक साथ अनेक प्रकार के लाभ होना स्वभाविक है। इसके चलते इस पूरे परिक्षेत्र में अनेक नई योजनाएं जहां आएंगी, वहीं रुकी हुई योजनाओं पर फिर से काम संभव हो सकेगा।

फिलहाल गौर करने वाली बात है कि भारत अपनी सिंधु प्रणाली के पानी का बेहतर उपयोग करने के लिए कई पनबिजली परियोजनाओं, जैसे- पाकल दुल (1,000 मेगावाट), रतले (850 मेगावाट), किरू (624 मेगावाट), और क्वार (540 मेगावाट) पर भी तेजी से काम कर रहा है। कठुआ जिले में वर्षों से लंबित उझ बहुउद्देशीय परियोजना को भी पुनर्जीवित किया जा रहा है। उझ के नीचे दूसरा रावी-ब्यास लिंक, जिसकी योजना पहले रावी के अतिरिक्त पानी को पाकिस्तान में जाने से रोकने के लिए बनाई गई थी, अब बड़ी नहर पहल का हिस्सा होगा। इसमें व्यास बेसिन में पानी स्थानांतरित करने के लिए एक बैराज और सुरंग शामिल होगी। उझ रावी की एक सहायक नदी है।प्रस्तावित नहर को यमुना से जोड़ने का भी प्लान है। इससे नहर की लंबाई 200 किलोमीटर तक बढ़ सकती है। इसके बाद, यमुना के जरिए जल को गंगासागर तक पहुंचाया जा सकता है।

सभी को यह याद रखना चाहिए कि जब 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमला हुआ था। इसके बाद ही भारत ने राष्ट्रीय सुरक्षा का हवाला देते हुए कहा कि जब तक पाकिस्तान सीमा पार आतंकवाद को विश्वसनीय रूप से समाप्त नहीं करता, तब तक सिंधु जल संधि को निलंबित रखा जाएगा। अब जब इस सिंधू जल के जरिए भारत सरकार इसके उपयोग की विस्तारित योजना बना रही है तो इसमें आज सबसे बड़ा रोड़ा कोई यदि बनता दिख रहा है तो वह जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला स्वयं हैं। जबकि ये तो वे स्वयं ही जानते हैं कि इस योजना का लक्ष्य जल का बेहतर इस्तेमाल करना है। यह देश के हित में है। कम से कम उमर अब्दुल्ला को भारत हित में आज रोड़ा नहीं बनना चाहिए और यदि वे ऐसा करते हैं, तो फिर यही माना जाएगा कि उनका आधुनिक परिवर्तन सिर्फ एक दिखावा है, उनका दिल अभी भी पाकिस्तान के लिए ही धड़क रहा है!

आधुनिक ओलम्पिक खेलों के 129 वर्ष

योगेश कुमार गोयल

भारत आधुनिक ओलम्पिक खेलों में 105 वर्ष का सफर पूरा कर रहा है। भारत ने पहली बार वर्ष 1900 में ओलम्पिक में हिस्सा लिया था। तब भारत की ओर से केवल एक एथलीट नॉर्मन प्रिचर्ड को भेजा गया था, जिसने एथलेटिक्स में दो रजत पदक जीते थे। हालांकि भारत ने अधिकारिक तौर पर पहली बार 1920 में ओलम्पिक खेलों में हिस्सा लिया था। 2024 में पेरिस ओलम्पिक में भारतीय खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 6 पदक भारत की झोली में डाले थे जबकि उससे पहले 2021 में टोक्यो ओलम्पिक में भारत 7 पदक जीतने में सफल हुआ था।

ओलम्पिक खेलों की शुरूआत करीब 2798 वर्ष पूर्व ग्रीस में जीयस के पुत्र हेराकल्स द्वारा की गई मानी जाती है किन्तु ऐसी धारणा है कि यह खेल उससे भी काफी पहले से ही खेले जाते रहे थे। 776 ईसा पूर्व विधिवत रूप से शुरू हुए ओलम्पिक खेलों का सिलसिला उसके बाद निर्बाध रूप से 393 ई. तक अर्थात 1169 वर्षों तक चलता रहा। इन खेलों के माध्यम से ऐसा प्रदर्शन किया जाता था, जो मानव की शक्ति, गति एवं ऊर्जा का परिचायक माना जाता था। प्राचीन ओलम्पिक खेलों का आयोजन ईश्वर को श्रद्धांजलि देने के लिए किया जाता था।

अंतरराष्ट्रीय ओलम्पिक दिवस मनाए जाने की शुरूआत 23 जून 1948 को हुई थी। दरअसल आधुनिक ओलम्पिक खेलों का पहला आयोजन तो वर्ष 1896 में हुआ था लेकिन अंतरराष्ट्रीय ओलम्पिक समिति (आईओसी) की स्थापना पियरे द कुबर्तिन द्वारा 23 जून 1894 को की गई थी, जिसके प्रथम अध्यक्ष बने थे यूनानी व्यापारी डेमट्रियोस विकेलास। आईओसी का मुख्यालय स्विट्जरलैण्ड के लॉजेन में स्थित है और वर्तमान में दुनियाभर में 205 राष्ट्रीय ओलम्पिक समितियां इसकी सदस्य हैं। आईओसी के स्थापना दिवस 23 जून को ही बाद में अंतरराष्ट्रीय ओलम्पिक समिति द्वारा प्रतिवर्ष ओलम्पिक दिवस के रूप में मनाया जाना शुरू किया गया।

आईओसी द्वारा प्रत्येक चार वर्ष के अंतराल पर ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक खेल, शीतकालीन ओलम्पिक खेल और युवा ओलम्पिक खेल का आयोजन किया जाता है। पहला ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक वर्ष 1896 में यूनान के एथेंस में तथा पहला शीतकालीन ओलम्पिक 1924 में फ्रांस के चेमोनिक्स में आयोजित किया गया था। ओलम्पिक दुनिया की सबसे बड़ी खेल प्रतियोगिता है, जिसमें दो सौ से ज्यादा देश हिस्सा लेते हैं।

फ्रांस के युवा शिक्षाशास्त्री पियरे द कुबर्तिन ने आधुनिक ओलम्पिक खेलों की आधारशिला रखी थी और उनके द्वारा 23 जून 1894 को अंतरराष्ट्रीय ओलम्पिक समिति की स्थापना किए जाने के बाद नए रूप में 1896 से आधुनिक ओलम्पिक खेलों का आयोजन शुरू हुआ। उसके बाद ओलम्पिक खेल प्राचीन ओलम्पिक खेलों की ही भांति हर चार वर्ष के अंतराल पर आयोजित किए जाने लगे।

एक जनवरी 1863 को जन्मे पियरे द कुबर्तिन की उम्र उस वक्त सिर्फ सात साल थी, जब 1870 में फ्रैंच-परसियन लड़ाई में जर्मनी ने फ्रांस पर कब्जा कर लिया था। माना जाता है कि उस हार के कुछ वर्षों बाद कुबर्तिन इसका विश्लेषण करने पर इस नतीजे पर पहुंचे कि फ्रांस की हार का कारण उसकी सैन्य कमजोरियां नहीं बल्कि फ्रांसीसी सैनिकों में ताकत की कमी थी। जर्मन, ब्रिटिश और अमेरिकन बच्चों की शिक्षा का अध्ययन करने के बाद कुबर्तिन ने पाया कि उन्हें ताकतवर और हर क्षेत्र में अग्रणी बनाने में खेलों में उनकी भागीदारी की सबसे प्रमुख भूमिका थी जबकि फ्रांसीसी खेलों में भागीदारी के मामले में काफी पिछड़े थे। उसके बाद कुबर्तिन ने कोशिशें की कि फ्रांसीसियों को किसी भी तरह खेलों के प्रति आकर्षित किया जाए लेकिन उन्हें इन प्रयासों में उत्साहजनक सफलता नहीं मिली किन्तु कुबर्तिन अपने इरादों पर दृढ़ थे।

1890 में कुबर्तिन ने 'यूनियन डेस सोसायटीज फ्रांसीसीज द स्पोर्ट्स एथलेटिक्स' नामक एक खेल संगठन की नींव रखी और उसके दो वर्ष बाद कुबर्तिन के दिमाग में ओलम्पिक खेलों को पुनर्जीवन देने का विचार आया। खेल संगठन की 25 नवम्बर 1892 को पेरिस में हुई एक मीटिंग में उन्होंने इस संबंध में अपने विचार भी रखे किन्तु उनके उस भाषण से कुछ हासिल नहीं हुआ। उसके दो वर्ष बाद कुबर्तिन ने 9 देशों के कुल 79 डेलीगेट्स की एक मीटिंग आयोजित की। इस मीटिंग में कुबर्तिन ने पूरे उत्साह से ओलम्पिक खेलों की नए सिरे से पुनः शुरूआत करने संबंधी भाषण दिया और इस बार वह लोगों को अपने विचारों से प्रभावित करने में सफल हुए। कांफ्रैंस में सभी डेलीगेट्स ने एकमत से ओलम्पिक खेल कराए जाने के पक्ष में वोट दिया और तय किया गया कि कुबर्तिन इन खेलों के आयोजन के लिए एक अंतरराष्ट्रीय समिति का गठन करें। उसके बाद 'अंतरराष्ट्रीय ओलम्पिक समिति' का गठन हुआ, जिसके प्रथम अध्यक्ष के रूप में ग्रीस के डेमट्रियोस विकेलास का चयन हुआ।

प्रथम ओलम्पिक खेलों के आयोजन के लिए एथेंस को चुना गया और इसकी तैयारियां शुरू हुई। 5 अप्रैल 1896 को प्रथम आधुनिक ओलम्पिक खेलों की शुरूआत हुई। प्रथम आधुनिक ओलम्पिक खेलों का उद्घाटन 5 अप्रैल 1896 को एथेंस (यूनान) में किंग जॉर्ज पंचम द्वारा किया गया। अमेरिका के जेम्स बी. कोनोली को पहले आधुनिक ओलम्पिक खेल में प्रथम ओलम्पिक चैम्पियन बनने का गौरव हासिल है।

दैनिक पंचांग

23 जून 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

सोमवार 2025 वर्ष का 174 वा दिन
दिशाशूल पूर्व **ऋतु** वर्षा।
विक्रम संवत् 2082 **शक संवत्** 1947
मास आषाढ़ (दक्षिण भारत में ज्येष्ठ)
पक्ष कृष्ण
तिथि त्रयोदशी 22.10 बजे को समाप्त।
नक्षत्र कृत्तिका 15.17 बजे को समाप्त।
योग धृति 13.17 बजे को समाप्त।
करण गर 11.47 बजे तदनन्तर वणिज 22.10 बजे को समाप्त।
चन्द्रायु 24.9 घण्टे
रवि क्रान्ति उत्तर 23° 26'
सूर्य उत्तरायन
कलि अहर्गण 1872384
जूलियन दिन 2460849.5
कलियुग संवत् 5125
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2551
हिजरी सन् 1446
महीना जिल्हेज **तारीख** 26
विशेष प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि।

ग्रह स्थिति	
सूर्य	मिथुन में
चंद्र	वृष में
मंगल	सिंह में
बुध	कर्क में
गुरु	मिथुन में
शुक्र	मेष में
शनि	मीन में
राहु	कुंभ में
केतु	सिंह में

राहुकाल 7.30 से 9.00 बजे तक

लग्नारंभ समय	
कर्क	07.00 बजे से
सिंह	09.16 बजे से
कन्या	11.28 बजे से
तुला	13.39 बजे से
वृश्चिक	15.54 ब.से
धनु	18.10 बजे से
मकर	20.15 बजे से
कुंभ	22.01 बजे से
मीन	23.34 बजे से
मेष	01.05 बजे से
वृष	02.45 बजे से
मिथुन	04.43 बजे से

दिन का चौघड़िया		
अमृत	05.53 से	07.22 बजे तक
काल	07.22 से	08.50 बजे तक
शुभ	08.50 से	10.19 बजे तक
रोग	10.19 से	11.48 बजे तक
उद्वेग	11.48 से	01.17 बजे तक
चर	01.17 से	02.45 बजे तक
लाभ	02.45 से	04.14 बजे तक
अमृत	04.14 से	05.43 बजे तक

रात का चौघड़िया		
चर	05.43 से	07.14 बजे तक
रोग	07.14 से	08.45 बजे तक
काल	08.45 से	10.17 बजे तक
लाभ	10.17 से	11.48 बजे तक
उद्वेग	11.48 से	01.19 बजे तक
शुभ	01.19 से	02.51 बजे तक
अमृत	02.51 से	04.2 बजे तक
चर	04.22 से	05.53 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अतः आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। Jagrutidaur.com, Bangalore

एक नजर

जलजमाव की गंभीर समस्या पर सरयू राय 24 जून को करेंगे बैठक

पूर्वी सिंहभूम : पश्चिमी विधानसभा क्षेत्र के विधायक सरयू राय 24 जून को बिष्टुपुर स्थित मिलानी हॉल में एक महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक करेंगे। बैठक शाम 4:30 बजे से शुरू होगी, जिसमें हाल की भारी बारिश से उत्पन्न जलजमाव की समस्या, इसके कारणों और संभावित समाधानों पर चर्चा की जाएगी। बैठक से पूर्व सरयू राय खुद प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करेंगे और जमीनी स्थिति की जानकारी लेंगे। रविवार को विधायक राय ने बयान जारी कर कहा कि नगर विकास की योजनाएं जमीनी हकीकतों की अनदेखी कर बनती हैं, जिसका खामियाजा आम नागरिकों को भुगतना पड़ता है। उन्होंने कहा कि प्रशासनिक मशीनरी में समन्वय की भारी कमी है। डीपीआर बनते हैं, योजनाएं स्वीकृत होती हैं, पर जनहित में उनका क्रियान्वयन नहीं हो पाता। राय ने राज्य सरकार से स्पष्ट शहरी विकास नीति की मांग की और कहा कि जब तक जल निकासी और कचरा प्रबंधन की ठोस व्यवस्था नहीं होगी, तब तक शहरवासियों को बार-बार ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। बैठक में जलजमाव की समस्या के अल्पकालिक और दीर्घकालिक समाधान पर चर्चा की जाएगी और जनचेतना के माध्यम से दबाव निर्माण का रास्ता तैयार किया जाएगा।

पुरुषों की वेशभूषा में लाठी डंडे के साथ शिकार पर निकली महिलाएं

लोहरदगा : लोहरदगा जिला में कई गांवों की महिलाओं की ओर से रविवार को जनी शिकार किया गया। इस दौरान पारंपरिक रीति रिवाजों के साथ पहान पुजार की ओर से विधिवत पूजा कर कार्यक्रम की शुभारंभ किया गया। हाथ में लाठी डंडे और पारंपरिक हथियार के साथ महिलाएं पुरुषों के वेशभूषा में विभिन्न गांव घूमकर शिकार किया गया। फिर एक जगह एकत्रित होकर भोजन बनाकर उसे खाया गया। ग्रामीणों ने बताया कि गांव में 12 वर्ष बाद महिलाएं जनी शिकार को निकलीं थीं। इससे पूर्व प्रत्येक घर में इसको लेकर जमकर तैयारियां की गई थीं। सभी घरों में महिलाओं से लेकर बच्चे, जवान, बुजुर्ग सभी उत्साह में थे। महिलाओं को जनी शिकार पर भेजने में पुरुष भी पीछे नहीं थे। वे उनकी तैयारियां पूरी कराने में लगे थे। रविवार को पुनः जनी शिकार का शुभारंभ किया गया। क्षेत्र के सैकड़ों महिलाएं पुरुषों की वेशभूषा में पारंपरिक हथियार के साथ शिकार के लिए गांव भ्रमण की गई।

दुर्लभ औषधीय पौधा गंधप्रसारिणी की जैव विविधता बचाने का प्रयास

पूर्वी सिंहभूम : जैव विविधता को संरक्षित करने और औषधीय महत्व रखने वाले दुर्लभ पौधों को विलुप्त होने से बचाने की दिशा में एक प्रेरणादायक कदम उठाया गया है। आनंद मार्ग यूनिवर्सल रिलीफ टीम ग्लोबल और प्रिवेंशन ऑफ क्रुएलिटी टू एनिमल्स एंड प्लांट्स के संयुक्त प्रयास से रविवार को शहर के मेरीन ड्राइव क्षेत्र में गंधप्रसारिणी (जिसे स्थानीय भाषा में गंधालसाग या गंदालपत्ता कहा जाता है) का रोपण किया गया है। यह औषधीय बेल अब साकची पंप हाउस से लेकर कदमा टोल ब्रिज तक की झाड़ियों में रोपित की गई है। संस्था के कार्यकर्ताओं ने बताया कि यह पौधा आमतौर पर दुर्गंध के कारण घरों के बागानों में नहीं लगाया जाता, लेकिन इसके औषधीय गुण इतने अधिक हैं कि इसे संरक्षित किया जाना अत्यंत आवश्यक है। इस पौधे का तना जमीन में आसानी से जड़ पकड़ लेता है और बेल के रूप में फैलने लगता है, जिससे इसे झाड़ियों में रोपना और फैलाना आसान होता है। इसके कुछ तनों को काटकर झाड़ी में फेंका गया है ताकि वे स्वतः ही अंकुरित हो सकें।

सोनाली आत्महत्या मामले में मेरे उपर प्राथमिकी दर्ज करना गलत : श्वेता सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : रांची रोड में सोनाली कुमारी की आत्महत्या की घटना के बाद मामला और बढ़ते जा रहा है। बीते 10 दिसंबर 2024 को मेरे भाई ने आत्महत्या कर ली थी । उसके बाद रामगढ़ थाने में इसको लेकर प्राथमिक की दर्ज हुई अनुसंधान लगातार चल रहा था, इसके क्रम में कोर्ट और रामगढ़ पुलिस के पास उनका आना-जाना लगा रहता था, वह बराबर प्रशासन और कोर्ट के माध्यम से यही मांग कर रही थी। मेरे भाई को आत्महत्या के लिए उकसाया गया था । इस बात को लेकर वे पिछले 6 महीने से से दौड़ रही थी । लेकिन इस दौरान उन्होंने किसी के भी परिवार पर लांछन नहीं लगाया उनके परिवार का मात्र एक ही मकसद था, कि अपने मृतक भाई को इंसाफ दिला सकू क्योंकि उसने अपना एकलौता भाई खोया था। बीते दो दिन पूर्व आरोपी सोनाली कुमारी द्वारा आत्महत्या कर ली थी। आत्महत्या के बाद उसके पिता विमल यादव द्वारा मेरे ऊपर रामगढ़ थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई जो कि सरासर गलत है ,पुलिस से मांग है, कि वे इस मामले की जांच के बाद ही प्राथमिकी दर्ज करे, क्योंकि सोनाली की मौत का जिम्मेदार श्वेता और उनके परिवार नहीं है, पिछले 6 महीना से वह खुद पीड़ित है और अपने मृतक भाई के इंसाफ के लिए वह खुद दौड़ रही है ,ऐसे में अगर मेरे भाई के आरोपी के द्वारा आत्महत्या की जाती है, तो इससे उनका उनके परिवार में से किसी का या किसी गवाह का कोई लेना देना नहीं है। श्वेता सिंह ने कहा कि मृतक सोनाली के पिता विमल यादव द्वारा मेरी व्यक्तिगत जिंदगी और मेरे चरित्र पर टीका टिप्पणी की गई है ,जो कहीं से भी उचित नहीं है, जिस समय उसने अपना भाई को खोया था । उस समय उन्होंने किसी के बेटी और उनके परिवार पर किसी प्रकार का कोई टीका टिप्पणी नहीं की थी । लेकिन आज ऐसा देखने को मिल रहा है, जो बता रहा है ,कि उनका चरित्र किस प्रकार का है, बेवजह किसी को कैसे बदनाम करे उसे झूठे केस में फसाए यही उनका मकसद है। पहले मेरा भाई सौरभ को नुक्सान पहुँचाना उनका मकसद था ।और अब वो मेरे पीछे पड़े हैं ,तथा मझे फंसाना चाहते हैं ,बेटी की मृत्यु कि सहानुभूति लेकर, जिसको लेकर श्वेता सिंह ने जिला प्रशासन से निष्पक्ष जांच की मांग। श्वेता कुमारी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर अपने मृतक भाई के केस से संबंधी कई जानकारी और फोटो को दिखाते हुए कहा कि वह जिला प्रशासन से स्वच्छ और निष्पक्ष जांच की मांग करते हैं ,और उनका कहना है ,कि वह पिछले 6 महीने जो अपने भाई के इंसाफ के लिए दर-दर भटक रही है, ऐसे में किसी की गलती का आरोप उन पर मढ़ना सरासर गलत है। श्वेता सिंह ने उतरी छोटानागपुर आईजी और रामगढ़ एसपी से मांग की है, की पूरे मामले की वस्तु स्थिति से वह शुरू से परिचित है और वह जान रहे हैं, कि मेरे मृतक भाई का केस कोर्ट में लंबित है, इस केस की आरोपी सोनाली कुमारी द्वारा किन परिस्थितियों में आत्महत्या की है, इससे उनका कोई लेना-देना नहीं है, बल्कि वह खुद कहती हैं, कि इस मामले की जांच अच्छे से होनी चाहिए क्योंकि पूछताछ के दौरान जब मृतक सोनाली रामगढ़ थाना आया करती थी ।तो उस दौरान थाना परिसर में मृतक सोनाली के पिता ने कई बार सोनाली को मर जाने के लिए कहा उनका कहना था ,कि तुम्हारी मौत के बाद ही मेरे घर में सुख शांति लौटेगी और जो कलंक लगा है ,मिट जाएगा। जिसने अपनी बेटी के मोबाइल के जप्ती होने पर लोक लाज का डर दिखाया मुझे शंका है, कि कही विमल यादव ने ही अपनी बेटी की हत्या की हो या उसे आत्महत्या के लिए उकसाया हो।

कांग्रेस पार्टी ही गरीबों को समझती है और गरीबों के लिए काम करती है : मुन्ना पासवान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : विधानसभा चुनाव बाद विधायक ममता देवी के चुनावी वादों एवं उनके द्वारा किए गए विकास कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने एवं सरकार की योजनाओं को धरातल पर उतरने के लिए छावनी परिषद के वार्ड नबर 06 नया टोला में बैठक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर अध्यक्ष बलराम साहू ने किया मंच संचालन नगर महासचिव संजय वर्मा ने किया कार्यक्रम में मुख्य रूप से कांग्रेस पार्टी के जिला अध्यक्ष मुन्ना पासवान एवं रामगढ़ विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी रामगढ़ नगर के पर्यवेक्षक बजरंग महतो उपस्थित हुए। कार्यक्रम में रामगढ़ नगर के नव मनोनीत उपाध्यक्ष खेमलाल बैठा महासचिव संजय वर्मा दीपक राकेश मंडल अध्यक्ष भाग 1 युवराज कुरैशी दानिश भाग दो दिलीप पांडे भाग 3 संजीव खंडेलवाल भाग 4 राकेश नायक पिंटू को मनोनयन पत्र एवं माला पहन कर स्वागत किया जिला अध्यक्ष ने अपने संबोधन में कहां कि कांग्रेस पार्टी ही गरीबों को समझती है, और गरीबों के लिए काम करती है, वहीं नगर पर्यवेक्षक बजरंग महतो ने अपने संबोधन में कहां विधानसभा चुनाव में विधायक ममता देवी के द्वारा जो भी वादा किया गया है। उसे वादे को पूरा करने का पूरा प्रयास किया जाएगा नगर अध्यक्ष बलराम साहू ने अपने संबोधन में कहा की महागठबंधन की सरकार ने चुनाव से पूर्व जो भी वादा किया है, उसको पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है इसी कड़ी में मैया सम्मान योजना 200 यूनिट बिजली माफ आदि किया जा रहा है कार्यक्रम में मुख्य रूप से वार्ड नंबर 6 के अध्यक्ष मुकेश प्रजापति, अमर सिंह, दीपक करमाली, वीरू नायक, रोशन नायक, अभिषेक वर्मा, अर्जुन नायक, राजू नायक, हनी नायक, साहिल नायक, पिंटू नायक, दीपक नायक, मीरा देवी, गीता देवी, जयंती देवी, सुनीता देवी, पारो देवी, रूबी देवी, डुमनी देवी, ज्योति देवी, अनु देवी आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

युवक की संदिग्ध स्थिति में डूबने से मौत

पूर्वी सिंहभूम : एमजीएम थाना क्षेत्र के तुडियाबेड़ा में रविवार सुबह एक युवक का शव तालाब से बरामद हुआ। मृतक की पहचान रोहित लामाय (18) के रूप में हुई है, जो तुलियाबेड़ा का ही रहने वाला था। रोहित शनिवार सुबह घर से निकला था लेकिन देर रात तक वह वापस नहीं लौटा। रविवार सुबह स्थानीय लोगों ने तालाब में एक शव को तैरते देखा, जिसके बाद उन्होंने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को तालाब से बाहर निकाला और जांच पड़ताल कर पोस्टमार्टम के लिए एमजीएम अस्पताल भेज दिया। मृतक के चचेरे भाई कार्तिक लामाय ने बताया कि रोहित के माता-पिता का पहले ही निधन हो चुका है और वह उसके साथ ही रहता था। कार्तिक ने यह भी बताया कि तालाब में पानी बहुत कम था, ऐसे में रोहित का डूबना संदिग्ध प्रतीत होता है। साथ ही उसके सिर पर चोट के निशान भी पाए गए हैं। पुलिस ने फिलहाल मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

आदिवासी हिंदू महिला को जल्द से जल्द बरामद करे पुलिस प्रशासन : चक्रवर्ती

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गोला : हिंदू रक्षा दल के केन्द्रीय कौर कमेटी सदस्य चक्रवर्ती दिवाकर ने रविवार को प्रेस बयान जारी कर कहा है गोला थाना क्षेत्र के मगनपुर गांव की एक हिंदू महिला को मगनपुर गांव के ही एक मुस्लिम लड़का जिसका नाम फिरोज अंसारी पिता लाल मोहमद अंसारी के द्वारा दिनांक 8 जून 2025 को भगाकर कहीं ले जाया गया है। जिसका आवेदन महिला के पति दीपक मुंडा के द्वारा गोला थाना प्रभारी और रामगढ़ पुलिस अधीक्षक को दिया गया है। परंतु अभी तक किसी तरह का कोई कारवाई नहीं किया गया है। आगे चक्रवर्ती दिवाकर ने कहा कि आज समाज किस दिशा की ओर आगे बढ़ता चला जा रहा है। आज हम अपने धर्म को बचाने के लिए अगर आगे नही आते है। तो जिहादियों का मनोबल बढ़ता चला जायेगा। आगे चक्रवती दिवाकर ने कहा कि पुलिस प्रशासन राज्य सरकार के दबाव में आकर हिन्दूओं का साथ नहीं दे रही है। जिसके चलते आये दिन झारखंड में आदिवासी हिन्दू बहन- बेटियों और महिलाओं के साथ विशेष समुदाय के लोगों के द्वारा लव जिहाद का शिकार बनाया जा रहा है। जिहादियों पर राज्य सरकार के कारण कोई कारवाई नहीं होती है। आगे चक्रवर्ती दिवाकर ने कहा कि अगर पुलिस प्रशासन जल्द से जल्द कार्रवाई नहीं करती है और आदिवासी हिंदू महिला को बरामद नही करती है तो पूरे रामगढ़ जिला में एक उग्र आंदोलन के लिए हिंदू समाज बाध्य होगा और इसकी पूरे जिम्मेवारी जिला प्रशासन की होगी।

उरांव समाज संघ ने किया टैलेंट हंट प्रतियोगिता परीक्षा आयोजित, 175 छात्रों ने लिया भाग

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पश्चिम सिंहभूम : पश्चिम सिंहभूम जिला में रविवार को आदिवासी उरांव समाज संघ की ओर से स्थानीय पुलहातु मध्य विद्यालय में छात्रों के लिए टैलेंट हंट प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कक्षा 9वीं, 10वीं, 11वीं एवं 12वीं के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों की प्रतिभा की पहचान करना और उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रति प्रेरित करना था। परीक्षा में चाईबासा के सातों अखाड़ा के साथ-साथ कांकुशी, खुर्शी, चक्रधरपुर, जमशेदपुर, जगन्नाथपुर, चौका और चांडिल से आए करीब 175 छात्र-छात्राएं शामिल हुए। परीक्षा के प्रति विद्यार्थियों में खासा उत्साह देखने को मिला। इस अवसर पर समाज के अध्यक्ष संचू तिर्की एवं मुख्य सलाहकार सहदेव किस्पोट्टा ने परीक्षा आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह प्रतियोगिता पिछले वर्ष से आदिवासी उरांव समाज के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में शुरू की गई है। समाज हर वर्ष 30 जून को स्थापना दिवस कार्यक्रम आयोजित करता है, जिसमें मैट्रिक एवं इंटरमीडिएट की परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को सम्मानित किया जाता है। इसी कार्यक्रम के तहत टैलेंट हंट परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर पुरस्कृत भी किया जाता है। परीक्षा के सफल संचालन में मुख्य भूमिका निभाने वालों में सहदेव किस्पोट्टा (मुख्य संचालक) और संचू तिर्की (नियंत्रक) के अलावा समाज के सक्रिय सदस्य बाबूलाल बरहा, अनिल लकड़ा, लक्ष्मण बरहा, लालू कुजूर, दुर्गा खलखो, मंगल खलखो, कृष्णा टोप्पो, सुशील बरहा, सुमित बरहा, महावीर बरहा, संजय नीमा, रोहित खलखो, बिक्रम खलखो, सावन खलखो, किरण नुनिया एवं सरिता खलखो शामिल रहे।

उर्दू गर्ल्स हाई स्कूल में सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : रामगढ़ जिला स्तरीय सम्मान समारोह सह मार्गदर्शन कार्यशाला उर्दू विद्यार्थियों के लिए आयोजित उर्दू गर्ल्स हाई स्कूल चितरपुर में कार्यक्रम मुख्य अतिथि वरिष्ठ कांग्रेसी नेता चितरपुर प्रखंड बीस सूत्री अध्यक्ष जकाउल्लाह ने कहा कि अपना गोल निश्चित करने में देर नहीं करना चाहिए। गोल सुनिश्चित करते समय हम इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि हमारी अपनी रूचि किस चीज में है। उसी के अनुसार अपना गोल बनाए ऐं। सबसे पहले इस बात को समझने कि जरूरत है कि अगर हम संकल्पित हैं तो किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त किया जा सकता है। यह कार्यक्रम अंजुमन फरोग ए उर्दू और ऑल इंडिया आइडियल टीचर्स एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजन किया गया। इस समारोह में इस वर्ष मैट्रिक, इंटर, बी ए और एम ए के उर्दू विषय में उत्कृष्ट अंक अर्थात 60 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वालों को प्रशस्ति पत्र और मेडल से सम्मानित किया गया। साथ ही विद्यार्थियों के मार्गदर्शन के लिए व्याख्यान भी दिए गए। व्याख्यान का लाभ उठाकर विद्यार्थी बेहतर कैरियर के लिए उचित फ्यूचर प्लान कर सकेंगे। इसमें शामिल होने के लिए उर्दू के विद्यार्थी द्वारा फॉर्म भर कर जमा किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आईटा के प्रदेश सचिव डॉ सरफराज आलम ने किया और संचालन अंजुमन फरोग ए उर्दू के उतरी छोटानागपुर प्रभारी डॉ शाहनवाज खान ने किया। डॉ शाहनवाज खान ने कहा कि उर्दू पढ़ने से रोजगार के अवसर कम नहीं होते हैं बल्कि रोजगार के अवसर में वृद्धि हो जाती है क्योंकि उर्दू पढ़ने वाले सामान्य नौकरियों के उम्मीदवार तो हो सकते हैं प्रशासनिक सेवा, रेलवे, बैंक, सरकारी विभागों के कर्मचारी की नौकरी आदि के साथ ही उर्दू के लिए विशेष पदों की उम्मीदवारी बढ़ जाती है जैसे उर्दू प्रोफेसर, शिक्षक, अनुवादक, उर्दू मीडिया के लिए भी अलग से दरवाजे खुल जाते हैं। बतौर विशिष्ट अतिथि अंजुमन फरोग ए उर्दू के केन्द्रीय सचिव डॉ मो गालिब नश्तर ने कहा कि उर्दू गंगा जमुनी तहजीब की वास्तविक प्रमाण है यह गंगा-जमुनी तहजीब का बेहतरीन नमूना है। हाजी रईस खान ने कहा कि कहा कि उर्दू इसी धरती पर पैदा हुई है ये हमारी मादरी जुबान है। जबकि मुनवर हुसैन और डॉ हैदर अली मार्गदर्शन व्याख्यान दिए। अन्य वक्ताओं जिला परिषद सदस्य शहला परवीन, पूर्व मुखिया यूसुफ मजहर, दानिश अयाज, मोकर्राम हयात, कारी आरिफ, सरफराज आलम का नाम शामिल है। कार्यक्रम में गोला प्रखंड के आदिल अंसारी, तसनीम फैजी, मो सज्जाद, असलम परवेज, असलम अंसारी, मांडू प्रखंड के रमीजुर रहमान, फरीद अंसारी, पतरातु प्रखण्ड के दिलदार हुसैन, मो असलम, जलील अंसारी, मो सलीम आफताब आलम, मो इमरान, विक्की खान, राजा खान, चितरपुर प्रखंड के रफिकुल्ला, दिलावर अहमद, शबाना अंजुम, शफकत जहां, दुलमी प्रखंड के शाहिद अंसारी, हीना परवीन, जोया, मुस्कान आदि उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

जेएलकेएम अल्पसंख्यक मोर्चा ने राज्यपाल से की भेंट

रामगढ़ : झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा के अल्पसंख्यक मोर्चा द्वारा महामहिम राज्यपाल महोदय से भेंट कर झारखंड राज्य में बढ़ते मॉबलिंचिंग की घटनाओं को रोकने के लिए सख्त कानून बनाने के संबंध में आग्रह किया गया। अल्पसंख्यक मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष आजाद हुसैन अंसारी ने कहा की झारखंड राज्य में हाल के दिनों में मॉब लिंचिंग की घटनाएं बढ़ती जा रही है, जो कि राज्य के लिए चिंताजनक विषय है। इस तरह की घटनाओं में सबसे ज्यादा राज्य के अल्पसंख्यक समाज के लोग प्रभावित हो रहे हैं। ज्यादातर घटनाओं में यह देखा गया है कि अल्पसंख्यक समाज से आने वाले व्यक्ति से अगर जाने अनजाने में कुछ क्षमायोग्य गलतियां भी हो जाती है। तो उसे प्रशासन के हवाले करने के बजाय भीड़ द्वारा बेरहमी से मारा पीटा जाता है। जिससे व्यक्ति की मौत तक हो जाती है। हाल के दिनों में इस तरह की घटनाएं झारखंड के बरकट्ठा (हजारीबाग), जमशेदपुर रांची और कुछ दिन पूर्व बोकारो जिले में घट चुकी है। मौके पर मुख्य रूप से केंद्रीय अध्यक्ष अल्पसंख्यक मोर्चा आजाद हुसैन अंसारी, अखलाक अंसारी, शेख शाहिद, अयूब अली, एनामुल अंसारी, सुभान अंसारी, तथा हसमुद्दीन अंसारी मौजूद थे। उक्त जानकारी झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा के प्रदेश मीडिया प्रभारी रमेश कुमार महतो ने दी।

जागरूकता सह जनभागीदारी कार्यक्रम का हुआ आयोजन

रामगढ़ : रविवार को ग्राम पंचायत कंडेर के गांव कंडेर , कच्चूदाग, सिउर, सिद्धवार, सिद्धवारकला उर्फ (छोटकी सिद्धवार) के ग्रामीणों के बीच धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान अंतर्गत जागरूकता सह जनभागीदारी कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।इस आयोजन में प्रखंड अंचल अंतर्गत विभिन्न विभागों के द्वारा उपस्थित ग्रामीणों के बीच उनकी समस्याओं का समाधान किया गया। इस कार्यक्रम में प्रखंड कल्याण पदाधिकारी सह प्रखंड कृषि पदाधिकारी द्वारा सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गई एवं उनका लाभ लेने की अपील की गई।कार्यक्रम में, उल्ढ, सामाजिक सुरक्षा ,संकाय सदस्य आरसेटी रामगढ़, मुखिया, पंचायत सचिव, पंचायत समिति सदस्य, वार्ड सदस्य एवं अन्य ग्रामीण उपस्थित हुए। इस कार्यक्रम में जाति कृषि से केसीसी के 02आवेदन,पीएम किसान के 05 आवेदन , सिकल सेल जांच 30, बीपी शुगर जांच 95, मनरेगा से 15, साथ ही पेंशन से संबंधित 08आवेदन, राशन कार्ड से 01आवेदन, पीएम मातृत्व वंदना से 03 आवेदन, आवास से संबंधित 05 आवेदन, स्वास्थ्य विभाग से 135 लोगों का स्वास्थ्य जांच किया गया ।

विश्व ब्राह्मण संघ व विप्र फाउंडेशन के द्वारा 15वां रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन

रामगढ़ : विश्व ब्राह्मण संघ एवं विप्र फाउंडेशन रामगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी, होटल मनोहर रेसीडेंसी के हॉल में झंडा चौक रामगढ़ दिनांक 22 जून 2025 दिन रविवार को रक्तदान शिविर का आयोजन कियागया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान परशुराम जी के चित्र के समक्ष मुख्य अतिथि झारखंड प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप कुमार शर्मा, उपाध्यक्ष नवीन पाठक तथा महेश मिश्रा द्वारा दीप प्रज्वलन तथा पुष्पांजलि के साथ किया गया। उसके उपरांत मुख्य अतिथि को अंग वस्त्र एवं बुके देकर स्वागत किया गया। इस कार्यक्रम में रामगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों से आए लोगों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य रूप से प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप शर्मा, महेश मिश्रा, नवीन पाठक, अशोक पांडेय, अरुण बनर्जी, संजू शर्मा, निक्की शर्मा, रमन शर्मा, सीताराम पाठक,मुना मिश्रा आदि की भूमिका सराहनीय रही। रक्त संग्रह टोली में शामिल डॉ. रेणु , सुमित कुमार तथा गुलाबी कुमारी का जोगदान शानदार रहा। पद्म बहादुर तथा किशन कुमार के द्वारा सुंदर व्यवस्था किया गया। मुख्य अतिथि ने कहा रक्तदान महादान है इस तरह के कार्यक्रम में सभी को बढ़ चढ़ सहयोग करना चाहिए। अंत में जिलाध्यक्ष अशोक कुमार पांडेय ने सभी का धन्यवाद किया।

श्री अग्रसेन स्कूल में सीबीएसई ट्रेनिंग का हुआ आयोजन

भुरकुंडा : श्री अग्रसेन स्कूल भुरकुंडा में शनिवार को सीबीएसई पटना के द्वारा शिक्षकों के लिए एक दिवसीय ट्रेनिंग सेशन का आयोजन हुआ। ट्रेनिंग का विषय था लर्निंग आउटकम्स एंड पेडागोजी (सीखने के परिणामों एवं शिक्षा शास्त्र)। इसका उद्घाटन सीबीएसई रिसोर्स पर्सन रवनीत कौर, सोनी कुमारी पांडेय व स्कूल प्राचार्य सह वेन्यू डायरेक्टर विवेक प्रधान ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। वेन्यू डायरेक्टर ने सभी का स्वागत किया। ट्रेनिंग सेशन में शिक्षकों को प्रभावी शिक्षण विधियों व छात्रों के सीखने के परिणामों का बेहतर मूल्यांकन करने के बारे में प्रशिक्षित किया गया। शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण विधियों की जानकारी दी गई। बताया गया कि वे किस प्रकार से छात्रों को सीखने में अधिक सक्रिय, प्रेरित और सफल बना सकते हैं। रिसोर्स पर्सन रवनीत कौर ने कहा कि शिक्षा एक सजीव गतिशील प्रक्रिया है। इसमें शिक्षक और विद्यार्थी के बीच इंटरैक्शन होता रहता है। अंत में यह इंटरैक्शन किसी लक्ष्य तक पहुंचता है। ऐसे में छात्रों को किसी विशेष विषय या गतिविधि के अंत में क्या सीखना चाहिए, इसे परिभाषित करना जरूरी है। इसी प्रकार सीखने की प्रक्रिया को प्रभावी व सुविधाजनक बनाने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों व तकनीकों का अध्ययन भी आवश्यक होता है।

एक नजर

विवाहित महिला के साथ दहेज प्रताड़ना को लेकर, थाना में प्राथमिकी दर्ज

साहिबगंज/उधवा : राधानगर थाना पुलिस ने दहेज प्रताड़ना मामले में कार्रवाई करते हुए तीन नामजद और दो अज्ञात के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस के अनुसार उत्तर पियारपुर निवासी पोली खातून ने मामले को लेकर राधानगर थाना में शिकायत दर्ज कराई है। जिसमे उन्होंने बताया है कि उसकी शादी इंजामुल हक के साथ हुई है। शादी के कुछ महीनों बाद उसके पति इंजामुल हक, मजरूल शेख, सबीना बीबी एवं अन्य दो लोग दहेज की मांग करने लगे। विरोध करने पर ससुरल वाले उसके साथ शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित किया। वही पीड़िता ने थाना पुलिस से सभी के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की गुहार लगाई। जिसके बाद पीड़िता के आवेदन पर कार्यवाई करते हुए सभी आरोपियों के विरुद्ध कांड संख्या 227/25 के तहत प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है।

आपसी विवाद में हुई मारपीट में एक घायल

साहिबगंज/उधवा : राधानगर थाना क्षेत्र के पलाशगाछी गांव में बीते शनिवार की देर रात्रि आपसी विवाद में हुई मारपीट में एक व्यक्ति घायल हो गया। मिली जानकारी के अनुसार मुस्तफा शेख 33 वर्षीय मोटरसाइकिल लेकर अपने घर लौट रहा था। इसी दौरान रास्ते में कुछ लोगों के साथ आपसी विवाद में कहा सुनी होते-होते बात मारपीट तक पहुंच गया। जिसमें उक्त व्यक्ति घायल हो गया। परिजनों को पता चलते ही आनन फानन में इलाज के लिए रात में ही अनुमंडल अस्पताल राजमहल लाया गया। ड्यूटी पर तैनात चिकित्सकों के द्वारा इलाज किया गया। ड्यूटी में मौजूद डॉक्टर कलीमुद्दीन ने बताया कि घटना की सूचना संबंधित थाना पुलिस को दे दी गई थी।

कृषि मंत्री के आवास का घेराव करने जाएंगे कृषक मित्र

साहिबगंज : जिले के सभी प्रखंडों से कृषक मित्र रविवार की शाम वनांचल ट्रेन से विभिन्न रेलवे स्टेशनों से रांची में कृषि मंत्री आवास के समक्ष एक दिवसीय धरना प्रदर्शन करने जाएंगे। साहिबगंज जिला अध्यक्ष अवनीत कुमार सिंह ने सभी कृषक मित्रों को प्रदेश कृषक मित्र महासंघ के बैनर तले एक जुटता के साथ अपनी मांगों को कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की के समक्ष रखने की बात कही है। ज्ञात हो कि बीते 27 मई से कृषक मित्रों का हड़ताल चल रहा है। इस पर ना सरकार और ना कृषि विभाग के द्वारा अभी तक कोई सकारात्मक पहल की गई है। ज्ञात हो कि कृषक मित्रों को साल में एक बार मिलने वाला प्रोत्साहन राशि भी करीब 18 महीने से नहीं मिली है। जिससे कृषक मित्र काफी आहत और नाराजगी में है।

धोखाधड़ी को लेकर थाना में प्राथमिकी दर्ज

साहिबगंज/उधवा : राधानगर थाना क्षेत्र के गोबरगाड़ी गांव की एक विधवा महिला के साथ धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। इस संबंध में विभा बेवा पति स्व. बोनू मंडल ने राधानगर थाना में लिखित शिकायत दर्ज कराई है। अपनी शिकायत में पीड़िता विभा बेवा ने आरोप लगाया है कि मिस्त्री टोला निवासी गंधर्व कर्मकार और विष्णु कर्मकार ने मिलकर उनके साथ धोखाधड़ी की है। पीड़िता विभा बेवा के बयान के आधार पर पुलिस ने थाना कांड संख्या-226/25 भारतीय न्याय संहिता की धारा 316(2), 318(2) और 3(5) के तहत प्राथमिकी दर्ज कर ली है। पुलिस ने बताया कि प्राथमिकी दर्ज करने के बाद मामले की जांच-पड़ताल शुरू कर दी गई है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल और पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने की संगठनात्मक चर्चा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

दुमका : पूर्व मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी और पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास के बीच संथाल परगना दौरे के दौरान दुमका परिसदन भवन में रविवार को मुलाकात हुई। इस दौरान दोनों नेताओ ने पार्टी संगठन और राज्य की राजनीति से संबंधित विषयों पर विस्तार से चर्चा किया। विशेष रूप से संताल परगना के उन मुद्दों पर चर्चा हुई जिसके आधार पर भाजपा इस इलाके में जनता के बीच पहुंच रही है। रघुवर-बाबूलाल मुलाकात के दौरान संताल परगना में भाजपा संगठन को मजबूत करने और पार्टी के जनाधार को बढ़ाने के लिए किए जाने वाले कार्यक्रमों पर विस्तार से विचार-विमर्श हुआ है। इस बीच पार्टी कार्यकताओं से संगठन मजबूत करने पर चर्चा हुई। पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास दो दिनों से संताल परगना के प्रवास पर हैं। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी रविवार को सुबह इंटरसिटी ट्रेन से दुमका पहुंचे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास 21 जून को पाकुड़ के लिट्टीपाड़ा में एक आदिवासी संगठन की ओर से आयोजित जन चौपाल कार्यक्रम में शामिल हुए थे। रविवार को रघुवर दास साहिबगंज के भोगनाडीह में अमर शहीद सिदो कान्हू मुर्मू के वंशजों से भेंट करेंगे और बरहेट में जन चौपाल कार्यक्रम में जनता से सीधा संवाद करेंगे। उल्लेखनीय है कि गत लोकसभा और विधान सभा चुनावों में संताल परगना में भाजपा का प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा था। लोकसभा में भाजपा को पहले से जीती हुई दुमका सीट भी गवां देनी पड़ी थी। वहीं विधानसभा चुनाव में सभी चार सिटिंग सीटों सहित 18 में 17 सीटों पर भाजपा (एनडीए) को हार का सामना करना पड़ा था।

आरटीसी स्कूल के हॉस्टल में नौवीं के छात्र ने की खुदकुशी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पश्चिम सिंहभूम : पश्चिम सिंहभूम जिला स्थित मनोहरपुर के प्रतिष्ठित आरटीसी स्कूल के अनुसूचित जाति छात्रावास में शनिवार रात एक छात्र ने खुदकुशी कर ली। नौवीं कक्षा में पढ़ने वाले छात्र सौरभ(14) का शव हॉस्टल के कमरे में फंदे से लटका मिला। आनंदपुर निवासी सौरभ स्कूल में रहकर पढ़ाई कर रहा था। बताया गया कि वह शाम को ट्यूशन के बाद अकेला हॉस्टल लौटा, जबकि अन्य छात्र खेलने चले गए थे। रात को सहपाठी संतोष नाग जब कमरे में लौटा, तो दरवाजा अंदर से बंद था। खटखटाने पर भी कोई जवाब नहीं मिला तो दरार से झांकने पर सौरभ का शव पंखे से लटका दिखा। दरवाजा तोड़कर उसे बाहर निकाला गया और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलते ही डीएसपी जयदीप लकड़ा और थाना प्रभारी अमित खाखा मौके पर पहुंचे। पुलिस ने जांच पड़ताल कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस पूरे मामले की जांच पड़ताल कर रही है। परिवार ने स्कूल प्रबंधन पर लापरवाही का आरोप लगाया है।

भाजपा कार्यकर्ता मरांग मरांडी के परिजनों से मिले झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

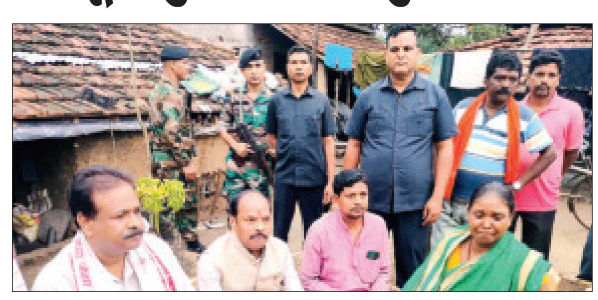

साहिबगंज : रविवार को पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास अपने पार्टी के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता के परिजनों से मिलने, हरिनचारा गांव पहुंचे। बरहेट से बोरियो आने के क्रम में हरिनचरा मोड़ में भाजपा के पूर्व विधायक, पार्टी पदाधिकारी व कार्यकताओं ने उनको फूल माला पहनाकर स्वागत किया। उसके बाद सीधे मृत भाजपा कार्यकर्ता मरांग मरांडी के घर पहुंचे। मृतक भाजपा नेता एसटी मोर्चा के जिला महामंत्री थे। आजीवन भाजपा के लिए समर्पित रहे, लेकिन पिछले दिनों रात्रि पहर में हार्ट अटैक से उनकी मौत हो गई थी। जिसके बाद पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने मृतक की धर्मपत्नी सबीना किस्कू को फोन पर ढांढस बंधाया था, साथ ही एक सप्ताह के अंदर मिलने का भरोसा दिया था। उसी भरोसे को कायम करते हुए रविवार को मृतक के घर पहुंचे। मृतक के तीनों पुत्रियों व धर्मपत्नी को हर मुश्किल वक्त में साथ खड़ा रहने का भरोसा दिया, किसी भी प्रकार के समस्या होने पर कॉल करने के लिए कहा। परिजनों से मिलने के बाद पूर्व मुख्यमंत्री ग्रामीणों व बच्चों से भी खुलकर मिले और कार्यकताओं को मजबूती से खड़े होने का संदेश दिया। पत्रकारों से बातचीत के दौरान वर्तमान हेमंत सरकार पर कमजोर होने और राज्य में अफसरशाही का हावी होने को लेकर कटाक्ष करते दिखे। जल, जंगल, जमीन, पेसा, नियोजन नीति सहित अन्य मुद्दों पर वर्तमान मुख्यमंत्री के रवैए को लेकर भी निशाना साधा। इसके बाद पूर्व मुख्यमंत्री अपने काफि ले के साथ साहिबगंज जिला मुख्यालय की और रवाना हो गए।

झारखंड सहित पूरे देश में मनाया गया एसडीपीआई स्थापना दिवस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़ : ज़िले में सडीपीआई झारखण्ड प्रदेश के सभी ब्रांचों में पार्टी की 17वीं स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर पार्टी का झंडोत्तोलन किया गया। वहीं संथाल परगना क्षेत्रीय कार्यालय पाकुड़ में प्रदेश अध्यक्ष सह जिला परिषद सदस्य मो. हंजेला शेख द्वारा 10 बजे पार्टी का झंडा फहराया गया। झंडोत्तोलन के पश्चात हंजेला शेख ने सभी कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि 21 जून सिर्फ एक तारीख नही-एक आंदोलन का प्रतीक है, एक ऐसा आंदोलन जो अन्याय के गलियों से निकलकर पीड़ितों के आंसुओं से पला एवं भारतीय संविधान में आस्था रखते हुए मजबूत हुआ है। 21 जून 2009 में जब हमारी पार्टी की गठन हुई तो हमारा उद्देश्य स्पष्ट था कि जो आवाज सत्ता की गलियारों को सुनाई नहीं देती है, उनकी आवाज बनना, हम मुसलमानों, दलितों, आदिवासियों, ईसाइयों, श्रमिकों तथा महिलाओं की आवाज बनकर उभरे है। पूरे देश में फासीवादी ताकते यूसीसी, सीएए और वक्फ संशोधन जैसे काला कानून थोपना चाहते है, ऐसे में वक्फ संशोधन जैसे काला कानून के विरुद्ध पूरे देश सबसे अधिक जगहों और बड़ा आंदोलन हमने किया, हमारी आवाज को दबाने के लिए हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष एमके फैजी साहब को ईडी द्वारा गिरफ्तार किया गया। हमारी पार्टी का गठन शहीदों के खून से हुई है, हमारे नेताओं को जेल में तो आप डाल सकते है परंतु हमारी हिम्मत, हौंसला और आंदोलन को नहीं। मौके पर फ्री एमके फैजी, सोलह साल का संघर्ष न्यायपूर्ण भारत की ओर, एसडीपीआई जिंदाबाद के नारे लगाए गए। इस अवसर पर उपस्थित थे प्रदेश उपाध्यक्ष हबीबुर रहमान, महासचिव तहमीदुर रहमान, महासचिव संगठन शमीम अख्तर प्रदेश सचिव अमीर हमजा, प्रदेश समिति के विभिन्न सदस्यगण एवं अन्य।

रेल पुलिस ने 46 हजार 160 रुपये का अवैध शराब किया जब्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरहरवा : रविवार को गुप्त सूचना के आधार पर, आरपीएफ इंस्पेक्टर बरहरवा संजीव कुमार ने एसआई एल.बी.माझी, एएसआई बी.एन.टुडू, कांस्टेबल अनिल कुमार साह और कांस्टेबल एस.के.भारती, सभी आरपीएफ पोस्ट बरहरवा के साथ बरहरवा रेलवे स्टेशन पर 10.50 बजे से छापेमारी की। इस छापेमारी सह तलाशी के दौरान,जब बरहरवा रेलवे स्टेशन के न्यू फरक्का छोर की ओर एफओबी के पास प्लेटफार्म संख्या-01 पर पहुंचे तो देखा कि एक संदिग्ध काले रंग का पिट्ठू बैग और एक सफेद रंग का प्लास्टिक का झोला न्यू फरक्का छोर की ओर फुट ओवर ब्रिज के नीचे रखा हुआ है। काफी समय तक इंतजार करने के बावजूद कोई भी इसे लेने के लिए आगे नहीं आया। संदेह होने पर उक्त बैग और झोला की जाँच की गई और पाया गया कि कुल 19 नग रॉयल स्टैग सुपीरियर व्हिस्की जिसमें प्रत्येक 750 मिली लीटर है, जिसकी कीमत 780 रुपए प्रत्येक बोतल है, कुल कीमत 14,820 रुपए है और एक काले रंग के पिट्ठू बैग में हैं 14 नग ऑफिसर्स चॉइस व्हिस्की जिसमें प्रत्येक 750 मिली लीटर है, जिसकी कीमत 590 रुपए प्रत्येक बोतल है,कुल कीमत 8,260 रुपए है। एक सफेद रंग के प्लास्टिक के झोला में लावारिस के रूप में कुल कीमत 23,080 रुपए का अवैध शराब 24,750 एमएल था। जिन्हें आरपीएफ इंस्पेक्टर बरहरवा संजीव कुमार द्वारा मौके पर ही लावारिस बैगों को जब्त किया गया। सभी कानूनी औपचारिकताओं का पालन करने के बाद, सभी जब्त शराब को आरपीएफ पोस्ट बरहरवा लाया गया।

विधायक की अध्यक्षता में कांग्रेस की संगठनात्मक बैठक संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़ : पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक निसात आलम की अध्यक्षता में रविवार को जिला कांग्रेस कार्यालय में एक महत्वपूर्ण संगठनात्मक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में प्रखंड अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष एवं बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकताओं की उपस्थिति रही। बैठक का मुख्य उद्देश्य संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करना, विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा करना तथा आगामी 28 जून को प्रस्तावित संविधान बचाओ रैली की तैयारियों पर चर्चा करना रहा। विधायक निसात आलम ने कार्यकताओं से संवाद करते हुए कहा कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की गति को और अधिक तेज करने की आवश्यकता है। उन्होंने संगठन की मजबूती के लिए जनसंपर्क को प्राथमिकता देने और एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न मंडलों के नव नियुक्त अध्यक्षों को नियुक्ति पत्र सौंपे गए। विधायक ने सभी नव नियुक्त पदाधिकारियों को बधाई देते हुए संगठन की जिम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाने का निर्देश दिया। विधायक आलम ने बैठक में उपस्थित सभी कार्यकताओं से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की और उनकी समस्याओं एवं सुझावों को गंभीरता से सुना। उन्होंने भरोसा दिलाया कि कांग्रेस पार्टी कार्यकताओं की बातों को सर्वोपरि मानती है और हर संभव समाधान के लिए तत्पर है। इस दौरान आगामी 26 जून 2025 को झारखण्ड प्रदेश कांग्रेस के महासचिव तनवीर आलम की उपस्थिति में एक और बैठक आयोजित की जाएगी, जिसमें संविधान बचाओ रैली की रूपरेखा को अंतिम रूप दिया जाएगा। बैठक के अंत में पाकुड़ होड़ क्लब के सदस्यों ने कांग्रेस पार्टी की नीति और विचारधारा से प्रभावित होकर पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। विधायक निसात आलम ने नए सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि पार्टी में युवाओं और संगठनों की भागीदारी से संगठन को नई ऊर्जा मिलेगी। बैठक में प्रदेश सचिव देवीलाल मुर्मू, पर्यवेक्षक अशोक दास, प्रखण्ड अध्यक्ष मानसारुल हक, मुख्तार हुसैन, सेमीनुल इसलाम, शाहीन परवेज, गुलाम अहमद, असद हुसैन, देबू विश्वास, प्रमोद डोकानिया ,रामविलास महतो ,मोनिता कुमारी, शहनाज बेगम, जिला परिषद सदस्य मंजुला हसदा, मिरजाहान शेख, मिठुन मरांडी, इसलाम मियां, ए. गंगुली , मनोवर आलम, कलीमुद्दीन शेख, मजिबुर रहमान, बेलाल शेख, जालालुद्दीन शेख आदि उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

रेल दुर्घटना में घायल युवक की मौत, परिजन पहुंचे अस्पताल

साहिबगंज : शहर के पश्चिमी रेलवे फाटक के समीप शनिवार दोपहर करीब साढ़े तीन बजे चलती ट्रेन साहिबगंज दानापुर इंटरसिटी एक्सप्रेस में चढ़ने के दौरान जमालपुर छोटी दौलतपुर निवासी युवक राकेश कुमार तांती पिता टुनटुन तांती फिसलकर रेलवे लाइन पर गिर गया और उसका दोनों पैर कट कर अलग हो गया था। उधर घटना की जानकारी मिलने के बाद आरपीएफ व रेल थाना क्षेत्र की पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर गंभीर रूप से घायल युवक को बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया था जहां देर रात में युवक की मौत हो गई। उधर मामले की जानकारी मृतक युवक के परिजनों को मिलने पर परिवार के लोग रविवार को सदर अस्पताल पहुंचे जहां पोस्टमार्टम की प्रकिया पूरी होने के बाद परिजन शव को अपने साथ निजी एंबुलेंस के माध्यम से अपने घर छोटी दौलतपुर के लिए रवाना हो गए। वही मामले को लेकर मृतक युवक राकेश कुमार तांती के जीजा मनोज कुमार ने बताया कि उसका साला पलंबर का काम किया करता था जो किसी काम से साहिबगंज आया हुआ था और रेल दुर्घटना में उसकी मौत हो गई है। उधर मृतक युवक शादीशुदा था जहां इस घटना के बाद से उसके परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है। फिलहाल रेल थाना क्षेत्र की पुलिस ने यूडी केस दर्ज करते हुए पूरे मामले की जांच में जुटी हुई है।

श्री परशुराम अखाड़ा ने किया राज्य टॉपर देव तिवारी को सम्मानित

साहिबगंज : विगत कुछ दिन पहले अधिविद्य परिषद रांची ने इण्टर कला वार्षिक परीक्षा 2025 का परिणाम घोषित किया था। जिसमें साहिबगंज जिले के तीनपहाड़ दरला निवासी संजय तिवारी के पुत्र देव तिवारी ने पूरे झारखंड राज्य में 481 अंक प्राप्त कर राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया। रविवार को ओझा टोली आदर्श पुस्तकालय में श्री परशुराम अखाड़ा व ओझा टोली के तमाम ग्राम वासियों ने देव तिवारी को माल्यार्पण, अंग वस्त्र एवं श्रीमदभागवत गीता भेंटकर सम्मानित कर उनके उज्जवल भविष्य के लिए समाज के तरफ से उनको शुभकामनाएं दी। देव तिवारी ने बताया कि उन्हें राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बहुत गर्व महसूस हो रहा है जिसका श्रेय वह अपने इष्ट देव, माता-पिता व अपने गुरुजन को देना चाहेंगे। इनका लक्ष्य बीएचयू जैसे विश्व प्रसिद्ध यूनिवर्सिटी से अध्ययन कर संस्कृत का प्रोफेसर बनना चाहते है। जिससे इनके नाम से लोग हिंदुस्तान में साहिबगंज को जाने। आगे की पढ़ाई के लिए वित्तीय मदद की मांग की जिसका उपस्थित सभी लोगों ने समर्थन करते हुए यथा संभव सहयोग का आश्वासन दिया। मौके पर श्रीकांत ओझा, अंकित पाण्डेय, राजीव ओझा, जयप्रकाश ओझा, अजय ओझा, डब्लू ओझा, रामबिहारी ओझा पवन पांडेय, देवकुमार ओझा, प्रमोद झा, भगवती रंजनपांडे, शिवम वत्स, सतीश ओझा, उज्ज्वल पाण्डेय, आलोक ओझा व दर्जनों की संख्या में ओझा टोली ग्रामवासी उपस्थित थे।

बलुआ दियारा के खेत में बकरी घुसने के विवाद में बालक को मारकर किया घायल

साहिबगंज : मुफस्सिल थाना क्षेत्र के बलुआ दियारा निवासी मो. नसिर खान के पुत्र मो. शाहरुख खान को रविवार को पास की ही रहने वाली एक महिला ने ईंट से सिर पर मारकर गंभीर रूप से घायल कर दिया। जहां इस घटना के बाद परिजन थाना पहुंचे और मारपीट मामले की जानकारी उपस्थित पुलिस कर्मी को दी जिसके बाद घायल बालक को बेहतर इलाज हेतु सदर अस्पताल भेज दिया गया। जहां सदर अस्पताल में ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक डॉ. ऋतुराज ने फौरन इलाज किया। वही मामले को लेकर घायल बालक के चाचा मो. जिशान खान ने बताया कि उसके खेत में पास की रहने वाली एक महिला का बकरी रोजाना घुसकर फसल खा लिया करता है जहां बकरी को पकड़कर उसने अपने भतीजे को लाने के लिए कहा था जहां महिला ने ईंट से बालक को मारकर गंभीर रूप से घायल कर दिया। फिलहाल मुफस्सिल थाना क्षेत्र की पुलिस पूरे मामले की जांच पड़ताल में जुटी हुई है।

30 जून हूल दिवस पर झामुमो केंद्रीय अध्यक्ष सह मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन करेंगे शिरकत

साहिबगंज/बरहेट : प्रखंड कार्यालय परिसर अंतर्गत आदिवासी संस्कृति एवं कला भवन(धूमकुडिया भवन) में झामुमो जिला समिति की एक बैठक आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता झामुमो जिलाध्यक्ष अरुण सिंह ने किया। बैठक में सर्वसम्मति से 30 जून हूल दिवस पर चर्चा की गई। इस बैठक के मुख्य अतिथि झामुमो केंद्रीय सचिव सह प्रवक्ता माननीय पंकज मिश्रा शामिल हुए। जिलाध्यक्ष अरुण सिंह ने पंकज मिश्रा, सांसद विजय हांसदा एवं विधायक मो ताजुद्दीन को अंगवस्त्र एवं बुके देकर सम्मानित किया। ज़िप अध्यक्ष मोनिका किस्कू को महिला ज़िला अध्यक्ष बसंती हांसदा ने अंगवस्त्र एवं बुके देकर सम्मानित किया। विधायक धनंजय सोरेन को जिला सचिव सुरेश टुडू ने अंगवस्त्र एवं बुके देकर सम्मानित किया। पंकज मिश्रा ने बैठक को संबोधित करते हुए साहेबगंज जिला के नौ प्रखंड एवं तीन नगर के अध्यक्ष सचिव केंद्रीय समिति सदस्य सहित प्रखंड के वरिय पदाधिकारियों एंव ज़िला समिति के सभी सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि आगामी दिनांक 30 जून हूल दिवस के मौके पर झामुमो के केंद्रीय अध्यक्ष सह सूबे के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का वीर शहीद सिदो-कान्हू मुर्मू की पावन धरती पर आगमन होने जा रहा है। सभी प्रखंड के अध्यक्ष सचिव अपने -अपने प्रखंड में बैठक कर तैयारी में जुट जाएं। बैठक को सांसद विजय हांसदा विधायक मो ताजुद्दीन ने भी संबोधित किया। मंच का संचालन जिला उपाध्यक्ष सह सांसद प्रतिनिधि संजीव सामु हेंब्रम ने किया। मौके पर मौजूद जिप अध्यक्ष मोनिका किस्कू, सहित सम्मानित कार्यकर्तागण मौजूद थे।

नदियों पर बना तटबंध टूटा

नीतीश सरकार की किरकिरी कराने वाले 7 इंजीनियर सस्पेंड

पटना। जल संसाधन विभाग के कुछ अभियंताओं की लापरवाही से दक्षिण बिहार में नदियों पर बने तटबंध कई जगह टूट गए हैं। बहरहाल उनकी मरम्मत हो रही। इसी बीच कर्तव्यों में लापरवाही बरतने वाले एक कार्यपालक अभियंता और छह कनीय अभियंताओं को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। उनके विरुद्ध विभागीय कार्रवाई प्रारंभ हो गई है। शनिवार को विभागीय मंत्री विजय कुमार चौधरी ने इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि उच्च अधिकारियों की भूमिका की समीक्षा हो रही है और उनके विरुद्ध भी उचित कार्रवाई होगी। बहरहाल, प्रभावित स्थलों पर दो अतिरिक्त कार्यपालक अभियंता एवं दो सहायक अभियंताओं की प्रतिनियुक्ति कर दी गई है, ताकि मरम्मत कार्य में गति लाई जा सके। लगभग दर्जन भर जगह पर तटबंध टूटे हैं। हालांकि, विभाग इनकी संख्या आधा दर्जन के करीब बता रहा।चौधरी ने दावा किया कि पूरी मुस्तैदी और गंभीरता से क्षतिग्रस्त तटबंधों की मरम्मत की पहल हो रही। वरीय अधिकारी प्रभावित क्षेत्रों का नियमित निरीक्षण कर रहे। विभाग लापरवाही के मामलों में शून्य सहनशीलता की नीति अपना रहा है। जिला प्रशासन से समन्वय बनाकर विभागीय अधिकारी स्थल निरीक्षण कर रहे और संवेदनशील क्षेत्रों को संरक्षित किया जा रहा है। प्रधान सचिव संतोष कुमार मल्ल ने बताया कि 18 जून से झारखंड में निरंतर वर्षा हो रही। वहां से बहकर आने वाली निरंजना, मुहाने, उत्तर कोयल, सकरी, पंचाने आदि नदियों में अत्यधिक जलस्राव दर्ज किया गया है। 19 जून की रात नौ बजे जहानाबाद में उदेरास्थान बराज से 73067 क्यूसेक जलस्राव हुआ। यह पिछले वर्ष के अधिकतम जलस्राव (68268 क्यूसेक) से 4439 क्यूसेक अधिक है। बंधुगंज काजवे गेज स्टेशन पर 62.15 मी. का नया उच्चतम जलस्तर दर्ज किया गया। इस कारण 19 जून को आधी रात नालंदा जिलान्तर्गत एकंगरसराय प्रखंड में लोकाइन नदी के दाएं किनारे पर अवस्थित जमींदारी बांध केशोपुर गांव के पास क्षतिग्रस्त हो गया। नालंदा के साथ जहानाबाद और पटना जिला में लोकाईन, भूतही, धोवा और महत्माइन नदी पर अवस्थित बांध के कुछ हिस्से क्षतिग्रस्त हुए हैं।

संक्षिप्त डायरी

विक्रमशिला पुल पर ओवरटेकिंग बना जाम की वजह

भागलपुर। विक्रमशिला पुल पर ओवरटेकिंग के चक्कर में कई वाहन ब्रेकडाउन हो गए, जिससे दो घंटे से अधिक समय तक यातायात ठप रहा। सुबह आठ से 10 बजे तक पुल पर पूरी तरह जाम की स्थिति बनी रही। पिलर संख्या 117 सहित दो-तीन स्थानों पर गाड़ियां खराब हो गई थीं, जो पुल के बीचोंबीच फंस गईं। ओवरटेकिंग के दौरान अधिक दबाव के कारण वाहनों का तकनीकी संतुलन बिगड़ा, जिससे यह स्थिति उत्पन्न हुई। जाम की सूचना मिलते ही विक्रमशिला यातायात पुलिस हरकत में आई और क्रेन की सहायता से ब्रेकडाउन गाड़ियों को हटाया गया। वहीं, इस बाबात यातायात प्रभारी प्रभाकर कुमार ने बताया कि विक्रमशिला पुल पर एक साथ तीन जगहों पर गाड़ियां खराब हो गई थीं, जिसके कारण ट्रैफिक ठप हो गया। पुल की एकतरफा लेन पर दबाव बढ़ने के कारण वाहनों की लंबी कतार लग गई।वहीं, नवगछिया की ओर से वैभव होटल के समीप दो बसों की आपसी टक्कर ने स्थिति और बिगाड़ दी। जिसके कारण जाम पुल से लेकर जीरो माइल, सबौर और शहरी वैकल्पिक बाईपास तक जाम का असर देखा गया। वहीं दूसरी ओर स्कूल के छुट्टी के समय शहर के विभिन्न हिस्सों– तिलकामांझी, बरारी रोड, डिक्सन मोड़, ततारपुर और स्टेशन चौर पर भी गाड़ियों की रफ्तार थम गई। माउंट कार्मल स्कूल के पास करीब आधे घंटे तक जाम लगा रहा। इस जाम में कई एंबुलेंस भी फंसी रहीं, लेकिन ट्रैफिक रेगुलेशन टीम की तत्परता से उन्हें निकाला गया और समय पर अस्पताल पहुंचाया गया।शहर की सड़कों पर जाम लगने की मुख्य वजह बारिश के बाद सड़क पर निकली भीड़ थी।

पत्नी और उसके भाई ने ले ली पति की जान, रुपये के लेन-देन में हुआ था विवाद

किशनगंज। पुलिस ने हत्यारे साले को अपने जीजा के हत्या करने के आरोप में गिरफ्तार किया है, वही पत्नी फरार है। मामला बीबीगंज थाना क्षेत्र के चिचोरा गांव का है। घटना के संबंध में पुलिस का कहना है कि 7 जून 2024 को बीबीगंज थाने को सूचना मिली कि ग्राम चिचोरा में एक व्यक्ति का शव फंदे से लटका है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंची। मृतक की पहचान चमन लाल पंडित के रूप में की गई। परिजन शव का अंतिम संस्कार करने की तैयारी कर रहे थे। तभी ऐन वक्त पर पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर शव को कब्जे में ले लिया। इस घटना के संबंध में एसपी ने टीम गठित किया। टीम के द्वारा जांच की गई, जिसमें यह बात सामने आई कि मृतक की पत्नी के भाई विजय पंडित ने जमीन खरीदने के नाम पर चमन लाल से लगभग 4-5 लाख रुपये लिए थे। जमीन की रजिस्ट्री नहीं होने पर चमन लाल अपनी पत्नी देवी और उसके भाई पर रुपये वापसी का दबाव बनाने लगे। 6 जून की रात को इसी विवाद पर झगड़ा हुआ। चमन लाल ने अपनी पत्नी के सिर पर वार कर दिया। गुस्से में पत्नी ने अपने भाई विजय के साथ मिलकर चमन लाल की गला दबाकर हत्या कर दी। और फिर घटना को आत्महत्या का रूप देने के लिए शव को फांसी के फंदे से लटका दिया गया। पुलिस ने मामले में धारा 302/120इ के तहत केस दर्ज किया है। पुलिस ने आरोपी विजय पंडित को गिरफ्तार कर लिया। उसने अपना जुर्म कबूल करते हुए पुलिस को सारी कहानी भी सुनाई। एसपी सागर कुमार ने घटना के संबंध में बताया कि हत्याकांड में शामिल अन्य अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है।

ड्राइवर को नींद आने पर पेड़ से टकराई कार, रजरप्पा से लौटते समय हादसा, 7 लोग घायल

पटना। मीठापुर निवासी शंकर कुमार अपने परिवार के साथ झारखंड के रजरप्पा मंदिर से पूजा कर लौट रहे थे। रविवार सुबह खैरा-सोनो मुख्य मार्ग पर मांगो बंदर के पास चालक को नींद आ गई। 50-60 की रफ्तार से चल रही कार सड़क किनारे पेड़ से टकरा गई। दुर्घटना में कार सवार 7 लोग घायल हुए। इनमें से 6 लोगों को मामूली चोटें आईं। शंकर कुमार के बेटे अंशु कुमार(14) के सिर में गंभीर चोट लगी। सभी घायलों को पहले सदर अस्पताल लाया गया। चिकित्सक डॉक्टर देवेंद्र कुमार ने प्रारंभिक इलाज के बाद अंशु को बेहतर इलाज के लिए पटना रेफर कर दिया। खैरा थानाध्यक्ष मिंटू कुमार सिंह ने बताया कि मामले की जानकारी मिल गई है। घायलों को अस्पताल भेजा गया है और मामले की जांच की जा रही है।

75 साल बाद राघोपुर दियारा को मिलेगी सड़क कनेक्टिविटी

पटना। राजधानी से राघोपुर दियारा को जोड़ने वाला कच्ची दरगाह-बिदुपुर सिक्स लेन पुल 23 जून को जनता के लिए खुल जाएगा। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पुल के एक लेन का उद्घाटन करेंगे। इस दौरान पथ निर्माण मंत्री नितिन नवीन और उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी भी मौजूद रहेंगे। यह भारत का सबसे लंबा केबल ब्रिज है, जिसका निर्माण एल एंड टी और देवू जॉइंट वेंचर ने किया है। पुल का निर्माण 16 जनवरी 2017 में शुरू हुआ था। इसमें कुल 67 पाए हैं। प्रोजेक्ट की कुल लागत 4988.40 करोड़ रुपये है। इसमें जमीन अधिग्रहण पर 696.60 करोड़ और पुल निर्माण पर 4291.80 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। अप्रोच रोड के साथ पुल की कुल लंबाई 22.760 किलोमीटर है। मुख्य पुल 9.76 किलोमीटर लंबा है। यह पुल पटना-बख्तियारपुर फोरलेन के सबलपुर से शुरू होकर वैशाली के चकसिकंदर और गाजीपुर चौक एनएच 103 पर समाप्त होता है। पुल की चौड़ाई 32 मीटर है और इसमें छह लेन हैं। इस पुल के बन जाने से राघोपुर दियारा के लोगों को नाव की यात्रा से मुक्ति मिलेगी। क्षेत्र में अस्पताल, फैक्ट्री, राष्ट्रीय बैंक और अच्छे कॉलेज जैसी बुनियादी सुविधाएं विकसित होंगी। यह महासेतु राघोपुर दियारा के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करेगा।

सीएम नीतीश ने क्यों बढ़ाई पेंशन की राशि?

तेजस्वी यादव ने बताई असली वजह, नए बयान से बिहार में सियासत तेज

पटना। बिहार सरकार ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन को 400 से बढ़ाकर प्रतिमाह 1100 रुपये कर दिया है। राजद नेता तेजस्वी यादव इसे टेंशन की परिणाम बता रहे। शनिवार को प्रेस-वार्ता कर उन्होंने कहा कि महागठबंधन की सरकार आ रही है, इसी टेंशन में एनडीए सरकार ने पेंशन की राशि बढ़ाई है। राजद ने पिछले वर्ष 16 दिसंबर को ही वादा किया था कि सत्ता मिलने पर वृद्धों, विधवाओं और दिव्यांगों को प्रतिमाह 1500 रुपये की पेंशन दी जाएगी।

सरकार हमारी नकल कर रही। उसके पास न तो सोच है, न विजन। तेजस्वी आगे-आगे हैं, और राज्य सरकार पीछे-पीछे।तेजस्वी ने कहा कि 20 वर्षों तक नीतीश सरकार ने देश में सबसे कम सामाजिक सुरक्षा पेंशन दी।

हमने पहले ही मांग की थी कि हमारी घोषणाओं को बजट-प्रस्ताव में सम्मिलित किया जाए, लेकिन सरकार ने ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उसे डर था कि श्रेय तेजस्वी को जाएगा। अब बिना बजटीय प्रविधान के सामाजिक सुरक्षा पेंशन में वृद्धि की घोषणा हुई है। बिना बजट के एक करोड़ नौ लाख 69 हजार 255 लोगों को यह पेंशन कैसे दी जाएगी। इसके लिए प्रतिमाह लगभग 767 करोड़ रुपये का अतिरिक्त खर्च करना होगा। अब हम सरकार को घेरेंगे और जन-हित में और योजनाओं पर अमल के लिए विवश करेंगे। तेजस्वी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के एक कार्यक्रम पर सरकारी खजाने से लगभग सौ करोड़ रुपये खर्च होते हैं। पिछले पांच चुनावों में मोदी की बिहार में 200 से अधिक रैलियां और जनसभाएं हुई हैं। उन आयोजनों पर लगभग 20 हजार करोड़ रुपये खर्च हुए। जनता की गाढ़ी कमाई लुटाई जा रही और बिहार बाढ़ में डूबे रहता है। इससे निजात के लिए सरकार राशि क्यों नहीं खर्च कर रही। पटना भी डूब जाता है, लेकिन ड्रेनेज सिस्टम ठीक नहीं किया जा रहा। अमित शाह कहते हैं कि बाढ़ नियंत्रण का काम होगा, तो पहले क्या वे बाढ़ के लिए निमंत्रण दे रहे थे। शाह कह चुके हैं कि चुनाव तक ही नीतीश कुमार हैं।

गुमटी संचालक की गोली मारकर हत्या

जांच में जुटी पुलिस

हाजीपुर। हाजीपुर-मुजफ्फरपुर ठल्न-22 काजीपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत एकारा ओवरब्रिज हाई स्कूल के निकट दिनदहाड़े बाइक सवार बदमाशों ने गुटका खरीदने के दौरान गुमटी संचालक सह स्कूल के नाइट गार्ड की गोली मारकर हत्या कर दिया। घटना को अंजाम देने के बाद बाइक सवार बदमाश मौके से हाजीपुर की तरफ फरार हो गया। गोली चलने की आवाज सुनकर आसपास के लोग एवं स्वजन जुट गए। घटना की जानकारी गाजीपुर थाना अध्यक्ष रूपेश कुमार को दी गई। घटना की सूचना मिलते ही रूपेश कुमार पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचकर आनन-फानन में इलाज के लिए सदर अस्पताल पहुंचाया। डॉक्टर ने जांच के बाद मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना पर गांव में कोहराम मच गया। स्वजन का रोते-रोते बुरा हाल है। मृतक स्थानीय स्वर्गीय मुसाफिर महतो के 50 वर्षीय पुत्र विनोद महतो थे। विनोद महतो उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय कुतुबपुर एकारा में पिछले कई वर्षो से नाइट गार्ड के रूप में कार्यरत थे। घटना की जानकारी मिलते ही सदर वन एसडीपीओ ओमप्रकाश नगर थाना अध्यक्ष सुनील कुमार अन्य पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिस बल सदर अस्पताल पहुंच गए। एसडीपीओ ने घटना की जानकारी मृतक के परिवार वालों से ली। मिली जानकारी के अनुसार एक बाइक पर सवार तीन बदमाश हाई स्कूल के निकट गुमटी से गुटखा खरीदने गया था। दुकानदार गुटका देने लगा, इसी दौरान बाइक सवार बदमाशों ने दुकानदार को गोली मार दी। दो गोली सीने में मारी गई है। सदर अस्पताल में डॉक्टर ने जांच के बाद मृत घोषित कर दिया। सदर अस्पताल पहुंची पुलिस शव का पोस्टमार्टम की प्रक्रिया में जुट गई। घटना की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर पहुंची पुलिस ने घटनास्थल पर लोगों से पूछताछ के बाद आसपास के सीसीटीवी फुटेज की जांच पड़ताल के पश्चात बदमाशों के भागने के दिशा में गिरफ्तारी के लिए छापेमारी में जुटी है इस संबंध में सदर एसडीपीओ ओमप्रकाश ने बताया कि हाई स्कूल के निकट एक गुमटी संचालक को बाइक सवार बदमाशों ने गोली मार कर हत्या कर दिया। घटना के संबंध में जानकारी लेने के पश्चात आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

सुलभ शौचालय संचालक निकला शराब तस्कर

मुजफ्फरपुर। कोर्ट कैंपस स्थित सुलभ शौचालय से एक शराब तस्कर को विदेशी शराब की कई बोतलों के साथ गिरफ्तार किया गया है। आरोपी कोर्ट परिसर में स्थित शौचालय का संचालन कर रहा था और उसी दौरान गुपचुप तरीके से शराब का अवैध कारोबार भी करता था। नगर थाना पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि न्यायालय परिसर में स्थित शौचालय के पास अवैध शराब की बड़ी खेप छुपाकर रखी गई है। सूचना के आधार पर नगर थाना की टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए छापेमारी की। पुलिस को देखते ही शौचालय कर्मी भागने लगा, जिसे खदेड़ कर मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया। तलाशी के दौरान शौचालय से कुल 11 टेट्रा पैक विदेशी शराब बरामद किए गए। इनमें से 9 बोतलें एक कार्टन में, एक बोतल आरोपी के पॉकिट से और एक कुर्सी के नीचे से बरामद की गई। गिरफ्तार तस्कर की पहचान जिले के साहेबगंज थाना क्षेत्र के राजेपुर निवासी ललन झा के पुत्र रणजीत झा के रूप में हुई है। शराब की बरामदगी के बाद कोर्ट परिसर में हड़कंप मच गया। पुलिस अब रणजीत झा से पूछताछ कर रही है ताकि यह पता चल सके कि वह शराब कहां से लाता था और किन-किन लोगों को इसकी आपूर्ति करता था। उसके बयान के आधार पर अन्य तस्करों की गिरफ्तारी के लिए भी छापेमारी की जा रही है। इस पूरे मामले पर नगर थाना प्रभारी शरत कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर कोर्ट परिसर स्थित शौचालय में छापेमारी की गई, जहां से एक व्यक्ति को विदेशी शराब के साथ रंगे हाथों पकड़ा गया।

वलीपुर डबल मर्डर केसः पूर्णिया सांसद पप्पू यादव ने परिजनों से की मुलाकात

लखीसराय। जिले के वलीपुर गांव में हुए डबल मर्डर केस को लेकर पूर्णिया के सांसद पप्पू यादव ने शनिवार को पीड़ित परिवार से मुलाकात की।

उन्होंने परिजनों को ढांढस बंधाया और घटना की कड़ी निंदा करते हुए बिहार सरकार व प्रशासन पर गंभीर आरोप लगाए। सांसद यादव ने कहा कि लखीसराय जिले में कानून-व्यवस्था पूरी तरह चरमरा चुकी है। उन्होंने आरोप लगाया कि जिले में सत्ता पक्ष और विपक्ष के कुछ लोग, जमीन माफिया, शराब तस्कर और अपराधी आपस में गठजोड़ कर अपराध को संरक्षण दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि वलीपुर की घटना इसी मिलीभगत और प्रशासनिक विफलता का स्पष्ट उदाहरण है। गौरतलब है कि 17 जून की रात वलीपुर पंचायत के मुखिया चंदन सिंह और वार्ड सदस्य प्रतिनिधि चंदन कुमार की अज्ञात अपराधियों ने अंधाधुंध फायरिंग कर हत्या कर दी थी। इस दोहरे हत्याकांड से पूरे गांव में भय और आक्रोश का माहौल है।

पप्पू यादव ने कहा कि इस जघन्य हत्याकांड ने लोकतंत्र और जनप्रतिनिधियों की सुरक्षा को कठघरे में खड़ा कर दिया है। यदि एक निर्वाचित मुखिया और वार्ड सदस्य सुरक्षित नहीं हैं, तो आम लोगों का क्या होगा? उन्होंने बिहार पुलिस महानिदेशक और लखीसराय एसपी से मांग की कि घटना में शामिल शूटरों और उन्हें संरक्षण देने वाले सफेदपोश लोगों को शीघ्र गिरफ्तार किया जाए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जल्द कार्रवाई नहीं हुई तो वे ह्यजस्टिस फॉर चंदनह्व अभियान के तहत सड़क से सदन तक आंदोलन छेड़ेंगे। सांसद ने मृतक मुखिया की पत्नी से मुलाकात कर उन्हें न्याय दिलाने का भरोसा दिलाया। उन्होंने कहा कि हम इस संघर्ष में आपके साथ हैं। पीड़ित परिवार को न्याय दिलाना हमारी प्राथमिकता है। पप्पू यादव ने बिहार की कानून-व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए कहा कि आज राज्य में आम आदमी खुद को असुरक्षित महसूस कर रहा है और सरकार पूरी तरह विफल साबित हो रही है।

10 लाख के गहने 15 अपराधियों ने लूटे

दरभंगा। शनिवार देर रात करीब 1:10 बजे 10 से 15 की संख्या में बदमाशों ने एक घर में धावा बोल दिया। अपराधियों ने मोहम्मद तुफैल अहमद के घर का गेट तोड़कर घुसपैठ की। घर के सभी कमरों को खोलकर लूटपाट की। महिलाओं के गहने और नकदी लेकर फरार हो गए। करीब 10 लाख के गहने और 8500 रुपए की लूट हुई है। मामला सदर थाना क्षेत्र के छोटाइपट्टी पंचायत के खेलही गांव का है। पीड़ित तुफैल अहमद ने बताया कि रात में सभी लोग सो रहे थे। करीब एक बजे गेट पर खट खट की आवाज आई। मैंने उठ कर पूछा कि कौन है, तभी अपराधियों ने गेट तोड़ दिया। गर्दन पकड़कर धमकाया और कहा कि चुप चाप लेटे रहो। मेरी बेटी को मारने लगे। बदमाशों ने कहा कि तुम नीचे चौकी की तरफ ही देखो, इधर उधर मत देखो। मैंने विनती की कि मेहमान (बेटी के पति) को कुछ नहीं करें। इसके बाद उन्हें थप्पड़ मार दिया। घर में ताला लगे कमरे को निशाना बनाया गया। करीब 25 से 30 मिनट तक ताला तोड़ने की कोशिश होती रही। इस दौरान कुछ अपराधी छत पर और कुछ घर के अंदर, कुछ आंगन के बाहर खड़े थे। तुफैल के नाती को बांध कर अपराधियों ने रखा था। पत्नी और बेटी से गहने उतरवा लिए। बच्ची के नाक-कान के गहने भी लूट लिए। तुफैल ने बताया कि उनके पास 1500 रुपये नकद था, वह भी बदमाशों ने ले लिया। अपराधियों ने घर के सभी पेटी, बक्सा और गोदरेज खंगाल डाले। बैग में रखा 7000 रुपये भी ले गए। वो पैसे घर के खर्च के लिए रखे थे। पत्नी, बेटी और बहू के सारे गहने लूट लिए गए। बदमाशों की संख्या 15 से अधिक भी हो सकती है। मुखिया प्रतिनिधि पप्पू ने बताया कि मारपीट कर लूट की घटना हुई है। अच्छे खासे गहनों की लूट हुई है। छह महीने में पंचायत में यह तीसरी बड़ी वारदात है। अपराधियों की संख्या ज्यादा थी। कुछ लोग छत पर थे, कुछ घर में लूट कर रहे थे। घटना की सूचना पर एसएसपी जगुनाथ रेड्डी जलारेड्डी खुद मौके पर पहुंचे। उन्होंने घटनास्थल का निरीक्षण किया। उनके साथ करीब आधा दर्जन थानों की पुलिस मौजूद थी। पुलिस ने कहा है कि टीम बना कर बदमाशों को पकड़ा जाएगा। एसएसपी जगुनाथ रेड्डी जलारेड्डी ने बताया कि जांच के लिए स्पेशल टीम बनाई गई है। टीम बदमाशों को पकड़ने में लगी हुई है। टेक्निकल सेल की मदद से कुछ लोगों की पहचान हुई है। कुछ सबूत भी मिले हैं। एक और टीम बनाई जाएगी। इस मामले में 2 टीम काम करेगी। स्थानीय लोगों से भी सहयोग लिया जा रहा है। हमने घटनास्थल को भी देखा है। जल्द ही अपराधियों की गिरफ्तारी की जाएगी।

जगन्नाथ रथयात्रा के पहले प्रभु जगन्नाथ को 108 कलशों से शाही स्नान कराया जाता है। फिर 15 दिन तक प्रभु जी को एक विशेष कक्ष में रखा जाता है। जिसे ओसर घर कहते हैं। आखिर उन्होंने क्यों एकांत में 15 दिन के लिए रखा जाता है और उसके बाद ही रथयात्रा प्रारंभ होती है? जानते हैं इस रहस्य को।

आखिर क्यों रथयात्रा से पहले 15 दिन तक एकांतवास में रहते हैं भगवान जगन्नाथ?

कथा के अनुसार प्रभु जगन्नाथ के कई भक्तों में से एक थे माधवदास। बचपन में ही उनके माता पिता शांत हो गए थे तो बड़े भाई के आग्रह पर उन्होंने विवाह कर लिया और अंत में भाई भी उन्हें छोड़कर संन्यासी बन गए तो उन्हें बहुत बुरा लगा। फिर एक दिन पत्नी का अचानक देहांत हो गया तो वे फिर से अकेले रह गए। पत्नी के ही कहने पर वे बाद में जगन्नाथ पुरी में जाकर प्रभु की भक्ति करने लगे।

माधवदास के संबंध में बहुत सारी कहानियां प्रचलित है उन्हीं में से एक कहानी है प्रभु जगन्नाथ के 15 दिन तक बीमार पड़ने की कहानी। प्रभु जगन्नाथ रथयात्रा के 15 दिन पहले बीमार पड़ जाते हैं और 15 दिन तक बीमार रहते हैं।

माधवदासजी जगन्नाथ पुरी में अकेले ही रहते थे। वे अकेले ही बैठे बैठे भजन किया करते थे और अपना सारा काम खुद ही करते थे। प्रभु जगन्नाथ ने उन्हें कई बार दर्शन दिए थे। वे नित्य प्रतिदिन श्री जगन्नाथ प्रभु का दर्शन करते थे और उन्हीं को अपना मित्र मानते थे। एक बार माधवदास जी को अतिसार (उलटी-दस्त) का रोग हो गया। वह इतने दुर्बल हो गए कि चलना-फिरना भी मुश्किल हो गया। फिर भी अपना सारा काम खुद किया करते थे।

उनके परिचितों ने कहा कि महाराज हम आपकी सेवा करें तो माधवदासजी ने कहा कि नहीं, मेरा ध्यान रखने वाले तो प्रभु श्रीजगन्नाथजी है। वे कर लेंगे मेरी देखभाल, वही मेरी रक्षा करेंगे।

फिर धीरे धीरे उनकी तबीयत और बिगड़ गई और वे उठने-बैठने में भी असमर्थ हो गए तब भगवान श्रीजगन्नाथ जी स्वयं सेवक बनकर इनके घर पहुंचे और माधवदासजी से कहा कि हम आपकी सेवा करें। उस वक्त माधवदासजी की बेसुध से ही थे। उनका इतना रोग बढ़ गया था की उन्हें पता भी नहीं चलता था कि कब मल-मूत्र त्याग देते थे और वस्त्र गंदे हो जाते थे।

भगवान जगन्नाथ ने उनकी 15 दिन तक खूब सेवा की। उनके गंदे कपड़ों को भी धोया और उन्हें नहलाया भी। जब माधवदास जी को होश आया, तब उन्होंने तुरंत पहचान लिया कि यह तो मेरे प्रभु ही हैं। यह देखकर माधवदासजी ने पूछा, प्रभु आप तो त्रिलोक के स्वामी हैं, आप मेरी सेवा कर रहे हैं। आप चाहते तो मेरा रोग क्षण में ही दूर कर सकते थे। परंतु आपने ऐसा न करके मेरी सेवा क्यों की?

प्रभु श्री जगन्नाथ जी ने कहा- देखो माधव! मुझसे भक्तों का कष्ट नहीं सहा जाता। इसी कारण तुम्हारी सेवा मैंने स्वयं की है। दूसरी बात यह कि जिसका जैसा प्रारब्ध होता है उसे तो वह भोगना ही पड़ता है। मैं नहीं चाहता था कि तुम्हें प्रारब्ध का भोगना न पड़े और फिर से जन्म लेना पड़े। अगर उसको भोगेगे-काटोगे नहीं तो इस जन्म में नहीं तो उसको भोगने के लिए फिर तुम्हें अगला जन्म लेना पड़ेगा। इसीलिए मैंने तुम्हारी सेवा की। परंतु तुम फिर भी कह रहे हो तो अभी तुम्हारे हिस्से के 15 दिन का प्रारब्ध का रोग और बचा है तो अब 15 दिन का रोग मैं ले लेता हूं और अब तुम मुक्त हो। इसके बाद प्रभु जगन्नाथ खुद 15 दिन के लिए बीमार पड़ गए।

इस घटना की स्मृति में तभी से रथयात्रा के पूर्व प्रभु जगन्नाथ बीमार पड़ जाते हैं। तब 15 दिन तक प्रभु जी को एक विशेष कक्ष में रखा जाता है। जिसे ओसर घर कहते हैं। इस 15 दिनों की अवधि में महाप्रभु को मंदिर के प्रमुख सेवकों और वैद्यों के अलावा कोई और नहीं देख सकता। इस दौरान मंदिर में महाप्रभु के प्रतिनिधि अलारनाथ जी की प्रतिमा स्थपित की जाती हैं तथा उनकी पूजा अर्चना की जाती है। 15 दिन बाद भगवान स्वस्थ होकर कक्ष से बाहर निकलते हैं और भक्तों को दर्शन देते हैं। जिसे नव यौवन नैत्र उत्सव भी कहते हैं। इसके बाद द्वितीया के दिन महाप्रभु श्री कृष्ण और बडे भाई बलराम जी तथा बहन सुभद्रा जी के साथ बाहर राजमार्ग पर आते हैं और रथ पर विराजमान होकर नगर भ्रमण पर निकलते हैं।

...तो इसलिए बांधा जाता है कलावा

हिंदू धर्म में किसी भी पूजा-पाठ या फिर यज्ञ, हवन आदि से समय पंडित (पुरोहित) यजमान की दायीं कलाई में कलावा बांधते हैं। कलावा को मौली और रक्षासूत्र के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन क्या कभी आपने ये सोचा है कि इसके पीछे क्या कारण है। अगर आपको लगता है कि इसके पीछे सिर्फ धार्मिक कारण है तो ऐसा नहीं है। जी हां, धार्मिक ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक कारणों से भी मौली बांधी जाती है।

देवी लक्ष्मी ने की कलावा बांधने की शुरुआत

शास्त्रों में ये कहा गया है कि कलावा या मौली बांधने का प्रारंभ माता लक्ष्मी और राजा बलि ने की थी। माना जाता है हाथ पर मौली बांझने से जीवन में आने वाले संकट से रक्षा होती है। कलावा को हमेशा बांधते समय एक मंत्र को बोला जाता है-

येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबल:, तेन त्वाम प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचल:।

कलावा धारण करने होती है इनकी कृपा

शास्त्रों में कहा गया है कि कलावा बांधने से त्रिदेव यानी ब्रह्मा, विष्णु और महेश का आशीर्वाद मिलता है। साथ ही लक्ष्मी, सरस्वती और पार्वती तीनों देवियों की अनुकूलता का भी फायदा मिलता है। जानें कलावा धारण करने को लेकर क्या कहता है विज्ञान विज्ञान के मुताबिक, शरीर के ज्यादातर अंगों तक जाने वाली नसें कलाई से होकर गुजरती हैं। वहीं जब कलाई पर मौली या कलावा बांधा जाता है तो इससे नसों की क्रिया नियंत्रित रहती हैं। इससे वात, पित्त और कफ की समानता बनी रहती है। माना ये भी जाता है कि कलावा बांधने से हृदय संबंधी रोग, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर और पैरालिसिस जैसे रोगों से काफी सुरक्षा होती है।

इन स्थानों पर मौली बांधने से मिलता है लाभ

मौली को शादी शुदा महिलाओं के बाएं हाथ और पुरुषों एवं अविवाहित कन्याओं के दाएं हाथ में बांधने का विधान है। चाबी के छल्ले, बही-खाता और तिजोरी जैसी जगहों पर पवित्र मौली बांधने से फायदा होता है, ऐसी मान्यताएं कहती हैं।

आर्थिक समस्याओं में कलावा

मान्यता है कि कलावे में देवी या देवता अदृश्य रूप में विराजमान रहते हैं। इसका निर्माण कच्चे सूत से तैयार होता है और यह कई रंगों जैसे पीला, सफेद, लाल या फिर नारंगी रंग से मिलकर बनता है। ऐसा माना जाता है कलाई पर इसे बांधने से आर्थिक समस्या भी दूर होती है।

वैजयंती की माला से करें विष्णु की उपासना

वैजयंती के वृक्ष पर बहुत ही सुंदर फूल उगते हैं। इसके फूल बहुत ही सुगंधित और सुंदर होते हैं। इसके बीजों की माला बनाई जाती है। वैजयंती के फूल भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को बहुत ही प्रिय है। आओ जानते हैं इसके 6 लाभ।

- वैजयंती फूलों का बहुत ही सौभाग्यशाली वृक्ष होता है। इसकी माला पहनने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। इस माला को किसी भी सोमवार अथवा शुक्रवार को गंगाजल या शुद्ध ताजे जल से धोकर धारण करना चाहिए।
- वैजयंती के बीजों की माला से भगवान विष्णु या सूर्यदेव की उपासना करने से ग्रह नक्षत्रों का प्रभाव खत्म हो जाता है। खासकर शनि का दोष समाप्त हो जाता है। इस माला को धारण करने से देवी लक्ष्मी भी प्रसन्न होती है।
- इसको धारण करने या प्रतिदिन इस माला से अपने ईष्ट का जप करने से नई शक्ति का संचार तथा आत्म-विश्वास में वृद्धि होती है।
- इस माला को धारण करने से मान सम्मान में वृद्धि होती है। मानसिक शांति प्राप्त होती है जिससे व्यक्ति अपने कार्य क्षेत्र में मन लगाकर कार्य करता है।
- मान्यता है कि पुष्य नक्षत्र में वैजयंती के बीजों की माला धारण करना बहुत ही शुभ फलदायक है। यह सभी तरह की मनोकामना पूर्ण करता है।
- वैजयंती माला से 'ऊं नम: भगवते वासुदेवाय' का मन्त्र नित्य जापने से विवाह में आ रही हर प्रकार की बाधा दूर हो जाती है। जप के बाद केले के पेड़ की पूजा करना चाहिए।

वैजयंती माला का महत्व : एक कथा के अनुसार इन्द्र ने अंहकारवश वैजयंतीमाला का अपमान किया था, परिणामस्वरूप महालक्ष्मी उनसे रुष्ट हो गईं और उन्हें दर-दर भटकना पड़ा था। देवराज इन्द्र अपने हाथी ऐरावत पर भ्रमण कर रहे थे। मार्ग में उनकी भेंट महर्षि दुर्वासा से हुई। उन्होंने इन्द्र को अपने गले से पुष्पमाला उतारकर भेंटस्वरूप दे दी। इन्द्र ने अभिमानवश उस पुष्पमाला को ऐरावत के गले में डाल दिया और ऐरावत ने उसे गले से उतारकर अपने पैरों तले रौंद डाला। अपने द्वारा दी हुई भेंट का अपमान देखकर महर्षि दुर्वासा को बहुत क्रोध आया। उन्होंने इन्द्र को लक्ष्मीहीन होने का श्राप दे दिया।

सियार, हंस, कौआ और हाथी सहित भगवान शनि के 9 वाहन बनाते हैं आपका भाग्य

हिन्दू धर्म में शनि एक देवता और नवग्रहों में एक प्रमुख ग्रह माने गए हैं। वे सूर्यदेव और छाया (संवर्णा) के पुत्र हैं। शनिदेव को न्याय का देवता माना जाता है। इस संबंध में मान्यता यह भी हैं कि शनि के प्रकोप से धनवान भी दरिद्र बन जाता है। कई लोग इन्हें कठोर मानते हैं, परंतु ऐसा सही नहीं है क्योंकि शनिदेव का न्याय निष्पक्ष होता है।

ज्योतिष शास्त्र में भी शनिदेव को बहुत अधिक महत्व प्राप्त हुआ है। शनिदेव के 9 वाहन माने जाते हैं और वे अलग-अलग वाहनों पर सवारी करते हुए उनके स्वरूप के अनुसार अलग-अलग प्रभाव भी देते हैं। अत- ऐसे समय में कुंडली में शनिदेव की स्थिति को देखते हुए उनके प्रकोप से बचने के लिए उनके अलग-अलग स्वरूपों की आराधना करनी चाहिए।

- **सियार**- यदि शनिदेव का वाहन सियार हो तो अशुभ सूचनाएं मिलने की संभावनाएं ज्यादा बढ़ जाती है, अत- ऐसी स्थिति निर्मित हो तो हिम्मत से काम लेना चाहिए। इस दौरान शुभ फल नही मिलता है।
- **हंस**- यदि भगवान शनि का वाहन हंस है तो यह ही बहुत शुभ होता है, क्योंकि इसे शनिदेव के सभी वाहनों में सबसे अच्छा वाहन कहा गया है। इस अवधि में आप अपनी बुद्धि औए मेहनत के बल पर अपने भाग्य का पूरा सहयोग ले सकते हैं तथा इस दौरान आर्थिक स्थिति में काफी सुधार भी देखने को मिलता है।
- **कौआ**- शनिदेव का वाहन कौआ यदि हैं तो हमें यह समय शांति और संयम से निकालना चाहिए, क्योंकि यदि शनि की सवारी कौआ हैं तो इस अवधि में घर-परिवार में कलह बढ़ने, ऑफिस में टकराव की स्थिति निर्मित होती है या यह किसी मुद्दे को लेकर कलह का संकेत भी माना जाता है, अत- इस समय किसी भी मसले को आसान बातचीत के जरिये हल करना अच्छा रहता है।
- **हाथी**- शनि का वाहन यदि हाथी हो तो इसे शुभ नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि यह आशा के विपरीत फल मिलने का समय होता है, अत- इस स्थिति में साहस और हिम्मत से काम लेना ही उचित रहता है।
- **मोर**- यदि शनिदेव का वाहन मोर हैं, यह शुभ फल देने वाला होता है। इस समय में मेहनत और भाग्य दोनों का अच्छा साथ मिलता है। इतना ही नहीं इस समयावधि के दौरान बड़ी-बड़ी परेशानी का हल समझदारी से पाया जा सकता है।
- **गधा**- जब शनिदेव का वाहन गधा होता है तो इसे शुभ नहीं माना जाता है और यह शुभ फलों में कमी देता है, अत- इस दौरान अधिक प्रयास के द्वारा ही कार्यों में सफलता प्राप्त की जा सकती है।
- **घोड़ा**- यदि शनिदेव का वाहन घोड़ा हैं, तो हमें शुभ फल मिलते हैं, क्योंकि घोड़ा शक्ति का प्रतीक माना जाता है। और इस समय व्यक्ति उर्जा और जोश से भरा होने के कारण इस दौरान समझदारी और संयम से हम शत्रुओं पर सरलता से विजय पा सकते हैं तथा कार्यक्षेत्र में सफलता मिल सकती हैं।
- **सिंह**- शनिदेव का वाहन सिंह हैं तो घोड़े की तरह ही सिंह भी शुभ फल देने वाला माना जाता है। अगर शत्रु परेशान कर रहा है तो इस समय में समझदारी और चतुराई के द्वार हम उसे परास्त कर सकते हैं।
- **भैंसा**- यदि भैंसा शनिदेव का वाहन हो तो इस समयावधि में मिलाजुला फल मिलता है। कहने का मतलब यह हैं कि इस दौरान समझदारी, होशियारी से किया गया कार्य ज्यादा बेहतर साबित होता है। यदि सावधानी हटी तो दुर्घटना घटी यानी सावधानी से काम नहीं किया तो बुरे फल मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

अब बीसीसीआई की अनुमति के बाद ही जीत का जश्न मना सकेंगे राज्य क्रिकेट बोर्ड

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने कर्नाटक में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की जीत के बाद जश्न के दौरान मची भगदड़ से सबक लेते हुए अब सख्त दिशानिर्देश जारी किये हैं। पिछले माह आरसीबी के इस जश्न के दौरान बेंगलुरु के चिदांबरम स्टेडियम में 11 लोगों की मौत हो गयी थी। बीसीसीआई का कहना है कि भविष्य में ऐसी घटना दोबारा नहीं हो इसके लिए अब सभी राज्यों के क्रिकेट बोर्डों को नियमों का पालन करना पड़ेगा। इसके तहत जीत के बाद कोई भी इवेंट या रोड शो के लिए बीसीसीआई से अनुमति लेनी होगी।

बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने पुष्टि की कि बोर्ड बेंगलुरु भगदड़ मामले को पूरी गंभीरता से ले रहा है और भविष्य में किसी भी हादस से बचने के लिए हर बात पर गंभीरता से विचार किया है। सैकिया के अनुसार आईपीएल के बाद जश्न मनाने के लिए सभी टीमों को उसके नियमों का पालना करना होगा। इसके तहत

कोई भी टीम ट्रॉफी जीतने के 3 से 4 दिन तक समारोह आयोजित नहीं कर सकेगी। जल्दबाजी में किसी जश्न का आयोजन नहीं होगा और खराब प्रबंधन से वह बच नहीं सकेगी। किसी भी इवेंट के आयोजन से पहले टीमों को बीसीसीआई से औपचारिक अनुमति लेनी होगी। बोर्ड की मंजूरी के बाद ही कोई इवेंट आयोजित किया जाएगा। किसी भी इवेंट में 4 से 5 स्तर की सुरक्षा होगी। इर स्तर पर एक स्थल यात्रा के दौरान बीच में होना चाहिये।

एयरपोर्ट से इवेंट स्थल तक सुरक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे किसी प्रकार की अव्यस्था नहीं होनी चाहिये। खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ के लिए पूरे इवेंट के दौरान सुरक्षा व्यवस्था होनी चाहिये। जिला पुलिस, राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन से इवेंट के लिए अनुमति जरुरी रहेगी। इवेंट को सुरक्षित रूप से आयोजित करने के लिए नागरिक और कानून प्रवर्तन निकायों की भी अनुमति जरुरी रहेगी। वहीं इससे पहले कर्नाटक सरकार ने भी जश्न को लेकर कड़े दिशानिर्देश दिये थे जिन्हें तोड़ने प जुर्माने के साथ ही सजा भी मिलेगी।

उबली हुई सब्जियां, नारियल पानी शामिल हैं नीरज चोपड़ा की डाइट में

नई दिल्ली (एजेंसी)। खेल प्रेमियों के लिए शुक्रवार का दिन खास रहा, जब ओलंपिक चैंपियन नीरज चोपड़ा ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए पेरिस डायमंड लीग का खिताब अपने नाम कर लिया। उन्होंने अपने पहले ही प्रयास में 88.16 मीटर दूर भाला फेंककर मुकाबले में बढ़त बना ली, जो अंत तक कायम रही। उनके पुराने प्रतिद्वंद्वी जूलियन वेबर 87.88 मीटर के थ्रो के साथ दूसरे स्थान पर रहे। यह जीत नीरज के लिए खास इसलिए भी रही क्योंकि इससे पहले वह दोहा डायमंड लीग और जानुज कुसोसिंस्की मेमोरियल में लगातार दो बार दूसरे स्थान पर रहे थे, जिनमें स्वर्ण पदक वेबर ने जीता था। नीरज की यह वापसी सिर्फ तकनीकी नहीं, मानसिक रूप से भी प्रेरणादायक रही। टोक्यो ओलंपिक 2020 में स्वर्ण पदक जीतकर वह ऐसा करने वाले पहले एशियाई भाला फेंक एथलीट बने थे। इसके बाद उन्होंने 2023 में वर्ल्ड चैंपियनशिप में गोल्ड जीतकर इतिहास रचा और फिर पेरिस ओलंपिक में रजत पदक हासिल किया। लगातार अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रदर्शन करते हुए नीरज ने खुद को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ भाला फेंक खिलाड़ियों में शामिल कर लिया है। खेल में उत्कृष्टता के पीछे सिर्फ अभ्यास नहीं, बल्कि अनुशासित जीवनशैली और सटीक डाइट का भी बड़ा योगदान होता है। नीरज चोपड़ा इसका जीता-जागता उदाहरण हैं। कभी पूर्ण रूप से शाकाहारी रहे नीरज अब प्रोटीन युक्त और बैलेंस्ड डाइट लेते हैं। उनका दिन नाश्ते में ओट्स, अंडे, फल और नारियल पानी से शुरू होता है। दोपहर को वे दही-चावल, दाल, सब्जियां और ग्रिल्ड चिकन लेते हैं, जबकि ट्रेनिंग के बीच चिया सीड्स, सूखे मेवे और फल उनके ऊर्जा स्रोत होते हैं। रात को उबली सब्जियां, सूप और सलाद लेते हैं और सोने से पहले दूध और खजूर से दिन खत्म करते हैं। नीरज मानते हैं कि प्राकृतिक और संतुलित आहार ही फिटनेस की कुंजी है। उनका कहना है कि यह डाइट सिर्फ एथलीट्स के लिए नहीं, बल्कि आम लोगों के लिए भी उपयोगी है, जो एक स्वस्थ जीवनशैली अपनाना चाहते हैं। तले-भुने भोजन से परहेज और पौष्टिक विकल्पों की प्राथमिकता ही उनके निरंतर प्रदर्शन का मूल मंत्र है।

इंग्लैंड के तेज गेंदबाज मार्क वुड की टेस्ट सीरीज में वापसी की उम्मीद

- आखिरी मुकाबले को बनाया लक्ष्य

लंदन (एजेंसी)। भारत के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेल रही इंग्लैंड टीम को तेज गेंदबाजों की चोट ने परेशान कर रखा है। 20 जून से शुरू हुए पहले टेस्ट में भी इंग्लैंड अपनी पूरी ताकत के साथ मैदान पर नहीं उतर सका। अब टीम के अनुभवी पेसर मार्क वुड ने अपनी संभावित वापसी को लेकर बड़ी जानकारी दी है। घुटने की सर्जरी के बाद रिहैबिलिटेशन से गुजर रहे वुड को उम्मीद है कि वह 31 जुलाई से ओवल में खेले जाने वाले सीरीज के पांचवें और आखिरी टेस्ट तक फिट होकर चयन के लिए उपलब्ध रहेंगे। 35 वर्षीय मार्क वुड को साल की शुरुआत में चैंपियंस ट्रॉफी के दौरान बाएं घुटने में चोट लगी थी, जिसके बाद मार्च में उनकी सर्जरी कराई गई थी। वुड ने एक मीडिया से बात करते हुए कहा, 'रिहैब अच्छा चल रहा है। मैंने हल्की गेंदबाजी शुरू कर दी है, इसलिए अब मैं वापसी की राह पर हूं।'

वुड ने माना कि वह अब भी भारत के खिलाफ इस सीरीज में खेलने की उम्मीद लगाए बैठे हैं और उनकी नजरें सीरीज के आखिरी टेस्ट पर टिकी हैं। उन्होंने कहा, 'मुझे अब भी इस सीरीज में खेलने की उम्मीद है, इसलिए मैं उन खिलाड़ियों पर नजर रख रहा हूं जिनसे मेरा सामना हो सकता है। मेरा ध्यान फिलहाल पांचवें टेस्ट पर है।'

हालांकि उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि ओवल टेस्ट में खेलना तय नहीं है और अंतिम फैसला उनकी फिटनेस पर निर्भर करेगा। ÷हो सकता है कि मैं आखिरी टेस्ट में भी नहीं खेल पाऊं, लेकिन मेरा पूरा ध्यान इस पर है कि मैं उस मैच में टीम के लिए योगदान दे सकूं,÷ वुड ने कहा। इंग्लैंड के लिए वुड की वापसी अहम साबित हो सकती है, खासकर तब जब जोफ्रा आर्चर, ओली स्टोन और मैथ्यू पॉट्स जैसे अन्य गेंदबाज भी चोटों से जूझ रहे हैं। ऐसे में वुड की फिटनेस टीम की गेंदबाजी लाइन-अप को मजबूती दे सकती है।

जसप्रीत बुमराह ने वसीम अकरम का रिकॉर्ड तोड़ा, सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले एशियाई बने

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट के दूसरे दिन जसप्रीत बुमराह भारतीय गेंदबाजों में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज रहे। मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, रवींद्र जडेजा जैसे गेंदबाजों ने कड़ी मेहनत की लेकिन उन्हें कोई सफलता नहीं मिली। बुमराह ने भारत के 471 रन पर ऑल आउट होने के बाद महत्वपूर्ण सफलताएं दिलाई और इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाज बेन डकेट और जैक क्रॉली के विकेट लिए। ऐसा करके बुमराह ने स्थ्रद्ध देशों (दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया) में सबसे ज्यादा विकेट लेने के मामले में पाकिस्तान के महान तेज गेंदबाज वसीम अकरम को पीछे छोड़ दिया। बुमराह ने दूसरे दिन के अंत तक कुल 2 विकेट झटके और

स्थ्रद्ध देशों में 60 पारियों में 148 विकेट लिए। उन्होंने स्थ्रद्ध देशों में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले एशियाई गेंदबाजों की सूची में वसीम अकरम को पीछे छोड़ दिया जिन्होंने 146 विकेट लिए थे। इसके बाद अनिल कुंबले (141), इशांत शर्मा (130) और मोहम्मद शमी (123) का नम्बर आता है। इससे पहले इंग्लैंड के मार्क वुड ने मौजूदा 'दुनिया के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज' जसप्रीत बुमराह की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह 'खेल को बदलने' की क्षमता रखते हैं। खेल के सभी प्रारूपों में अपने शानदार प्रदर्शन के बाद बुमराह दुनिया के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज बन गए हैं। 31 वर्षीय बुमराह को भारत की युवा टीम में इंग्लैंड के लिए सबसे बड़ा खतरा माना जाता है। वुड ने इस बात पर जोर दिया कि 'खतरनाक' बुमराह किसी भी खेल चरण में कहर बरपा सकते हैं। वुड ने कहा, 'वह सभी प्रारूपों में एक बेहतरीन गेंदबाज हैं जो वास्तव में खतरनाक हैं। मैं ईमानदारी से कह सकता हूं कि उन्हें समझना और उनका सामना करना वाकई मुश्किल है। वह जितना आप सोचते हैं उससे कहीं ज्यादा तेज हैं। वह इस समय दुनिया के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज हैं और वह मैच के किसी भी हिस्से में खतरनाक हैं। बुमराह खेल को बदल सकते हैं।'

कनाडा ने भारत-श्रीलंका में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए किया क्वालीफाई

ओंटारियो - कनाडा की पुरूष क्रिकेट टीम ने अमेरिकी क्वालीफायर में बहामास को सात विकेट से हराकर अगले साल भारत और श्रीलंका में होने वाले आईसीसी टी20 विश्व कप के लिए क्वालीफाई कर लिया। कनाडा की यह लगातार पांचवीं जीत थी। कनाडा ने पिछले साल वेस्टइंडीज और अमेरिका में हुआ टी20 विश्व कप भी खेला था। बीस टीमों के टूर्नामेंट में गत चैम्पियन भारत, श्रीलंका, अफगानिस्तान, आस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका, वेस्टइंडीज, आयरलैंड, न्यूजीलैंड और पाकिस्तान भी खेलेंगे। आईसीसी ने एक बयान में कहा, 'सात और टीमें अभी इन टीमों से जुड़ेंगी जिनमें से दो यूरोपीय क्वालीफायर (पांच से 11 जुलाई), दो अफ्रीकी क्वालीफायर (19 सितंबर से चार अक्टूबर) और तीन एशिया ईएपी क्वालीफायर (एक से 17 अक्टूबर) से आएंगी।' कनाडा ने यहां खेले गए क्वालीफायर में 57 रन का लक्ष्य छह ओवरों में हासिल कर लिया। पहले गेंदबाजी करते हुए कनाडा ने स्पिनर कलीम सना और शिवम शर्माके तीन तीन विकेट की मदद से बहामास को 19.5 ओवर में आउट कर दिया। इसके बाद दिलप्रीत बाजवा के नाबाद 36 रन की बदौलत लक्ष्य 5.3 ओवर में हासिल कर लिया।

तीसरे दिन काली पट्टी बांधकर मैदान में उतरे खिलाड़ी

लीड्स। भारत और इंग्लैंड के खिलाड़ियों ने पूर्व तेज गेंदबाज डेविड लॉरेंस के सम्मान में रविवार को यहां पहले टेस्ट क्रिकेट मैच के तीसरे दिन काली पट्टियां बांधी। लॉरेंस का रविवार को 61 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। लॉरेंस ने 1988 से 1992 के बीच इंग्लैंड के लिए पांच टेस्ट (18 विकेट) और एक वनडे (चार विकेट) खेला। लॉरेंस को सिड उपनाम से जाना जाता था। लॉरेंस इंग्लैंड की तरफ से खेलने वाले ब्रिटिश मूल के पहले अश्वेत क्रिकेटर थे। वह पिछले साल से मोटर न्यूरॉन बीमारी (एमएनडी) से जूझ रहे थे। भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने एक बयान में कहा, 'दोनों टीमों के खिलाड़ी इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर डेविड 'सिड' लॉरेंस को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए काली पट्टी बांधकर खेल रहे हैं। लॉरेंस का रविवार को निधन हो गया था।' लॉरेंस को 2024 में इस रोग का पता चला, जिसका कोई उपचार नहीं है। यह बीमारी मस्तिष्क और तंत्रिकाओं को प्रभावित करती है, जिससे मांसपेशियां कमजोर पड़ जाती हैं। ग्लूस्टरशर के दिग्गज खिलाड़ी लॉरेंस ने 185 प्रथम श्रेणी मैच में 515 विकेट और 113 लिस्ट ए मैच में 155 विकेट लिए। तेज गेंदबाज लॉरेंस 1992 में वेलिंगटन में न्यूजीलैंड के खिलाफ गेंदबाजी करते समय चोटिल हो गए थे जिसके बाद वह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में नहीं खेल पाए।

ऋषभ के गुलाटी लगाने पर बोले शास्त्री ये उसका अपना स्टाइल

लीड्स। भारतीय क्रिकेट टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत का एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। इमसें वह शतक लगाने के बाद गुलाटी लगाते हुए दिखे। अब इसी को लेकर

भारतीय टीम के पूर्व कोच रवि शास्त्री और दिग्गज बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा व पूर्व क्रिकेटकीप दिनेश कार्तिक की प्रतिक्रिकेया सामने आयी है। शास्त्री ने कहा कि यह उनका अपना ही स्टाइल है। ऋषभ ने 178 गेंदों में 134 रन बनाने के साथ ही अपना सातवां शतक लगाया। शास्त्री ने कहा कि पंत शायद बहुत कम उम्र से ही जिम्नास्टिक कर रहे हैं। शास्त्री ने कहा, 'इसमें कुछ गलत नहीं है। वह ऐसा ही है और उसे ऐसा ही रहने दें। वह अलग है। बहुत कम उम्र से ही उसने काफी जिम्नास्टिक किया है। उन्होंने मजाकिया अंदाज में कहा, 'अगर मैंने भी कोशिश की होता तो शायद सीधे पूल में जाता। ऋषभ ने साल 2022 में हुए कार हादसे के बाद वापसी करते हुए जिस प्रकार से खेल पर मैदान पर वापसी की है। इससे खेल के प्रति उनके जुनून का अंदाजा होता है। इतनी सारी सर्जरी के बाद इस तरह से उन्हें गुलाटी लगाते हुए देखकर सभी हैरान हुए हैं। वहीं बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा ने कहा, 'ऋषभ तो ऋषभ है और हमेशा कुछ अलग करता है। वह बहुत अच्छे से यह करता है। किसी ने सोचा नहीं था कि वह ऐसा करेगा। मैंने कभी कोशिश नहीं की। इसके लिए मुझे काफी अभ्यास करना होगा। वहीं पूर्व क्रिकेटर दिनेश कार्तिक ने कहा, 'मैं ऐसा कुछ नहीं कर सकता और न ही उसकी तरह बल्लेबाजी कर सकता हूं। दोनों मोर्चों पर विकेटकीपिंग और बल्लेबाजी वह अपेक्षाओं से परे प्रदर्शन करता है।

जो कुछ मिला उससे खुश हूं : रोहित

-25 साल पहले कुछ नहीं था

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाल में टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने वाले भारतीय एकदिवसीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा का कहना है कि उन्हें अपने करियर में किसी बात का पछतावा नहीं है। रोहित ने कहा कि उन्होंने जो भी हासिल किया उससे वह खुश हैं क्योंकि 25 साल पहले उनके पास कुछ नहीं था जबकि आज उन्होंने काफी कुछ हासिल कर लिया है। रोहित का कहना है कि जो भी लिखा गया है, वह हो रहा है और मैं इससे खुश हूं। किसी बात का पछतावा उनको नहीं है। रोहित की कप्तानी में भारतीय टीम ने दो आईसीसी ट्रॉफी जीती हैं हालांकि 2023 एकदिवसीय विश्वकप

के फाइनल में वह टीम को जीत नहीं दिला पाये थे। रोहित ने दिग्गज स्पिनर हरभजन सिंह और गीता बसरा के हू इज द बॉस? शो में कहा, मुझसे कई बार पूछा गया कि आपको जीवन में किस बात का पछतावा है? तो मैंने हमेशा सामने वाले से पूछा है कि किस बात का पछतावा? अगर मैं 25 साल पीछे जाऊं तो मुझे पता है कि मैं कहां था और मेरा जीवन कैसा था। मैं बहुत खुश हूं कि भगवान ने मुझे इतना सब कुछ दिया है, मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं इन सभी पुरस्कारों और हर चीज के साथ यहां बैठा रहूंगा। आपको केवल वही मिलता है जो आपके लिए लिखा गया है, इसलिए यह लिखा गया था और मैं इससे बहुत खुश हूं।रोहित ने साल 2007 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में डेब्यू किया था। इससे पहले वह अंडर 19 विश्व कप में भी खेले। घरेलू क्रिकेट में बेहतरीन प्रदर्शन के बाद उन्हें टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में डेब्यू का अवसर मिला। उनकी कप्तान में भारत को दो एशिया कप, एक टी20 विश्व कप और एक चैंपियंस ट्रॉफी के अलावा कई सीरीज में जीत मिली।

तीन शतक के बाद भी 500 से कम रन बनाने वाली तीसरी टीम बनी टीम इंडिया

लीड्स। यहां इंग्लैंड के खिलाफ पहले ही क्रिकेट टेस्ट मैच में भारतीय टीम की ओर से कप्तान शुभमन गिल 147 के अलावा यशस्वी जायसवाल 101 और ऋषभ पंत 134 ने भी शतक लगाये। इसके बाद भी भारतीय टीम के नाम एक शर्मनाक रिकार्ड दर्ज हुआ है। वह है तीन बल्लेबाजों के शतक के बाद भी पहली पारी में काफी कम स्कोर 471 रन बनना। इस प्रकार वह तीन शतकों के बाद भी 500 रन न बना पाने वाली तीसरी टीम बनी है। इससे पहले तीन खिलाड़ियों के शतकों के बाद 500 से कम स्कोर पर आउट होने वाली टीमें है। दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज। इससे पहले दक्षिण अफ्रीकी टीम ने साल 2016 में तीन बल्लेबाजों के शतक के बाद भी सबसे कम स्कोर बनाया था। इसके अलावा तीन बल्लेबाजों के शतक के बाद भी सबसे कम रन बनाने के मामले में ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज की टीमों का भी नाम है, ये सभी टीमें भी तीन बल्लेबाजों द्वारा शतक लगाने के बाद भी एक बार 500 रनों तक नहीं पहुंच पायी थी। भारतीय टीम की ओर से कप्तान शुभमन गिल ने सर्वाधिक 147 रनों की पारी खेली, वहीं ऋषभ पंत ने 134 तो यशस्वी जायसवाल ने 101 रन बनाए। दक्षिण अफ्रीका ने इंग्लैंड के खिलाफ सेंचुरियन में साल 2016 में तीन शतक के बाद भी 475 रन जबकि ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड के खिलाफ हेडिंग्ले में साल 1924 में तीन शतक के बाद भी 494 और वेस्टइंडीज ने भारत के खिलाफ कोलकाता में साल 2002 में 497 रन ही बनाये थे।

बल्लेबाजी स्टाइल में बदलाव से शुभमन बेहतर हुए : कोटक

लीड्स। इंग्लैंड दौरे की शुरुआत में ही भारतीय क्रिकेट टीम के नये कप्तान शुभमन गिल ने शानदार शतक लगाया है। इससे अंदाजा होता है कि शुभमन के हौंसले बुलंद हैं। भारतीय टीम के बल्लेबाजी कोच सितांशु कोटक ने भी कहा है कि शुभमन की बल्लेबाजी बेहतर होने का कारण बल्लेबाजी स्टाइल में बदलाव करना रहा है। कोटक के अनुसार शुभमन ने ऑस्ट्रेलिया दौरे में अपनी खराब बल्लेबाजी से सबक लेते हुए अपनी तकनीक में कई बदलाव किए हैं जिसका लाभ उन्हें मिला है। साथ ही कहा कि अभ्यास के दौरान ही जब वह नेट्स में बल्लेबाजी कर रहे थे तो उनमें बदलाव देखा गया था। कोटक ने कहा, 'ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद उन्होंने कुछ चीजों के बारे में विचार कर उनपर अमल किया। ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद चैंपियंस ट्रॉफी और फिर आईपीएल था, इसलिए वह शुभमन पर अधिक ध्यान नहीं दे पाये थे पर ये साफ है कि उन्होंने कुछ चीजों पर काम किया और जैसे ही मैंने उन्हें नेट्स में देखा, मैंने उनसे बात की कि 'आपने कुछ बदलाव किए हैं' और उन्होंने हां कहा। उन्हें इस बात का श्रेय जाता है कि उन्होंने अपना विश्लेषण किया और मुझे लगता है कि उन्होंने इसे बहुत अच्छी तरह से लागू भी किया।' शुभमन ने ऑस्ट्रेलिया में तीन टेस्ट खेलकर पांच पारियों में केवल 93 रन बनाए थे। वहीं अब कप्तानी करते हुए उन्होंने एक ही पारी में इससे अधिक रन बना लिए हैं। उनकी 147 रनों की पारी से भारतीय टीम पहली पारी में 471 रन तक पहुंची हैं जिसके जवाब में इंग्लैंड ने दूसरे दिन तीन विकेट पर 209 रन बनाये।

बुमराह को बार-बार गेंदबाजी के लिए लगाने से उनपर दबाव पड़ेगा : कार्तिक

लीड्स। पूर्व क्रिकेटर दिनेश कार्तिक ने कहा है कि मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह पर जरुरत से अधिक दबाव नुकसानदेह रहेगा। बुमराह ने इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट के दूसरे दिन ने 13 ओवर गेंदबाजी की थी और तीन विकेट लिए थे। वहीं अन्य गेंदबाज मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, रवींद्र जडेजा और शार्दुल ठाकुर ने 36 ओवर किये पर एक भी विकेट नहीं ले पाये। ऐसे में विकेट के लिए बार-बार उन्हें लाना पड रहा था। कार्तिक ने इसी को लेकर चिंता जताई और कहा है कि कप्तान को बुमराह पर ज्यादा दबाव नहीं डालने अन्य गेंदबाजों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित करना होगा। इस पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज ने कहा, 'बुमराह और बाकी गेंदबाजों के बीच बहुत ज्यादा अंतर रहा। इंग्लैंड के बल्लेबाजों को देखकर लग रहा था कि वे किसी प्रका बुमराह का स्पेल निकला देना चाह रहे थे जिससे उनके पास बाद के ओवरों में अधिक अच्छा अवसर रहे।' इससे भारतीय कप्तान पर दबाव पड़ेगा और वह बुमराह के पास जाएंगे।' साथ ही कहा कि बुमराह को अपने शरीर का भी ध्यान रखना होगा.' कार्तिक ने साथ ही कहा,' ऑस्ट्रेलिया दौरे के पांचवें टेस्ट में थकान के कारण ही बुमराह ने कप्तानी की दौड़ से अपने को बाहर कर लिया था। उन्होंने इंग्लैंड दौरे के पहले ही घोषणा कर दी है कि वह इस सीरीज में केवल तीन टेस्ट ही खेल सकते हैं। एक दिन में जब बड़ी मुश्किल से 60 ओवर फेंके जाते हैं तब बुमराह ने पहले ही दिन 13 ओवर फेंक दिए। इससे साफ है कि हर बार जब आपको विकेट की जरूरत होती है, तो बुमराह को लाना पड़ा।' कार्तिक ने साथ ही कहा,' वह हमेशा टीम के लिए अधिक से अधिक विकेट लेते हैं। इसलिए आप उस आदत में पड़ जाते हैं पर दूसरों को निश्चित रूप से प्रेरित करने का तरीका अब कप्तान को तलाश होगा। वहीं अन्य गेंदबाजों को भी कहना होगा कि मैं तैयार हूं, मुझे गेंद दो, यह मेरी योजना है, मैं गेंदबाज करना चाहता हूं।

जो रूट ने जयसूर्या को पछाड़ा, अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले 9वें खिलाड़ी बने

लीड्स (यूके) (एजेंसी)। इंग्लैंड के बल्लेबाज जो रूट श्रीलंका के दिग्गज सनथ जयसूर्या को पछाड़कर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले 9वें खिलाड़ी बन गए। रूट ने लीड्स में भारत के खिलाफ पहले टेस्ट मैच के दौरान चार्ट में यह बढ़त हासिल की। ??अपनी पारी के दौरान उन्होंने 58 गेंदों में दो चौकों की मदद से 28 रन बनाए। वे अंततः 25 पारियों में 10वीं बार जसप्रीत बुमराह का शिकार बने, उनके खिलाफ उनका औसत 29 रहा।

रूट ने 366 अंतरराष्ट्रीय मैचों की 479 पारियों में 49.30 की औसत से 21,053 रन बनाए हैं जिसमें 54 शतक और 112 अर्द्धशतक शामिल हैं, उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 262 है। वे टेस्ट और वनडे सहित सभी प्रारूपों में इंग्लैंड के लिए अब तक के सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। दूसरी ओर, श्रीलंका के दिग्गज जयसूर्या ने 651 पारियों में 34.14 की औसत से 42 शतकों और 103 अर्द्धशतकों की मदद से 21,032 रन बनाए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 340 है।

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी भारतीय आइकन सचिन तेंदुलकर हैं। उन्होंने 664 मैचों की 782 पारियों में 48.52 की औसत से 100 शतकों और 164 अर्द्धशतकों की मदद से 34,357 रन बनाए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 248* है। टेस्ट क्रिकेट में रूट ने 154 मैचों की 280 पारियों में 50.71 की औसत से 36 शतकों और 65 अर्द्धशतकों की मदद से 13,034 रन बनाए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 262 है।

रूट ने वनडे में 180 मैचों और 169 पारियों में 49.14 की औसत से 7,126 रन बनाए हैं, जिसमें 18 शतक और 42 अर्द्धशतक शामिल हैं। 32 टी20आई और 30 पारियों में उन्होंने 35.72 की औसत से 893 रन बनाए हैं, जिसमें 126.30 की स्ट्राइक रेट और पांच अर्धशतक शामिल हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 90* है।

मैच की बात करें तो इंग्लैंड ने दूसरे दिन 209/3 के स्कोर पर दिन का अंत किया जिसमें ओली पोप (100*) और हैरी ब्रुक (0*) नाबाद रहे। बेन डकेट (94 गेंदों में नौ चौकों की मदद से 62) के अर्धशतक और पोप के साथ उनकी शतकीय साझेदारी ने जैक क्रॉली के जल्दी आउट होने के बाद इंग्लैंड को बढ़त दिलाई। जसप्रीत बुमराह (तीन विकेट) ने समय पर स्ट्राइक देकर इंग्लैंड के लिए मुश्किलें खड़ी कीं, लेकिन उन्हें अन्य गेंदबाजों से बमुश्किल ही सहयोग मिला। इंग्लैंड अभी 262 रन से पीछे है।

इससे पूर्व पहले दिन इंग्लैंड ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। यशस्वी जायसवाल (159 गेंदों में 101 रन, 16 चौके), कप्तान शुभमन गिल (227 गेंदों में 147 रन, 19 चौके और एक

छक्का) और ऋषभ पंत (178 गेंदों में 134 रन, 12 चौके और छह छक्के) के शतकों की बदौलत भारत ने 471 रन बनाए। एक समय स्कोर 430/4 था, कप्तान बेन स्टोक्स (4/66) और जोश टंग (4/86) ने टीम को ढेर कर दिया। लेकिन जायसवाल और पंत की पारियों ने टीम को संभाला और 471 रन बनाने में मदद की।

महिला पायलट यौन शोषण मामले में कैब ड्रायवर समेत 3 पर मामला दर्ज

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई पुलिस ने कैब ड्राइवर समेत तीन पर एक महिला पायलट के यौन शोषण का मामला दर्ज कराया है। घटना 19 जून की रात की है, जब महिला पायलट साउथ मुंबई से अपने घर घाटकोपर जा रही थी। पुलिस ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। महिला पायलट ने बताया कि उसका पति नौसेना में अधिकारी है, लेकिन उन्हें अब तक सरकारी आवास नहीं मिला है। इस वजह से पति नौसेना के आवासीय परिसर में रहते हैं, जबकि वह घाटकोपर में रहती है। पुलिस के मुताबिक महिला का आरोप है कि कैब ड्राइवर ने 25 मिनट बाद रूट बदल दिया और दो अन्य पुरुषों को कैब में बैठा लिया। उनमें से एक पीछे की सीट पर महिला के पास बैठा था। उसने महिला को गलत ढंग से छुआ। जब महिला ने इसका विरोध किया तो उस शख्स ने महिला को धमकाया। इस दौरान कैब ड्राइवर ने कुछ नहीं कहा। आगे कुछ दूरी पर पुलिस की चेकिंग चल रही थी। यह देखकर दोनों पुरुष कैब से उतरकर भाग गए। घर पहुंचने पर महिला ने ड्राइवर से उन पुरुषों को कैब में बैठाने की वजह पूछी तो ड्राइवर ने कोई जवाब नहीं दिया। अगले दिन सुबह जब महिला ने अपने पति को पूरी घटना बताई, तब दंपती ने घाटकोपर थाने में मामला दर्ज कराया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सीट पर बैठने को लेकर ट्रेन में विवाद, लोगों ने युवक को पीट-पीट कर मार डाला

बागपत (एजेंसी)। यूपी के बागपत में ट्रेन में सीट के विवाद में एक युवक की पीट-पीटकर हत्या कर दी। युवक सहारनपुर-दिल्ली ट्रेन से बागपत आ रहा था। फखरपुर स्टेशन के पास सीट पर बैठने को लेकर उसका विवाद हो गया। 15 से 20 लोगों ने लात-घूंसों और बेल्ट से उसकी जमकर पिटाई कर दी। बागपत से 10 किमी पहले खेकड़ा स्टेशन पर ट्रेन रुकी तो आरोपी उतरकर भाग गए। ट्रेन में सवार युवक के एक साथी ने जीआरपी और परिवार को सूचना दी। घायल युवक को ट्रेन से उतारकर अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने बताया कि दीपक दिल्ली में नौकरी करता था और हर शुक्रवार दिल्ली से बागपत अपने घर आता था। घटना शुक्रवार की है, लेकिन इसका वीडियो शनिवार को सामने आया है। बता दें दो दिन पहले झांसी में भी वंदे भारत एक्सप्रेस में भी सीट एक्सचेंज को लेकर एक यात्री के साथ मारपीट हुई थी।

मानसरोवर की झील में स्नान पर प्रतिबंध है

देहरादून (एजेंसी)। चीन ने 5 साल बाद मानसरोवर यात्रा के लिए रास्ता खोल दिया है। चीन ने मानसरोवर यात्रियों के लिये इस बार कड़ी गाइडलाइन तैयार की है। मानसरोवर जाने वाले सभी श्रद्धालुओं को चीन ने चेतावनी है। यात्री पवित्र झील में स्नान नहीं करेंगे। पवित्र झील का जल बोतल में भरकर ला सकते हैं। चीन के सुरक्षाकर्मी भारतीय श्रद्धालुओं के सभी इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस को लगातार चेक कर रहे हैं। श्रद्धालुओं के ऊपर चीन द्वारा कड़ी निगाहें रखी जा रही है। मानसरोवर के लिए पहला जत्था नाथुला दर्रे से रवाना हो चुका है। उत्तराखंड के लिपूलेख दर्रे से जाने वाला पहला जत्था 30 जून को दिल्ली से रवाना होगा। 4 जुलाई को टनकपुर पहुंचेगा। यहां से चीन के ताकलाकोट के लिए रवाना होगा। यह जत्था एक रात के लिए नाभीटांग में रुकेगा। इसके बाद चीन के अधिकारी यात्रियों की निगरानी और देखरेख करेंगे। यहां से करीब तीन किलोमीटर की यात्रा पैदल होती है।

हुगली में बीजेपी नेता का शव घर में लटका मिला, पुलिस जांच में जुटी

हुगली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में हुगली जिले के गोघाट क्षेत्र में शनिवार को बीजेपी के अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष शेख बकीबुल्ला का शव उनके आवास की दूसरी मंजिल की बालकनी में लटका मिला। इस संबंध में पुलिस ने बताया सूचना पर जब पुलिस टीम मृतक के शव को कब्जे में लेने उनके घर पहुंची तो स्थानीय लोगों ने प्रदर्शन किया। बकीबुल्ला की पत्नी ने कहा कि रात का खाना खाने के बाद वह अपना फोन देख रहे थे और उन्होंने कहा था कि वह बाद में सो जाएंगे। मुझे नहीं पता कि वह कब बालकनी में चले गए। गोघाट के एक बीजेपी नेता ने कहा कि बकीबुल्ला क्षेत्र में पार्टी की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। उन्होंने कहा कि हम यह तय करेंगे कि उन्हें न्याय मिले। जिले के टीएमसी नेताओं ने मांग की है कि घटना के पीछे का 'सच' सामने आना चाहिए। फिलहाल पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी है।

जांच की आड़ में कुख्यात अपराधियों के घर में नहीं घुस सकती पुलिस : हाईकोर्ट

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल हाईकोर्ट ने कहा है कि पुलिस को जांच की आड़ में संदिग्ध व्यक्तियों और कुख्यात अपराधियों के दरवाजे खटखटाने या रात में उनके घरों में घुसने का कोई अधिकार नहीं है। न्यायमूर्ति वी जी अरुण ने यह फैसला एक व्यक्ति की याचिका पर सुनाया। जिस याचिका में आरोप लगाया गया है कि उस व्यक्ति ने पुलिस अधिकारियों को तब अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने से रोका, जब पुलिस ने उसे कुख्यात अपराधियों से जुड़ी जांच के दौरान देर रात घर से बाहर आने को कहा था। याचिका स्वीकार करते हुए कोर्ट ने उस व्यक्ति के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी और उससे संबंधित सभी कार्यवाही को रद्द कर दिया और कहा कि जांच की आड़ में पुलिस कुख्यात अपराधियों के दरवाजे नहीं खटखटा सकती या उनके घरों में जबरन नहीं घुस सकती है। कोर्ट ने कहा कि पुलिस अधिकारियों को यह समझना चाहिए कि घर की अवधारणा आवास के रूप में अपनी भौतिक अभिव्यक्ति से परे है और भावनात्मक एवं सामाजिक आयामों के एक समृद्ध ताने-बाने को समेटे हुए है। कोर्ट ने कहा कि दूसरे शब्दों कहे कि हर आदमी का घर उसका महल या मंदिर होता है। किसी व्यक्ति के जीवन के अधिकार में गरिमा के साथ जीने का अधिकार शामिल है और गरिमा से समझौता नहीं किया जा सकता।

मोरारी बापू से मिले बाबा रामदेव और बोले- बापू महापुरुष, उनकी आलोचना उचित नहीं

-रामकथा के अंतिम दिन भी बापू ने मांगी क्षमा

वाराणसी (एजेंसी)। प्रसिद्ध कथा वाचक मोरारी बापू की नौ दिवसीय रामकथा का रविवार को काशी में समापन हो गया। कथा के अंतिम दिन बापू ने यह कहते हुए एक बार फिर सभी महापुरुषों से क्षमा मांगी कि उन्हें लग रहा है मानो कथा अभी अधूरी है। बापू इसी के साथ वचन दिया कि अगली बार वे काशी कबीर मानस लेकर आएंगे। इस अवसर पर योगगुरु बाबा रामदेव विशेष रूप से बापू से मिलने पहुंचे थे। बाबा रामदेव ने यहां कहा कि बापू की आलोचना न तो उचित है और न ही आवश्यक। बापू तो राष्ट्र और संस्कृति की धरोहर हैं। वे बचपन से रामकथा कहते आ रहे हैं। उनके जीवन का उद्देश्य केवल राम की महिमा का गुणगान है। इसी के साथ रामदेव ने बापू को महापुरुष की संज्ञा भी दी।

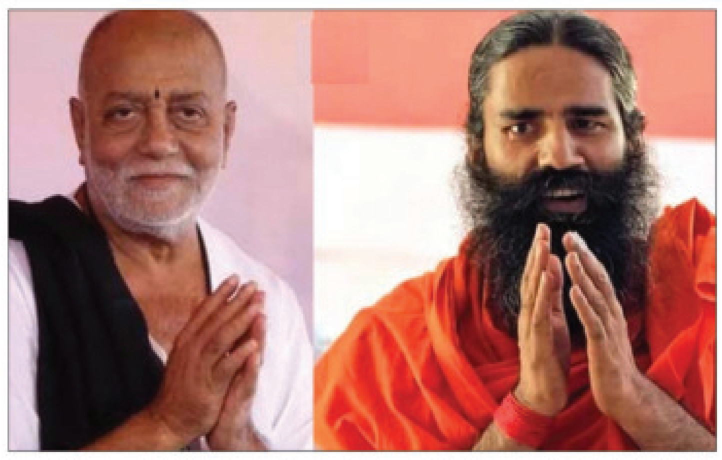

इस अवसर पर मोरारी बापू ने कहा, योग जरूरी है, लेकिन परमात्मा और परस्पर प्रेम उससे भी अधिक जरूरी है। अगर प्रेम नहीं है, तो योग, ज्ञान, कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं रह जाता। उन्होंने सिंदूर की आध्यात्मिक व्याख्या करते हुए कहा, शिव-पार्वती का सिंदूरदान आधि-दैविक है, जबकि राम द्वारा जानकी की मांग भरना आध्यात्मिक है। अगर कोई बुद्ध पुरुष हमें अपनाता है, तो वही हमारे जीवन का सिंदूर है। बापू ने इस बात पर भी बल दिया कि हिंदू सनातन धर्म सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि यह सभी को स्वीकार करता है, सभी का सम्मान करता है।

बापू के आगे बेटा क्या बोलेगा : रामदेव

बाबा रामदेव इस अवसर पर भावुक हो गए और कहा, कि हमें नहीं पता था कि काशी आना है, लेकिन बापू और शिव की कृपा से आ गए। हम सोच रहे थे कि क्या कहें? पर बाप के सामने बेटा क्या बोलेगा। उन्होंने मंच से कहा कि बापू के दो पुत्र हैं - एक पार्थिक और दूसरा पारमार्थिक, और हम सभी उनकी आत्मिक संतान हैं। बाबा रामदेव ने आगे कहा कि बापू की आलोचना अगर विधर्मी करते तो समझ आता, लेकिन सनातनी खुद क्यों तनातनी में लगे हैं? यह सनातन धर्म की संस्कृति नहीं है।

बाबा रामदेव ने मंच से स्पष्ट किया कि बापू और मैं किसी भी राजनीति से नहीं जुड़े हैं। न हमें किसी नेता ने बुलाया है, न हम किसी राजनीतिक उद्देश्य से यहां हैं। उन्होंने कहा कि बापू के पास इतनी शक्ति है कि वह राजनेता बना सकते हैं, लेकिन कोई राजनेता उन्हें नहीं बना सकता।

पहले कुछ ही मुसलमान आते थे अब संख्या बढ़ गई

बाबा रामदेव ने कहा कि कथा स्थल पर पहले कुछ ही मुसलमान आते थे, लेकिन अब उनकी संख्या बढ़ गई है, जो सनातन धर्म की व्यापकता और समावेशी स्वरूप को दर्शाता है। काशी की यह कथा केवल राम की महिमा तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह प्रेम, स्वीकार्यता और सनातन संस्कृति का ऐसा मंच बन गई, जहां से बापू और बाबा रामदेव ने समाज को विचार और आत्मचिंतन का संदेश दिया। मोरारी बापू का यह कथन कि मैं नित्य प्रसन्न हूं, क्योंकि मेरे बुद्ध पुरुष ने मेरी मांग भरी है, आध्यात्मिक प्रेम की गहराई को दर्शाता है, जो सनातन संस्कृति का मूल है।

आरएसएस के प्रांत प्रचारकों की बैठक 4 जुलाई से

- बैठक में भाजपा अपने नए राष्ट्रीय अध्यक्ष की कर सकती है घोषणा

नागपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सभी प्रमुख अधिकारी अपनी क्षेत्रीय इकाइयों के पदाधिकारियों के साथ वार्षिक प्रांत प्रचारक बैठक के लिए जुलाई के पहले सप्ताह में राष्ट्रीय राजधानी में होंगे। बैठक में 11 क्षेत्रीय प्रमुख, 46 प्रचारक और विभिन्न प्रांतों से वरिष्ठ आरएसएस स्वयंसेवक भाग लेंगे। इसमें मई और जून में आयोजित प्रशिक्षण सत्रों का भी मूल्यांकन किया जाएगा और अगले वर्ष के कार्यक्रमों की रूपरेखा को अंतिम रूप दिया जाएगा। इसका लक्ष्य आंतरिक समन्वय को तेज करना और आगामी संगठनात्मक मील के पत्थर और सामाजिक-राष्ट्रीय पहलों के लिए रणनीति को बढ़ाना है।

4 जुलाई से शुरू होने वाली तीन दिवसीय बैठक की अध्यक्षता आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत और महासचिव दत्तात्रेय होसबोले करेंगे। परंपरागत रूप से प्रांत प्रचारक बैठक वह जगह होती है जहां संघ पूर्णकालिक प्रचारकों की भूमिकाओं की समीक्षा करता है, और कभी-कभी उन्हें भाजपा में प्रतिनियुक्त करता हैफ। हालांकि ऐसा काम किए हुए कुछ समय हो गया है। बैठक का समय महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह ऐसे समय में हो रही है जब भाजपा द्वारा अपने नए राष्ट्रीय अध्यक्ष की घोषणा किए जाने की उम्मीद है। यह उच्च स्तरीय बैठक संगठनात्मक गतिविधियों की समीक्षा, आंतरिक समन्वय को मजबूत करने और भविष्य की पहल की योजना बनाने पर केंद्रित होगी। एक प्रमुख एजेंडा संघ के शताब्दी समारोह की तैयारी होगी, जिसमें देश भर में बड़े पैमाने पर भागीदारी की योजना बनाई गई है।

राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम में कई स्तरों पर खामियां हैं : रमेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने आरोप लगाया कि राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम में कई स्तरों पर खामियां हैं और विभिन्न शहरों में इसके तहत आवंटित धन का पूरा उपयोग भी नहीं किया गया।

पूर्व पर्यावरण मंत्री रमेश ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम कई स्तरों पर नीतिगत खामियों से ग्रसित है। इसकी सबसे बड़ी कमी यह रही है कि इस कार्यक्रम का फोकस पीएम 2.5 (2.5 माइक्रोन से छोटे कणों) के बजाय पीएम10 (10 माइक्रोन से छोटे कणों) को मापने और निगरानी तक सीमित कर दिया गया, जबकि हर साल हजारों लोगों की मौत का मुख्य कारण पीएम 2.5 होता है। .

उन्होंने कहा कि अब यह भी सामने आ रहा है कि कार्यक्रम का दायरा सीमित किए जाने के बावजूद धन का उपयोग बेहद निराशाजनक रहा है। रमेश के अनुसार, इस योजना के तहत धन पाने वाले 130 शहरों ने औसतन केवल 70 से 78.5 प्रतिशत तक ही धन का उपयोग किया है।

उन्होंने कहा कि दिल्ली जैसे शहर में जहां हर साल वायु प्रदूषण एक सार्वजनिक स्वास्थ्य की आपात स्थिति और राष्ट्रीय शर्म का विषय बन जाता है, यहां भी इस योजना के तहत मिले धन का महज 33 प्रतिशत से भी कम खर्च किया गया है। कांग्रेस महासचिव ने दावा किया कि फरीदाबाद ने सिर्फ 26.7 प्रतिशत, नोएडा ने 10 प्रतिशत से भी कम, और यहां तक कि प्रधानमंत्री का निर्वाचन क्षेत्र वाराणसी भी सिर्फ 48.85 प्रतिशत धन का उपयोग कर पाया, जो कि राष्ट्रीय औसत से काफी कम है।

मेघालय 'हनीमून मर्डर' मामला: पुलिस ने प्रॉपर्टी ब्रोकर को किया गिरफ्तार, काले बैग के बारे में करेगी पूछताछ

-राजा की हत्या के बाद विशाल को ब्रोकर जेम्स ने फ्लैट किराए पर दिया था

शिलांग (एजेंसी)। इंदौर के राजा रघुवंशी हत्याकांड में अब एक और गिरफ्तारी हुई है। शिलॉन्ग पुलिस ने शनिवार रात प्रॉपर्टी ब्रोकर सिलोम जेम्स को गिरफ्तार किया है। ये ब्रोकर वही है, जिसने राजा हत्याकांड के आरोपी विशाल को इंदौर के देवास नाका का फ्लैट किराए पर दिया था। सरेंडर से पहले इसी फ्लैट में सोनम ने फरारी काटी थी। सिलोम जेम्स को शिलॉन्ग पुलिस ने सबूत छिपाने, नष्ट करने के मामले में सहआरोपी बनाया है।

प्रॉपर्टी ब्रोकर ने फ्लैट के गार्ड के साथ मिलकर उस बैग को गायब किया था, जिसमें पिस्टल और पांच लाख रुपए के साथ राजा के जेवर होने की बात कही थी। उधर, सोनम और राज को 13 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। शिलॉन्ग पुलिस ने सोनम के परिवार, ऑफिस, गोदाम के कर्मचारियों और राजा के परिजन के बयान दर्ज किए हैं।

शिलॉन्ग पुलिस उस काले रंग के बैग की तलाश में इंदौर आई थी, जिसके बारे में सोनम ने बताया था।

सोनम ने पुलिस से कहा था कि राज कुशवाहा ने राजा को ठिकाने लगाने के लिए एक पिस्टल खरीदी थी। पहले पिस्टल से ही राजा को मारने का प्लान था। बाद में धारदार हथियार से मारा। पिस्टल और पांच लाख रुपए काले बैग में कपड़ों के बीच छिपाकर रखे थे। ये बैग सोनम के प्रेमी राज कुशवाह ने विशाल के जरिए ऑटो रिक्शा बुक करके सोनम के पास देवास नाका के फ्लैट में भेजा था। 8 जून को इंदौर से निकलते समय सोनम बैग फ्लैट में छोड़कर आई थी। फ्लैट की चाबी गार्ड को सौंपकर दी थी। सोनम के जाने के बाद 10 जून को सिलोम जेम्स अपनी कार से फ्लैट में पहुंचा और बैग उठाकर ले गया।

शनिवार को शिलांग पुलिस ने ड्राइवर से पूछताछ के बाद सिलोम को दबोच लिया जो दिल्ली भागने की फिराक में था। उसे कोर्ट में पेश कर रिमांड पर लिया जाएगा। शिलॉन्ग पुलिस उसे साथ में ले जा सकती है। वहीं, पुलिस को अब काले बैग की तलाश है, जिसके बारे में सिलोम जेम्स जानता है। गार्ड को भी शिलॉन्ग पुलिस तलाश रही है। वह भी शक के दायरे में है। इस मामले में इंदौर पुलिस ने बताया कि सिलोम जेम्स को शिलॉन्ग पुलिस ने सबूतों के आधार पर गिरफ्तार किया है।

एडिशनल डीसीपी ने बताया कि शिलॉन्ग से आई एसआईटी सिलोम जेम्स की गिरफ्तारी के बाद उससे पूछताछ कर रही है। पूछे जाने पर कि क्या शिलॉन्ग पुलिस जेम्स के अपने साथ लेकर मेघालय जाएगी? उन्होंने कहा कि अभी इस मामले में कोई आधिकारिक जानकारी नहीं है, अगर ऐसा होता है तो पहले उन्हें ट्रांजिट रिमांड लेनी पड़ेगी, उसके बाद लेकर जा सकते हैं।

अमित शाह से हलफनामा लिखवाना चाहिए कि... नीतीश कुमार को लेकर ऐसा क्यों बोले तेजस्वी यादव

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव से कुछ महीने पहले राज्य में राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो गई हैं। महागठबंधन के मुख्यमंत्री पद के चेहरे को लेकर चल रही अटकलों के बीच राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता तेजस्वी यादव ने कहा कि यह तय हो चुका है और गठबंधन की रणनीति के अनुसार इसका खुलासा किया जाएगा। एएनआई के साथ एक साक्षात्कार में, जब सीएम के चेहरे के बारे में पूछा गया, तो यादव ने कहा कि सब कुछ तय हो चुका है। हम अपनी रणनीति के अनुसार इसका खुलासा करेंगे।

तेजस्वी यादव ने कहा कि मुझे लगता है कि भाजपा कहेगी कि चुनाव के बाद नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री बनाया जाएगा। उन्हें अमित शाह से हलफनामा लिखवाना चाहिए कि पांच साल तक नीतीश कुमार ही मुख्यमंत्री रहेंगे। भाजपा जिस भी पार्टी के साथ गठबंधन करती है, उसे खत्म कर देती है। पूरे देश में किसी भी क्षेत्रीय पार्टी को देख लीजिए... देखिए भाजपा ने चिराग पासवान की पार्टी के साथ क्या किया। भाजपा पर वार करते हुए उन्होंने कहा कि 'भक्तों' को नहीं पता कि इरज एक संस्कृत शब्द है। इसका मतलब है 'पवनपुत्र', जो हनुमान का नाम है। भाजपा के लोगों को सनातन के बारे में कुछ नहीं पता। उन्हें संविधान या धर्म के बारे में कुछ नहीं पता।

अपने दूसरे बच्चे के नाम को लेकर उठे विवाद पर आरजेडी नेता तेजस्वी यादव जवाब दे रहे थे। जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर के 'तेजस्वी यादव से पूछे कि वह 10वीं की परीक्षा कब पास करेंगे' वाले तंज पर आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने कहा, 'इससे मुझे कोई दुख नहीं होता। एक डिग्री आपको हर गुण नहीं दे सकती। व्यावहारिक जीवन का अनुभव भी उपयोगी होता है। मैं एक खिलाड़ी था... लेकिन अगर डिग्री की बात करें तो हमारे देश के लोगों को पता ही नहीं है कि पीएम नरेंद्र मोदी के पास कौन सी डिग्री है।'

यादव कहते हैं, 'अगर चिराग पासवान मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं तो उन्हें खुलकर कहना चाहिए, उन्हें ये सब ड्रामा करने की क्या जरूरत है कि 'बिहार बुला रहा है।' क्या बिहार ने उन्हें इतने सालों तक भगाया? कुछ तो तर्क होना चाहिए। वो बिहार से जीते हैं। वो बिहारी हैं। अब वो कह रहे हैं 'बिहार बुला रहा है.'... मैं हमेशा कहता हूं कि मुझे सरकार भी नहीं बनानी है, मैं बिहार का विकास करना चाहता हूं, मुझे एक मौका दीजिए ऐसा करने का।'

एसबीआई लाइफ ने हैक-एआई-थॉन के समापन में भारत के युवा टैलेंट से भविष्य के लिए तैयार एआई समाधान मांगे

एजेंसी

भोपाल : भारत के सबसे भरोसेमंद निजी जीवन बीमा प्रदाताओं में से एक, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस ने अपनी राष्ट्रीय नवाचार पहल, हैक-एआई-थॉन 2025 के शानदार समापन के साथ एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। यह मंच बीमा क्षेत्र की वास्तविक चुनौतियों के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित समाधान विकसित करने के लिए बनाया गया था। हफ्तों की गहन चर्चा और सहयोग के बाद, 16 से अधिक शीर्ष टीमों ने ग्राहकों के अनुभव, कामकाज की दक्षता और डिजिटल सेवाओं को बेहतर बनाने वाले एआई-आधारित नए विचार प्रस्तुत किए। इस आयोजन का मकसद युवा प्रतिभाओं को मौका देना, मिलकर काम करने की भावना को बढ़ावा देना और डिजिटल बदलाव को तेज करना था। इसमें डेवलपर्स और एआई के शौकीन शामिल थे, जो चेन्नई, बेंगलुरु, हैदराबाद, इंदौर, भोपाल और दिल्ली के नामी संस्थानों से आए थे। उन्होंने

भविष्यवाणी विश्लेषण, प्रक्रिया को स्वचालित करने, धोखाधड़ी रोकने और ग्राहक जुड़ाव जैसे क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा दिखाई। जूरी राउंड और मूल्यांकन के बाद, भोपाल की सुश्री आशा विद्याधरन और रमीज खान की इनोवेशन ब्रिगेड टीम हैक-एआई-थॉन 2025 के विजेता के रूप में उभरी, जिन्होंने हैक-एआई-थॉन 2025 के ग्रैंड फिनाले में अपने अभिनव समाधान से पैनल को प्रभावित किया। इसी तरह, इंदौर के ब्लैक बर्ड को प्रथम रनर-अप चुना गया और त्रिची के प्लूटस.एआई और पुणे के सेमेंटिक्स को द्वितीय रनर-अप घोषित किया गया। प्रत्येक विजेता समाधान अपनी अभिनव सोच, तकनीकी व्यवहार्यता और जीवन बीमा क्षेत्र में वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का समाधान करने की क्षमता के लिए खड़ा हुआ।

हैक-एआई-थॉन 2025 के भव्य समापन पर बोलते हुए, रविंद्र शर्मा, चीफ ऑफ ब्रांड, कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन और सीएसआर, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस ने कहा, हैक-एआई-थॉन का उद्देश्य अगली पीढ़ी के टैलेंट को बीमा के भविष्य को आकार देने में शामिल करना था। यह देखकर खुशी होती है कि युवा कितनी साफ सोच और लक्ष्य के साथ जटिल चुनौतियों का समाधान पेश कर रहे हैं। एसबीआई लाइफ में, हम मानते हैं कि नवाचार का असली मकसद लोगों की जिंदगी को बेहतर बनाना है। यह पहल हमारी उस सोच को दर्शाती है, जो तकनीक के जरिए मानव-केंद्रित और प्रभावी समाधान लाने पर जोर देती है।

समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने के लिए रेडियो सशक्त माध्यम: फडणवीस

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने शनिवार को कहा कि रेडियो दशकों से अस्तित्व में है और वर्तमान समय में भी उतना ही प्रभावशाली है। उन्होंने इसे एक प्रभावशाली माध्यम बताया जो समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच सकता है। वह महाराष्ट्र रेडियो महोत्सव और आशा रेडियो पुरस्कार समारोह में बोल रहे थे, जहां प्रसिद्ध गायिका आशा भोसले भी मौजूद थीं।

फडणवीस ने छह रेडियो जॉकी से भी बातचीत की। फडणवीस ने रेडियो से अपने जुड़ाव, संगीत के प्रति अपने प्रेम और गीत लिखने के अपने शौक को याद किया। विश्व संगीत दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस कार्यक्रम में उन्होंने एक कविता भी सुनाई और एक गीत भी गुनगुनाया।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रेडियो के गहन प्रभाव को पहचाना और प्रत्येक नागरिक से सीधे जुड़ने के साधन के रूप में 'मन की बात' की शुरुआत की। कार्यक्रम में आशा भोसले ने कहा, ''अगर रेडियो नहीं होता, तो मैं आज इस मुकाम पर नहीं होती।''

रेडियो की प्रासंगिकता पर जोर देते हुए फडणवीस ने कहा कि यह दशकों से अस्तित्व में है, लेकिन आज भी यह उतना ही प्रभावशाली है। उन्होंने कहा, ''हमारी सुबह हमेशा रेडियो से शुरू होती थी। हम कभी भी विविध भारती के गाने नहीं भूलते - यहीं से रेडियो से मेरा असली जुड़ाव शुरू हुआ।''

उन्होंने कहा, ''मेरा लंबे समय से मानना रहा है कि हमें रेडियो उद्योग में काम करने वालों के योगदान को सार्थक रूप से स्वीकार करना चाहिए। इन पुरस्कारों की स्थापना उस दिशा में एक सार्थक कदम है। भले ही हम रेडियो पर बोलने वाले व्यक्ति को नहीं देख सकते, लेकिन उनके शब्द जीवंत छवि बनाते हैं। रेडियो में ध्वनि के माध्यम से चित्र बनाने की शक्ति है।''

कार्यक्रम में उपस्थित महाराष्ट्र के संस्कृति मंत्री आशीष शेलार ने कहा कि राज्य सरकार ने इस क्षेत्र में उत्कृष्टता को सम्मानित करने के लिए इन पुरस्कारों की शुरुआत की है।

उन्होंने बताया कि भारत का पहला रेडियो प्रसारण 1923 में 'रेडियो बॉम्बे' के रूप में शुरू हुआ था। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र देश का पहला राज्य है जो इस तरह के सम्मान के माध्यम से रेडियो उद्योग में योगदान को औपचारिक रूप से मान्यता और सम्मान दे रहा है। इस कार्यक्रम में 12 श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान किए गए।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**